स्थापित 1935

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• दिसम्बर २०२५ • वर्ष ७६ • अंक १२
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

९१वाँ स्थापना दिवस विशेषांक

मुख्य अतिथि

डॉ. शशि पांजा
प्रभारी मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार
उद्योग, वाणिज्य एवं उद्यम विभाग तथा
महिला एवं बाल विकास एवं सामाजिक कल्याण विभाग,

सम्मानित अतिथि

डॉ. सुनील श्रॉफ
यूरोलॉजिस्ट, रीनल ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ
संस्थापक, मोहन फाउंडेशन

सभापतित्व

श्री पवन कुमार गोयनका
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

स्वागताध्यक्ष

श्री शिव कुमार लोहिया
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

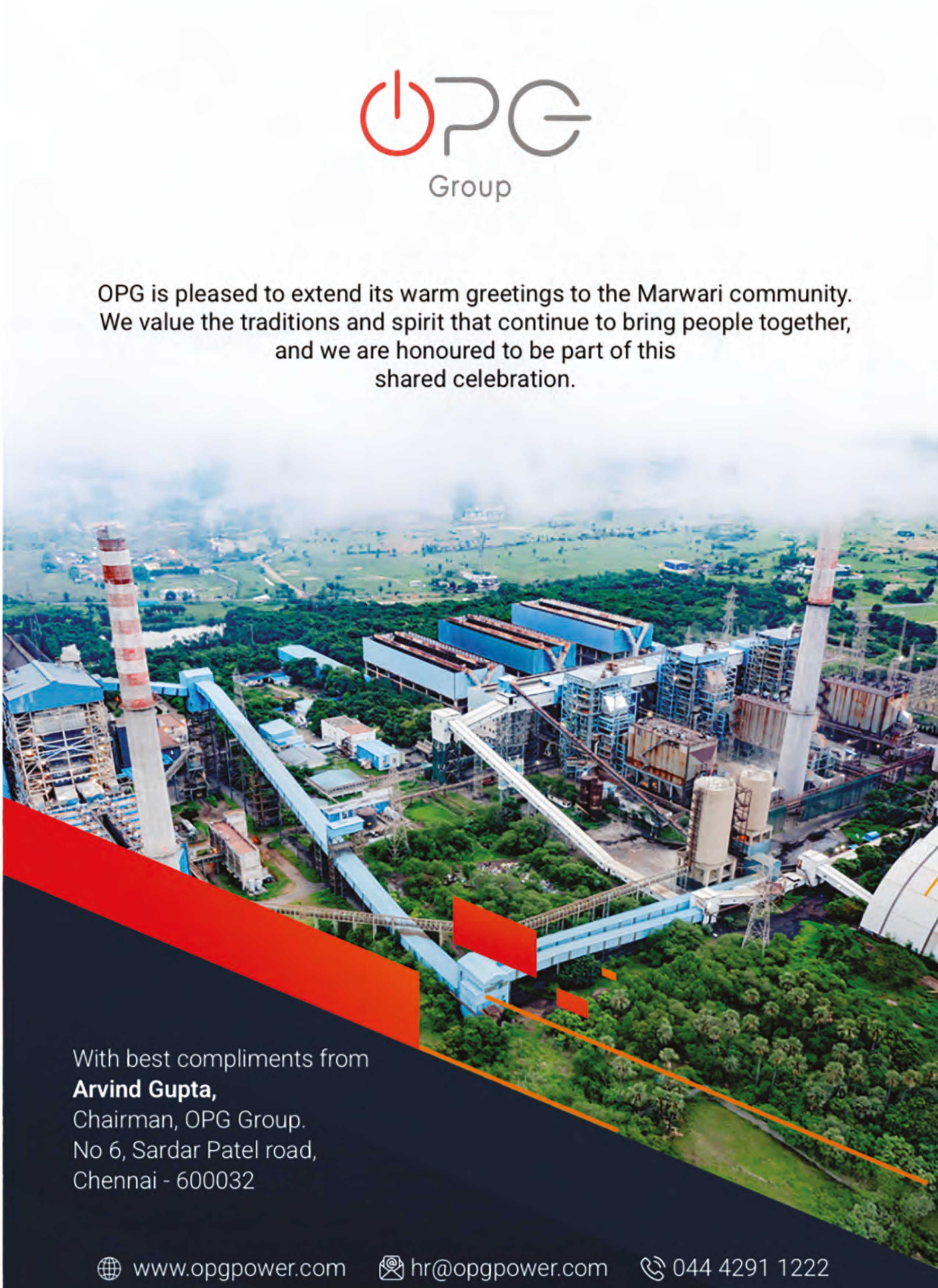
OPG
Group
OPG is pleased to extend its warm greetings to the Marwari community.
We value the traditions and spirit that continue to bring people together,
and we are honoured to be part of this
shared celebration.
With best compliments from
Arvind Gupta,
Chairman, OPG Group.
No 6, Sardar Patel road,
Chennai - 600032
www.opgpower.com
hr@opgpower.com
044 4291 1222

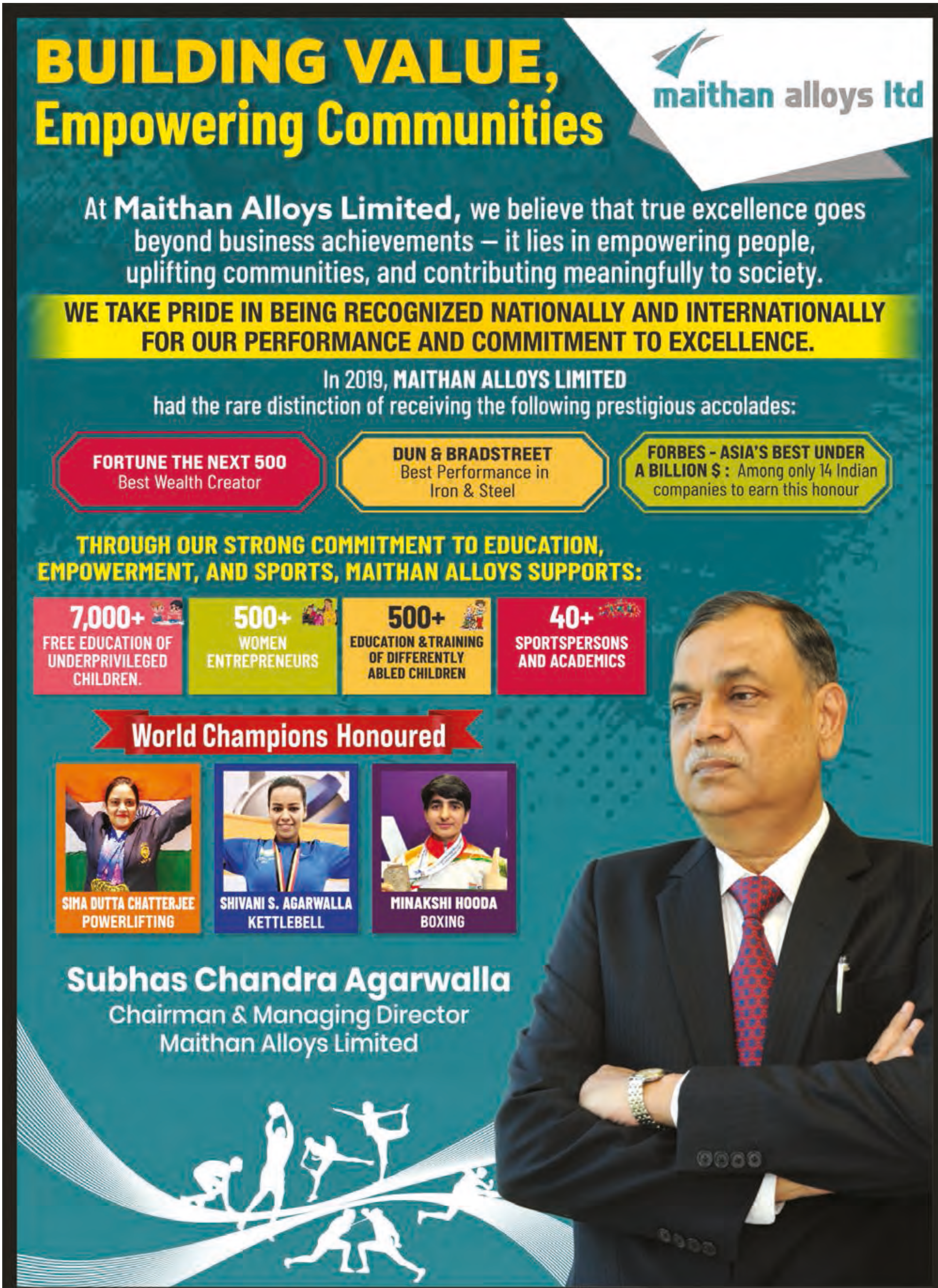
BUILDING VALUE,
Empowering Communities
maithan alloys ltd
At Maithan Alloys Limited, we believe that true excellence goes beyond business achievements – it lies in empowering people, uplifting communities, and contributing meaningfully to society.
WE TAKE PRIDE IN BEING RECOGNIZED NATIONALLY AND INTERNATIONALLY FOR OUR PERFORMANCE AND COMMITMENT TO EXCELLENCE.
In 2019, MAITHAN ALLOYS LIMITED had the rare distinction of receiving the following prestigious accolades:
FORTUNE THE NEXT 500 Best Wealth Creator
DUN & BRADSTREET Best Performance in Iron & Steel
FORBES - ASIA'S BEST UNDER A BILLION $: Among only 14 Indian companies to earn this honour
THROUGH OUR STRONG COMMITMENT TO EDUCATION, EMPOWERMENT, AND SPORTS, MAITHAN ALLOYS SUPPORTS:
7,000+ FREE EDUCATION OF UNDERPRIVILEGED CHILDREN.
500+ WOMEN ENTREPRENEURS
500+ EDUCATION & TRAINING OF DIFFERENTLY ABLED CHILDREN
40+ SPORTSPERSONS AND ACADEMICS
World Champions Honoured
SIMA DUTTA CHATTERJEE POWERLIFTING
SHIVANI S. AGARWALLA KETTLEBELL
MINAKSHI HOODA BOXING
Subhas Chandra Agarwalla
Chairman & Managing Director
Maithan Alloys Limited

सर्वे भवन्तु सुखिनः
देव भूमि हरिद्वार निर्मित
सर्वे सन्तु निरामयाः
HIA
HARIDWAR INTERNATIONAL AYURVEDA
आ गया .... दर्द का काल
श्री महाकाल ™
ग्रीस की कमी को दूर करने की विश्व विख्यात फक्की
देव भूमि हरिद्वार निर्मित आयुर्वेदिक औषधियां
घुटनों मे ग्रीस की कमी एवं जोड़ो के दर्द की
अदभुत व विश्व विख्यात औषधि
श्री महाकाल आयुर्वेदिक फक्की
का इस्तेमाल करें।
45 दिनों मे अदभुत परिवर्तन पायें।
आ गया... दर्द का काल
घुटनों में ग्रीस की कमी को दूर करने की अचूक औषधि
श्री महाकाल
आयुर्वेदिक फक्की
KNEE JOINT PAIN REMOVER
200g
KNEE JOINT PAIN REMOVER
BACK PAIN
KNEE PAIN
SHOULDER PAIN
JOINT PAIN
MAHAKAL
महाकाल
MAHAKAL
महाकाल
आ गया... दर्द का काल
श्री महाकाल
आयुर्वेदिक दर्दनाशक तेल
दर्द को जड़ से ठीक करने की एकमात्र विश्वसनीय औषधि
STRONG FORMULA
NET : 100ML
Inhaler
महाकाल मलहम
20% EXTRA 10 + 2 gm.
आ गया... दर्द का काल
श्री महाकाल ™
मलहम
दर्दनाशक मलहम
20% EXTRA 10 + 2 gm.
AQUA Rub
MAHAKAL
Syrup
आ गया... दर्द का काल
श्री महाकाल
PAIN KILLER CAPSULES
दर्द को जड़ से ठीक करने की एकमात्र विश्वसनीय औषधि
STRONG FORMULA
घर बैठे मांगवाने हेतू से संपर्क करे। CUSTOMER CARE NO. :- 8266997789
होलसेल और डिस्ट्रीब्यूटरशिप के लिए सम्पर्क करें। 97711-54841
WWW.HIAINDIA.COM
ONLINE PURCHASE HERE

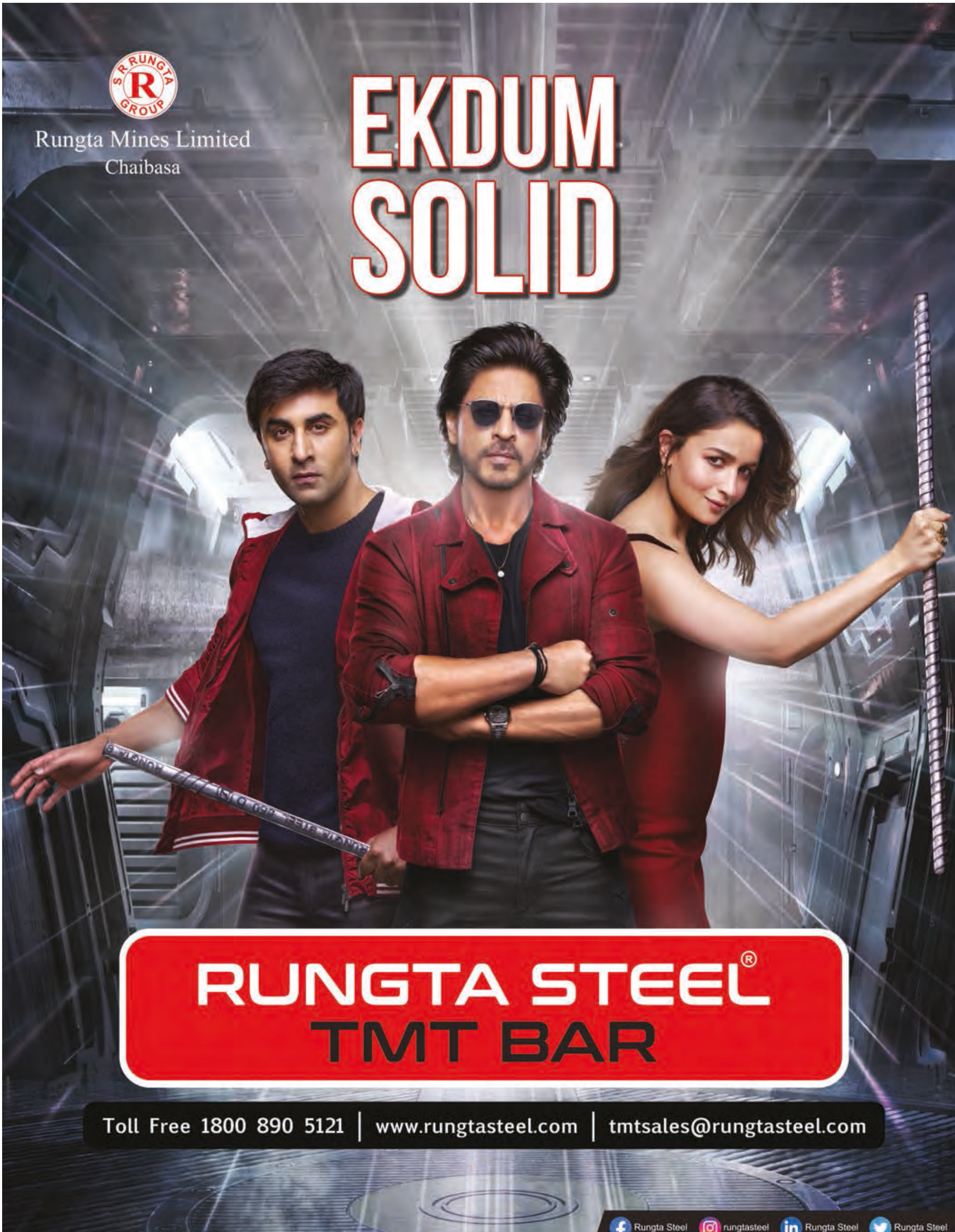

Rungta Office, Nagpur Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201

SINCE 1959

ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab

POWERING 47 COUNTRIES ACROSS THE WORLD

IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959

PRODUCTS & SERVICES OFFERED:

- INSULATOR HARDWARE FITTINGS UPTO 1200 kV HVAC & 800 kV HVDC
- AB CABLE & OPGW FITTINGS
- POLE / DISTRIBUTION LINE HARDWARE
- EARTHING, STAY & TOWER ACCESSORIES
- HTLS CONDUCTOR ACCESSORIES & SUB-ZERO HARDWARE FITTINGS
- SUBSTATION CLAMPS & CONNECTORS
- CONDUCTOR, INSULATOR & HARDWARE TESTING FACILITY
- AB CABLES, COVERED CONDUCTORS AND ADSS CABLE ACCESSORIES

Transmission and distribution line hardwares | HTLS Conductor Testing

www.iacelectricals.com   info@iacelectricals.com

701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

4बी, डकबैक हाउस, 41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700017
टेलीफोन: (033) 4004 4089, ईमेल: aimf1935@gmail.com
वेबसाइट: www.marwarisammelan.in

91वाँ स्थापना दिवस समारोह

(सम्मान समारोह व नाट्य कार्यक्रम)

दिनांक : **गुरुवार, 25 दिसंबर 2025 ● सुबह 10 बजे**

स्थान : **कला मंदिर सभागार** 48, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700 017

मुख्य अतिथि : **डॉ. शशि पांजा**
प्रभारी मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार
उद्योग, वाणिज्य एवं उद्यम विभाग तथा
महिला एवं बाल विकास एवं सामाजिक कल्याण विभाग

सम्मानित अतिथि : **डॉ. सुनील श्रॉफ**
यूरोलॉजिस्ट, रीनल ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ
संस्थापक, मोहन फाउंडेशन

सभापतित्व : **श्री पवन कुमार गोयनका**
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

निवेदक

शिव कुमार लोहिया
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
स्वागताध्यक्ष

गिरधारी लाल गोयनका, सुभाष अग्रवाल
बिनोद तोदी, राज कुमार मिश्रा
पुरुषोत्तम सिंघानिया, गोकुलचंद बजाज
राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण

केदारनाथ गुप्ता
राष्ट्रीय महामंत्री

पवन जालान, पवन बंसल
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

बसंत कुमार सुराना
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

अनिल कुमार मलावत
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

सरल राजस्थानी और हिंदी भाषा में मंचित यह नाटक रहस्य, रोमांच, हास्य और राजस्थानी नृत्य से भरपूर है। राजपर की महारानी की विश्वस्त अंगरक्षिका, सखी, नर्तकी, कथाकारा एवं कलाकारा की मार्मिक और प्रेरक कथा पर आधारित है –**"जड़ाव बाई"**

अमैच्योर एक्टर्स एसोसिएशन (AAA), कोलकाता – आधारित उत्साही एवं समर्पित रंगकर्मी हैं। पिछले चार वर्षों में "गरीबदास को पुलिस प्रोटेक्शन," "यस बॉस," "भूतनी," "बूटियापा," "अच्छे दिन," "अ फ़्यू एंग्री वुमेन" और "जंप वेंकट जंप" जैसे २५–३० से अधिक विविध नाटकों का सफल मंचन किया है। अपनी प्रतिभा और समर्पण से रंगमंच के प्रति अपनी निष्ठा को सिद्ध किया है।

लेखन एवं निर्देशन – **श्री राजेंद्र भूतोड़िया**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अब तक के सिरमौर

स्व. ईश्वर दास जालान
सम्मेलन के प्राण-पुरुष

स्व. रामदेव चोखानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1935-1938)

स्व. पदमपत सिंघानिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1938-1940)

स्व. बद्री प्रसाद गोयनका
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1940-1941)

स्व. आनन्दीलाल पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1941-1943)

स्व. रामगोपाल मोहता
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1943-1947)

स्व. बृजलाल बियानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1947-1954)

स्व. गोविन्द दास मालपानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1954-1962)

स्व. गजाधर सोमानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1962-1966)

स्व. रामेश्वरलाल टांटिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1966-1974)

स्व. भंवरलाल सिंघी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1974-1979)

स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1979-1982)

स्व. नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1982-1986, 1993-2001)

स्व. हरिशंकर सिंघानिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1986-1989)

स्व. रामकृष्ण सरावगी
राष्ट्रीय अध्यक्ष (1989-1989)

स्व. हनुमान प्रसाद सरावगी
कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष (1989-1993)

स्व. मोहनलाल तुलस्यान
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2001-2006)

श्री सीताराम शर्मा
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2006-2008)

श्री नन्दलाल रूँगटा
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2008-2011)

डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2011-2013)

स्व. रामअवतार पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2013-2015)

श्री प्रह्लाद राय अगरवाला
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2015-2018)

श्री संतोष सराफ
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2018-2020)

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2020-2023)

श्री शिव कुमार लोहिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष (2023-2025)

अध्यक्ष, लोक सभा

SPEAKER, LOK SABHA
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपना ९१वां स्थापना दिवस समारोह २५ दिसम्बर, २०२५ को कोलकाता, पश्चिम बंगाल में आयोजित कर रहा है।

मारवाड़ी समाज ने देश की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। व्यापार, उद्योग, शिक्षा, परोपकार और लोक कल्याण से जुड़े क्षेत्रों में इस समाज ने अपनी कर्मठता, दूरदृष्टि, सद्भावना और राष्ट्र धर्म के पालन की मिसाल स्थापित की है, जो सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने देशभर के मारवाड़ी समाज को संगठित करने और उसे समाज सेवा तथा जनहितकारी कार्यों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य-सुविधाओं के विस्तार, आपदा प्रबंधन, युवा सशक्तीकरण तथा व्यापक सामाजिक प्रकल्पों के माध्यम से सम्मेलन ने समाज को दिशा, संरक्षण और सामूहिक शक्ति प्रदान की है। मुझे विश्वास है कि यह आयोजन समाजहित के संकल्पों को और सुदृढ़ करेगा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर मैं इस संगठन से जुड़े सभी पदाधिकारियों, सदस्यों और कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह संस्था निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे और समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहे।

स्थापना दिवस समारोह के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएँ।

(ओम बिरला)

पीयूष गोयल
PIYUSH GOYAL

सत्यमेव जयते

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF COMMERCE & INDUSTRY
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का 91वाँ स्थापना दिवस समारोह आगामी 25 दिसम्बर, 2025 को आयोजित होने जा रहा है।

मारवाड़ी समाज की गौरवमयी परंपरा सदियों से सेवा, सहयोग और संस्कारों की उर्वर भूमि रही है, और मारवाड़ी सम्मेलन इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए समाज उत्थान, शिक्षा प्रसार, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवाओं और मानवीय संवेदनाओं को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आज के बदलते परिवेश में यह आवश्यक है कि हम अपने मूल्यों को संरक्षित रखते हुए हर वर्ग तक विकास के अवसर पहुँचाएँ। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का समाज सेवा में योगदान अनमोल है, जो समाज को एकजुट करने और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में निरंतर कार्यरत है। महासंघ ने हमेशा समाज के विभिन्न पहलुओं में सक्रिय रूप से भाग लिया है और समाज के हर सदस्य के लिए बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए निरंतर काम किया है।

इस विशेषांक "समाज विकास" का प्रकाशन समाज के प्रत्येक सदस्य को प्रेरित करेगा। हम सभी का दायित्व है कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जहाँ समानता, सद्भाव और मानवता के मूल्य सर्वोपरि हों।

मैं मारवाड़ी सम्मेलन के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ, और इस स्थापना दिवस समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

पीयूष गोयल

गुलाब चंद कटारिया
राज्यपाल पंजाब

लोकभवन, पंजाब
चंडीगढ़-१६००१९

दिनांकः 06.12.2025

<u>संदेश</u>

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९१वाँ स्थापना दिवस समारोह दिनांक २५ दिसंबर २०२५ को कोलकाता में आयोजित होने जा रहा है। किसी भी संस्था द्वारा इतने लंबे समय तक निरंतर समाज सेवा करना अपने आप में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इस विशेष अवसर पर मैं संस्था के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मारवाड़ी समाज की देश के व्यापार और उद्योग क्षेत्र में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ ही, समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में उनका योगदान भी अत्यंत प्रशंसनीय रहा है। देश के कोने-कोने में फैला मारवाड़ी समाज राष्ट्र की प्रगति और उत्थान के लिए निरंतर समर्पित भाव से कार्य करता आ रहा है।

मैं सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'समाज विकास' के विशेषांक के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गुलाब चंद कटारिया)

लक्ष्मण प्रसाद आचार्य
Lakshman Prasad Acharya

सत्यमेव जयते

राज्यपाल असम
GOVERNOR OF ASSAM

लोक भवन
गुवाहाटी-781001 (असम)
LOK BHAVAN
GUWAHATI-781001 (ASSAM)
फोन: (0361) 2540500 (ऑफिस);
फैक्स: (0361) 2731832;
ई-मेल: rajbhavan-assam@gov.in

07 दिसंबर, 2025

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 91वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 25 दिसंबर, 2025 को कला मंदिर सभागार, कोलकाता में किया जा रहा है और इस शुभ अवसर पर सम्मेलन के मुखपत्र "समाज विकास" का एक विशेषांक प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित है।

वर्ष 1935 में समाज और राष्ट्र की उन्नति के पवित्र संकल्प के साथ स्थापित यह सम्मेलन आज भारतीय जीवन मूल्यों, त्याग, सेवा, सहकारिता और समरसता की समृद्ध परंपरा का उज्ज्वल प्रतीक बन चुका है। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, आडंबर-विरोध, विधवा विवाह के समर्थन तथा कन्या शिक्षा के प्रोत्साहन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों को आगे बढ़ाकर सम्मेलन ने समाज में परिवर्तन का जो दीप प्रज्वलित किया था, उसकी ज्योति आज भी हमारे पथ को आलोकित कर रही है।

देशभर में सक्रिय सम्मेलन की प्रांतीय इकाइयाँ जिस समर्पण और संवेदनशीलता के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक संरक्षण और सामुदायिक एकता के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं, वह एक स्वस्थ, सशक्त और जागरूक समाज के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

मुझे विश्वास है कि सम्मेलन के मुखपत्र "समाज विकास" का यह विशेषांक मानवीय मूल्यों और राष्ट्रहित को केंद्र में रखकर विविध प्रकार के सारगर्भित लेख प्रस्तुत करेगा, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी, प्रेरक और मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(लक्ष्मण प्रसाद आचार्य)

डॉ. हरि बाबू कंभमपाटि
Dr. Hari Babu Kambhampati

राज भवन
भुवनेश्वर - 751 008
RAJ BHAVAN
BHUBANESWAR - 751 008

राज्यपाल, ओडिसा
GOVERNOR OF ODISHA

15 दिसंबर, 2025

संदेश

यह बड़ी खुशी की बात है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता अपने 91वाँ स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर **'समाज विकास विशेषांक'** पत्रिका प्रकाशित करने जा रही है।

जैसे कि सबको पता है कि समाज सेवा से बढ़कर कोई कार्य नहीं है। सामाजिक कार्य का महत्व समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने, मानवाधिकारों की रक्षा करने, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में है, जो व्यक्तियों, समूहों और समुदायों को उनकी समस्याओं का समाधान करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करता है। इसके द्वारा गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर पैदा होता है एवं समाजिक समानता आती है। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए **'समाज विकास विशेषांक'** पत्रिका का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है।

मैं **'समाज विकास विशेषांक'** मासिक पत्रिका के लेखकों, संपादकों को शुभकामनाएँ देते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(हरि बाबू कंभमपाटि)

संतोष कुमार गंगवार
राज्यपाल, झारखण्ड

राज भवन, रांची-८३४००१
झारखंड
दूरभाष : ०६५१-२२८३४६५

संदेश

हर्ष का विषय हैं कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का २५ दिसंबर २०२५ को कला मंदिर सभागार कोलकाता में ८९वाँ स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया जा रहा है तथा इस अवसर पर संस्था द्वारा समाज विकास विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रसन्नता है कि सन् १९३५ में स्थापित यह संगठन पिछले नौ दशकों से समाज सुधार, सांस्कृतिक उन्नयन, शिक्षा-प्रसार तथा सेवा-भावना के क्षेत्र में निरंतर उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। दहेज-प्रथा, पर्दा-प्रथा के उन्मूलन के साथ-साथ विधवा विवाह एवं कन्या शिक्षा के प्रसार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संस्था का योगदान वास्तव में सराहनीय है। यह भी हर्ष का विषय है कि सम्मेलन केवल समुदाय का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक समरसत्ता और एकता को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुझे विश्वास है कि 'समाज विकास' विशेषांक निस्संदेह संगठन की उपलब्धियों, विचारधारा और समाज-निर्माण की प्रतिबद्धता का सशक्त दस्तावेज सिद्ध होगा। यह विशेषांक नए विचारों, सकारात्मक दृष्टि और रचनात्मक ऊर्जा को समाज में व्यापक रूप से प्रसारित करने का माध्यम बनेगा, ऐसी अपेक्षा है।

८१वें स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों और सहयोगियों के उज्ज्वल भविष्य एवं संस्था की निरंतर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(संतोष कुमार गंगवार)

Shrikumar Bandopadhyay
Officer on Special Duty (OSD)
Head of Task Force
to the Governor of West Bengal

No. 1583-G

Lok Bhavan, Kolkata - 700062
Tel: (033) 22001641 [ext. 209]
head of taskforcerajbhavan@gmail.com

सत्यमेव जयते

Date: **3 / 12 / 25**

संदेश

माननीय राज्यपाल, पश्चिम बंगाल की ओर से अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन को समाज विकास विशेषांक प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की जाती हैं।

मारवाड़ी समाज ने सदैव राष्ट्र और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उद्योग, व्यापार, सेवा, परोपकार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे अनेक क्षेत्रों में समाज ने अपनी प्रतिबद्धता और कर्मशीलता से देश की प्रगति को सशक्त आधार प्रदान किया है। समाज की सेवा में निहित यह भावना भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा का प्रतीक है जिसमें धर्म का अर्थ केवल अनुष्ठान नहीं, बल्कि कर्तव्य, करुणा और मानवकल्याण है।

समाज विकास विशेषांक निस्संदेह एक प्रेरक दस्तावेज बनकर उभरेगा – जो वर्तमान पीढ़ी को इतिहास, उपलब्धियों, संघर्षों और मूल्यों से जोड़ते हुए, भविष्य के लिए नये संकल्प और नयी ऊर्जा का स्रोत बनेगा। यह विशेषांक समाज के रचनात्मक योगदान को रेखांकित करते हुए सामाजिक समरसता, उद्यमशीलता और राष्ट्रहित की भावना को और सुदृढ़ करे – यही शुभकामना है।

राज्यपाल महोदय की ओर से संगठन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ। समाज निरंतर उन्नति करे, जनसेवा की परंपरा और अधिक प्रखर हो तथा राष्ट्रनिर्माण में योगदान यूँ ही बढ़ता रहे – यही मंगल कामना।

सादर,

Shrikumar Bandopadhyay

With Best Compliments From :

LUCCAP SERVICES PRIVATE LIMITED

for Individual and Businesses

We specialise in Quick Books, Zoho Books, Xero Books, MYOB, and RealBooks.

Our Services:

- Book Keeping
- Accounts Receivable Management
- Document Keeping
- Accounts Payable Management
- Account Reconciliation
- Invoicing
- Financial Statement Preparation
- Payroll Preparation
- Financial Planning by our Sister Concern
- Admin Support
- Financial Calendar for Applicable Due Dates
- US Tax Preparer and Paralegal Work

What Makes us Different

- Regulatory Compliance
- Scalable Services
- Trusted and Dependable Service Since 2022
- Comprehensive Cloud-Based Accounting Solutions
- Client-Focused Approach
- Accurate and Timely Reporting
- Expert Team
- Automation & Technology

1/1E/6, Suryadeep, Rani Harsha Mukhi Road, Kolkata-700002

85850 76278

vivek@luccap.in

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९१वाँ स्थापना दिवस समारोह का आयोजन आगामी २५ दिसम्बर, २०२५ को कोलकाता स्थित "कला मंदिर सभागार" में किया जा रहा है।

विगत ९ दशकों से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने देश के कोने-कोने में बसे मारवाड़ियों को एक सूत्र में पिरोया है। हमारे मनीषियों द्वारा निर्देशित सम्मेलन के उद्देश्यों - समाज-सुधार एवं समरसता - को अपना लक्ष्य बनाकर उसकी पूर्ति हेतु सम्मेलन निरंतर प्रयासरत है। परंतु जैसा कि हम जानते हैं, समाज-सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है। समाज में नयी-नयी कुरीतियाँ पनपती हैं जिनका उन्मूलन आवश्यक होता है। इन विसंगतियों के प्रति सचेत रहकर उनका निवारण ही सम्मेलन का लक्ष्य रहा है।

आगामी कुछ वर्षों में सम्मेलन अपना शतवार्षिकी मनायेगा। ऐसे में, मुझे पूर्ण विश्वास है कि सम्मेलन अपने सदकार्यों की गति बनाये रखते हुये समाज-सुधार एवं सेवाकार्यों के माध्यम से एक नया आयाम स्थापित करेगा। मैं सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों को बधाई देता हूँ और अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

साथ ही, इस अवसर पर प्रकाशित सम्मेलन के मुखपत्र **'समाज विकास'** के लेखकों, संपादकों तथा पाठकों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुये इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ!

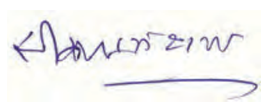

सीताराम शर्मा

नन्दलाल रूँगटा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष (२००८-११)
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संदेश

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९१वाँ स्थापना दिवस के सुअवसर पर सभी सदस्यों को हार्दिक अभिनन्दन।

सम्मेलन की ९० वर्षों की यात्रा केवल ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि, बहुत महत्वपूर्ण रही। इस कालखण्ड में समाज सुधार एवं सामाजिक समरसता के लिए प्रयास हुए और काफी हद तक इस पर सफलता भी मिली। हालांकि समय समय पर समाज में कुरूतियों का स्वरूप बदला और आज सामाजिक समारोह में मद्यपान एवं दिखावा एक बड़ी समस्या है। सिकुड़ते परिवार एवं बुजुर्गों की उपेक्षा काफी चिन्तनीय हैं। हम सब को मिलकर इस दिशा में सतत् प्रयास करना है। साथ ही अपनी पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों को अपनाना है और अपनी गौरवशाली संस्कृति की रक्षा करनी हैं। आपसी बोलचाल में राजस्थानी भाषा का उपयोग करनें की भी आवश्यकता है।

हर्ष की बात है कि सांगठनिक दृष्टि सें सम्मेलन काफी किर्याशील हैं। निरंतर शाखाओं एवं सदस्यों कि वृद्धि हो रही है और इसके लिए राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण धन्यवाद के पात्र है। वर्तमान सत्र के पदाधिकारियों को सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

नन्दलाल रूँगटा

डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

भाइयों एवं बहनों
राम राम! राधे राधे!

आने वाले नव वर्ष की शुभकामनाएँ। अखिल भारतवर्षीय की स्थापना १९३५ में स्थापना हुई। यह संगठन व्यक्तिगत, सामाजिक, एवं राष्ट्रीय समस्याओं में अपना पूरा योगदान कर रहा है। समाज ने देश की स्वतंत्रता के लिए तन मन धन से हिस्सा लिया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा एवं अन्य कई बुरी प्रथा को समाप्त करने में सफलता मिली है। समाज नारी शक्ति को पहचान कर उन्हें ऊची शिक्षा दे रहा है। सम्मेलन का ध्येय वाक्य 'म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति' है।

अखिल भारतवर्षीय मरवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुए ९० वर्ष पूरे हो गए। हमारा संदेश यही है की शादी-विवाह आदि समारोह में फ़िज़ूल खर्च रोकना, शराब आदि को रोकना। नारी शक्ति को शिक्षा देना, बहू बेटियों में समान व्यवहार करना। मारवाड़ी भाषा का जहाँ तक हो सके व्यवहार में लाना। संस्कार और सभ्यता का अनुसरण करना। काम काज करते हुए भगवान का स्मरण बनाये रखना।

मैं सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले समारोह के सफलता की कामना करता हूँ एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले मासिक पत्रिका 'समाज विकास' के विशेषांक के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

हरिप्रसाद कानोड़िया

डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया

With Best Compliments From :

ROAD CARGO MOVERS PVT. LTD.

Head- office:

1 Gibson Lane, 2nd Floor

Suite- 210 & 211 , Kolkata- 700069

Phone : 2210-3480

E-mail : info@roadcargo.in

Branches & Associates :

Guwahati, Siliguri, Durgapur, Haldia,
Kharagpur, Balasore, Bhubneswar, Cuttuck,
Ichchapuram, Vishakapatnam, Vijaywada,
Chennai, Bangalore, Raipur, Vadodara

संतोष सराफ
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संदेश

बंधुओ! सबसे पहले अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस पर मैं हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। आज का दिन संस्था की लंबी यात्रा, उपलब्धियों और मूल मूल्यों को याद करने, संस्थापकों के प्रयासों को सम्मानित करने का तो है ही, सदस्यों के बीच एकता और गर्व की भावना को बढ़ावा देने और भविष्य के लिए नए लक्ष्यों को निर्धिरित करना भी है। आज का दिन संस्था की विरासत का उत्सव है और वर्तमान सदस्यों को उसकी संस्कृति और लक्ष्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित करत है।

मारवाड़ी समाज में फिजूलखर्ची, कन्या भ्रूण हत्या और पुरानी सोच जैसी सामाजिक बुराइयां आज भी काफी हद तक मौजूद हैं, जिनका समाधान शिक्षा, संगठन को मजबूत करने, जागरूकता अभियान चलाने और पारंपरिक मूल्यों को आधुनक सोच के साथ अपनाने से किया जा सकता है। शादी-विवाह में सादगी लाना, लड़की-लड़के में समानता रखना और समाज के विकास के लिए संगठनात्मक एकता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

मारवाड़ी समाज की प्रगति के लिए शिक्षा, कौशल विकास और व्यावसायिक विविधीकरण पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। इसमें आधुनिक शिक्षा और प्रौद्योगिकी को अपनाना, पारंपरिक व्यवसायों से परे नए क्षेत्रों में निवेश करना और सामुदायिक सहयोग और नेटवर्किंग को मजबूत करना शामिल है। उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन देना, जरूरतमंद छात्रों को वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना भी पुण्य का काम है, इसे जारी रखा जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से ही पुरानी रूढ़ियों को खत्म किया जा सकता है। केवल पारंपरिक व्यापारिक क्षेत्रों तक सीमित न रहकर, नए उद्योगों जैसे कि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देना, युवा उद्यमियों को नई परियोजनाओं के लिए प्रत्साहित करना और उन्हें आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करना भी हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। की आगामी २५ दिसंबर २०२५ को सम्मेलन अपना ९१वां स्थापना दिवस मना रहा है। मैं आशा करता हूँ कि सम्मेलन की ये यात्रा निरंतर प्रगतिशील रहें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रांतीय पदाधिकारियों एवं सम्मेलन की रीढ़ कहे जाने वाले सदस्यों को सम्मेलन की ९१वें स्थापना दिवस की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

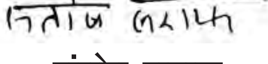

संतोष सराफ

With Best Compliments From :

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संदेश

सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस पर समाज के सभी बन्धुओं का अभिनन्दन

यह हमारे लिए गौरव की बात है कि मारवाड़ी समाज का नौ दशक पुराना प्रतिनिधि संगठन अभी भी अपने पूर्ण यौवन के साथ सक्रिय रूप से समाज सुधार एवं समाज विकास के संकल्प के साथ खड़ा है, तथा समाज बन्धुओं की समास्याओं के निराकरण का केन्द्र है। खुशी की बात यह है कि लगभग पूरे देश में कार्यरत शाखाओं के माध्यम से सम्मेलन अपना दायित्व निर्वहन कर रहा है। समाज पर जब भी संकट आया है सम्मेलन ढाल के रूप में खड़ा नजर आया है। सम्मेलन की विरासत गरिमायुक्त रही है, वर्तमान प्रयत्नशील है और भविष्य में अनंत सम्भावनाएँ और अपेक्षाएं हैं।

आगामी २५ दिसम्बर २०२५ को हम सम्मेलन का ९१ वा स्थापना दिवस हर वर्ष की भांति पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ मनाने के लिए संकल्पित हैं। इस अवसर पर पूरे समाज को बधाई। सम्मेलन समाज के हर बन्धु तक पहुंचे मेरी कामना है।

प्रसन्नता की बात है कि सीताराम रूंगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य का शुभारंभ हो चुका है। सम्मेलन का अपना भवन बनने से सम्मेलन का कार्यक्षेत्र और बढ़ जायेगा। सम्मेलन की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी मंगलकामना।

इस अवसर पर समाज विकास का परिशिष्ट भी प्रकाशित होगा जो निश्चय ही उपयोगी एवं संग्रहणीय होगा ऐसा विश्वास है।

कार्यक्रम की शानदार सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं।

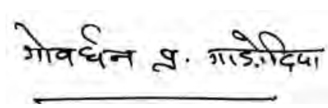

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

शुभ कामनाओं सहित:-

बिंदल परिवार

इंदौर

शिव कुमार लोहिया
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

संदेश

यह एक हर्ष एवं गर्व का विषय है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने गौरवमय यात्रा के ९० वर्ष पूर्ण करके ९१ वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सम्मेलन का एक गौरवमय इतिहास रहा है। इस संबंध मे सम्मेलन के प्राण पुरुष स्व ईश्वर दास जालान एवं संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय रामदेव चोखानी का योगदान अविस्मरणीय है। पूरे देश के सभी समाज बंधुओ को एकजुट कर राष्ट्र उत्थान एवं राष्ट्र सेवा में लगाने के उद्देश्य से स्थापित की गई। यह संस्था १९४७ से समाज सुधार के कार्यक्रमों को अपनाया। फलस्वरूप सम्मेलन की एक अपनी विशिष्ट पहचान बनी। सम्मेलन के नेतृत्व में पूरे समाज में समाज सुधार की एक बयार बही। नारी शिक्षा एवं नारी सम्मान को सुदृढ करने के लिए किए गए प्रयासों का फल समाज को निरंतर मिल रहा है।

आठवें दशक में तत्कालीन दूरदर्शी नेतृत्व ने महिला एवं युवा वर्ग को अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन और अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना कर उन्हे विशिष्ट पहचान प्रदान की। आज हमारा संगठन पहले से अधिक सशक्त हुआ है। समय की मांग है कि समाज की सभी संस्थाएं एवं सभी वर्ग मिलकर समाज में पनप रहे नये विसंगतियों एवं कुरीतियों का स्व-आचरण और संस्कार एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार के माध्यम से उन्मूलन कर समाज विकास की एक नई ज्योति जागृत करें। इस संबंध में समाज सम्मेलन की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है।

९१वें स्थापना दिवस के अवसर पर मैं समाज के सभी वर्गों को, विशेष कर सम्मेलन के सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं।

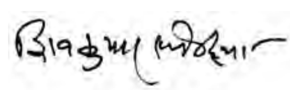

शिव कुमार लोहिया

With Best Compliments From :

'मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान' हेतु डॉ. सुनील कुमार श्रॉफ के नाम का चयन

दिनांकः १० दिसंबर २०२५ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की पुरस्कार चयन उपसमिति की सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय सभागार में हुई शीर्ष नेतृत्व बैठक में मोहन फाउंडेशन के बैनर तले अंग दान करने हेतु प्रेरित तथा प्रत्यारोपण करने वाले डॉ. सुनील कुमार श्रॉफ (चेन्नई) का नाम मारवाड़ी सम्मेलन व्यक्तित्व पुरस्कार (सौजन्यः रामनिवास आशारानी लखोटिया ट्रस्ट) तय किया गया। सम्मान के तहत शॉल, मेमेंटो, प्रशस्ति पत्र के अलावा एक लाख की राशि का चेक प्रदान किया जाता है।

पुरस्कार चयन उपसमिति के चेयरमैन एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला की अध्यक्षता में सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित बैठक का शुभारंभ आए हुए नामों को उपसमिति के सदस्यों के समक्ष रखकर उपसमिति के संयोजक व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने किया।

बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका (जूम), पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण श्री सीताराम शर्मा, श्री नन्द लाल रुँगटा, श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय महामंत्री श्री केदारनाथ गुप्ता, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका भी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोयनका ने बताया कि डॉ. श्रॉफ भारत के अग्रणी यूरोलॉजिस्ट, रीनल ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ, अंगदान जागरूकता नेता और डिजिटल हेल्थ नवाचार के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। चार दशकों से अधिक के समृद्ध अनुभव के साथ, उन्होंने ३०,००० से अधिक यूरोलॉजिकल सर्जरी और अनेक जटिल किडनी प्रत्यारोपण अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न किए हैं। उनकी चिकित्सकीय दक्षता के साथ-साथ सामाजिक प्रतिबद्धता ने उन्हें अंगदान आंदोलन का राष्ट्रीय चेहरा बना दिया है। डॉ. श्रॉफ अंगदान एवं प्रत्यारोपण, यूरोलॉजिकल सर्जरी, डिजिटल हेल्थ, टेलीमेडिसिन, मेडिकल एजुकेशन तथा एनजीओ नेतृत्व – इन सभी क्षेत्रों में उनका प्रभावकारी योगदान उन्हें भारतीय चिकित्सा जगत के सबसे प्रेरणादायी और प्रभावशाली व्यक्तित्वों में स्थापित करता है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री गुप्ता ने बताया कि उक्त सम्मान २५ दिसंबर को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस समारोह पर कलामंदिर में आयोजित समारोह में प्रदान किया जाएगा।

संक्षिप्त परिचय

डॉ. सुनील श्रॉफ भारत के अग्रणी यूरोलॉजिस्ट, रीनल ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ, अंगदान जागरूकता के पथप्रदर्शक और डिजिटल हेल्थ नवाचार के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। चार दशकों से अधिक अनुभव के साथ, उन्होंने ३०,००० से अधिक यूरोलॉजिकल सर्जरी और कई सफल किडनी ट्रांसप्लांट संपन्न किए हैं। उत्कृष्ट चिकित्सकीय दक्षता और सामाजिक सुधारों ने उन्हें भारत में अंगदान आंदोलन का राष्ट्रीय चेहरा बना दिया है।

उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज से M.B.B.S और M.S, ग्लासगो से F.R.C.S और यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन (UCL) से यूरोलॉजी की डिग्री प्राप्त की। इंग्लैंड के अनेको प्रतिष्ठित हॉस्पिटलो में बारह वर्षों तक काम करने के बाद वे अपनी सेवायें देने के लिये भारत आ गए। डॉ. श्रॉफ ने चिकित्सा, अनुसंधान और स्वास्थ्य-नीति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। वर्तमान में वे मद्रास मेडिकल मिशन और MGM हेल्थकेयर, चेन्नई में वरिष्ठ सलाहकार हैं, साथ ही एम्स ऋषिकेश में वेंटिलेशन प्रोफेसर के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।

मोहन फाउंडेशन के संस्थापक एवं ट्रस्टी के रूप में, डॉ. सुनील श्रॉफ ने भारत में मृतक अंगदान कार्यक्रम को संगठित करने, विस्तार देने और उन्हें एक जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल हेल्थ को बढ़ावा देने में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है – विशेष रूप से मेडइंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और मुख्य संपादक के रूप में, उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के प्रसार और तकनीकी नवप्रवर्तन को नई दिशा दी।

वे इंडियन सोसाइटी ऑफ ऑर्गन ट्रांसप्लाटेशन (ISOT) के पूर्व अध्यक्ष, टेलीमेडिसिन सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष, कॉमनवेल्थ "ट्रिब्यूट टू लाइफ" और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर ऑर्गनाइजेशन डोनेशन एंड प्रोक्योरमेंट के एशिया कन्वेनर और काउंसलर के रूप में भी सक्रिय हैं। इन अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा को खोला है।

डॉ. श्रॉफ एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, वक्ता, सर्जन और लेखक भी हैं–उन्होंने ५ पुस्तकें, १६ पुस्तक अध्याय और ८५० से अधिक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय शोध-प्रकाशन लिखे हैं। देश-विदेश में उन्होंने अनेक विशिष्ट व्याख्यान (Orations) दिए हैं, जिनमें CAST Singapore (Best Abstract Award, 2015), Pro. R.C.S. Yadav Oration (2018), Prof. S.M.Nawab Memorial Oration at, (BASICON 2012) आदि प्रमुख हैं।

उनके कार्यों को कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से गौरवान्वित किया गया है, पीएमसीएच में कॉलेज के शताब्दी वर्ष के अवसर पर श्री सम्मान (2025), पाथफाइंडर अवार्ड, सुश्रुत दीक्षा (2024), ग्रांट थॉर्नटन सबेरा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2021), केबीसी कर्मवीर अवार्ड (2020), 2916-2019 के बीच प्राप्त कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार शामिल हैं।

अंगदान एवं ट्रांसप्लांट, यूरोलॉजिकल सर्जरी, डिजिटल हेल्थ, टेलीमेडिसिन, मेडिकल एजुकेशन और इंटर्नशिप नेतृत्व--इन सभी क्षेत्रों में डॉ. श्रॉफ का व्यापक एवं प्रभावशाली योगदान उन्हें भारत की चिकित्सा जगत की सबसे प्रेरणादायक और प्रभावशाली शख्सियतों में स्थापित करता है। वे एक ऐसे चिकित्सक, समाजसेवी और नवोन्मेषक हैं जिनके कार्यों ने न केवल चिकित्सा व्यवस्था को खोला है, बल्कि हजारों परिवारों को जीवनदान भी दिया है।

With Best Compliments From :

Shri Ram Awtar Ramsisaria

M/S. SHYAM TEXTILES LTD.

156A, Mahatma Gandhi Road
2nd Floor, Room No. 203
Kolkata – 700007
Mobile No. 9830063496
Email - shyam.textiles@yahoo.com

समाज विकास

◆ दिसंबर २०२५ ◆ वर्ष ७६ ◆ अंक १२
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **९१वाँ स्थापना दिवस समारोह का विवरण**	७
● **मारवाड़ी सम्मेलन के अब तक के सिरमौर**	८
● **सन्देश**	९-२५
● **चिट्ठी आई है**	३०
● **सम्पादकीय** : अंतरात्मा के स्तर पर जीना ही मानव का अभीष्ट	३१
● **अध्यक्षीय** : सम्मेलन के ९० वर्ष : सेवा, संस्कार और संगठन का स्वर्णिम प्रवाह	३३
● **सम्मेलन समाचार**	३४-३६
● **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति (२०२५-२७)**	३७
● **प्रांतीय समाचार** : झारखंड, गुजरात, पूर्वोत्तर, उत्कल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंग, आंध्र प्रदेश	३८-४०, ४५-५०
● **प्रांतो की वार्षिक रपट** : पूर्वोत्तर, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंग	५१-५२, ६१
● **संस्कार-संस्कृति चेतना**	५५-५८
● **उपलब्धियाँ**	६२
● **१४७वीं जन्म जयंती पर विशेष** – संस्थापक अध्यक्ष स्व. रामदेवजी चोखानी	६३
● **आलेख** : सीताराम शर्मा, डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया, संतोष सराफ, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, डॉ. गिरधारी लाल गोयनका, डॉ. मंगत बादल, रतन लाल बंका, राजेश कुमार सोंथलिया	६५-८५
● **कहानी** : प्राची री बहादुरी – रामजी लाल घोड़ेला	८६
सास-बहू अर राजस्थानी – बंशीधर शर्मा	८७
● **सम्मेलन के सत्र (२०२५-२७) की झलकियाँ**	९०-९२
● **सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों के उद्गार**	९३-९९
● **सम्मेलन के नए सदस्यों का स्वागत**	१००

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७, फोन : ०३३-४००४ ४०८९**
पंजीकृत कार्यालय : **१५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७**
◆ email: aimf1935@gmail.com ◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ संपादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

अयोध्या में ध्वजारोहण के अनुपम पर्व पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से पुनः आग्रह किया कि आगामी १० वर्षों में मैकॉले की मानसिक दासता से देश को पूर्णतः मुक्त करता है।

१७ नवंबर को इंडियन एक्सप्रेस द्वारा आयोजित रामनाथ गोयनका व्याख्यानमाला में प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया था कि सन् १८३५ में मैकॉले ने भारतीयों को शाश्वत मानसिक गुलाम बनाये रखने का दुष्चक्र प्रारंभ किया था।

सन् १९४७ में भारत स्वतंत्र हो गया पर भारतीय मानसिक रूप से अंग्रेजीयत के दास बन रहे। गत ७८ वर्षों में यह स्थिति यथावत बनी हुई है।

प्रधानमंत्री ने १७ नवंबर को एवं पुनः आज आह्वान किया कि सन् २०३५ (जब मैकॉले दुष्चक्र के २०० वर्ष पूर्ण हो जाएंगे) तक इस अंग्रेजी मानसिकता को समाप्त कर दिया जाय। इसके लिए वि-मैकॉलेकरण (De-Macaulayization) अभियान आवश्यक है।

आपसे अनुरोध है कि इस दिशा में फेडरेशन एक निश्चित रूपरेखा निर्धारित कर सशक्त अभियान प्रारंभ करें।

धन्यवाद।

अरुण चूड़ीवाल

मारवाड़ी समाज सदैव से अपने पुरुषार्थ, संस्कार, संगठन और सेवा-भाव के लिए जाना जाता रहा है। हमारे पूर्वजों ने सीमित संसाधनों में भी परिश्रम, ईमानदारी और आपसी सहयोग के बल पर समाज को एक सशक्त पहचान दी। आज उसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य मारवाड़ी सम्मेलन जैसे सशक्त संगठनों द्वारा निरंतर किया जा रहा है।

मारवाड़ी सम्मेलन, के सभी पूर्व अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों के कुशल नेतृत्व में, समाज को एकजुट करने, शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सेवा, युवा सशक्तिकरण एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु निरंतर सक्रिय है। उनके मार्गदर्शन में सम्मेलन ने समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर समरसता और प्रगति की दिशा में सराहनीय कार्य किए हैं।

वर्तमान समय की आवश्यकता है कि हम परंपरा और प्रगति के बीच संतुलन बनाते हुए शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें तथा युवा पीढ़ी को आधुनिक ज्ञान के साथ संस्कारों से भी जोड़ें। वहीं वरिष्ठजनों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा–जब एक मंच पर आती है, तब समाज सशक्त बनता है।

जब समाज संगठन, सहयोग और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ता है, तब विकास केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी होता है। मारवाड़ी सम्मेलन के निरंतर प्रयास, वर्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी के नेतृत्व में, समाज की जड़ों को और अधिक मजबूत कर रहे हैं।

आइए, हम सब मिलकर मारवाड़ी सम्मेलन के साथ कदम से कदम मिलाते हुए मारवाड़ी समाज की गरिमा, एकता और प्रतिष्ठा को नये ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस समृद्ध विरासत पर गर्व कर सकें।

– **मनीष बाजोरिया**, इंदौर

आत्माराम सोन्थलिया का सम्मान

विधाननगर नगर निगम द्वारा आयोजित विधाननगर मेला उत्सव में अतुलनीय सामाजिक अवदान के लिए मेयर श्रीमती कृष्णा चक्रवर्ती के हाथों सम्मानित होते साल्टलेक के वरिष्ठ नागरिक समाजचिन्तक श्री आत्माराम सोन्थलिया।

कविता

जीवन एक–रंग अनेक

माँ जब तुम चली जाओगी

बहुत याद आएगी माँ तुम्हारी, जब तुम चली जाओगी।।
मीठी लोरी, गरम चुपड़ी रोटी, जब तुम मनुहार से, मीठी फटकार से,
गोद में बैठा कर खिलाती हो, याद करते ही रुलाई आती है,
आगे कौन मुझे खिलायेगा, यही यादें खूब रुलाएंगी,
जब तुम चली जाओगी।।
क्या करना क्या नहीं करना, तुम्हीं तो सिखाती बताती रही हो,
फिर तो जो भी करूँगा, रोकने पूछने वाला भी न होगा,
यही सब याद जब करता हूँ, यही यादें ही खूब सतायेंगी,
जब तुम चली जाओगी।।
तुम्हीं ने तो अच्छे-बुरे की सीख दी है, जो जीवन में काम आयेगा
तुम्हारा दिया प्यार एवं ममता हमारी धरोहर रहेगी।
बादा रहा चलता रहूँगा बताये रास्ते पर,
यह सोचकर भी काँप उठता हूँ, तुम नहीं भी रहोगी माँ,
जब तुम चली जाओगी।।
माँ! जाने की जल्दी न करना, बनी रहना तुम ढाल हमारी,
विधाता की नियति है यह, कुछ न चलती यहाँ किसी की।
परन्तु याद बहुत ही आओगी, माँ! तुम यादों में बहुत तड़पाओगी,
जब तुम चली जाओगी।।
आशीष हमेशा तुम्हारी पाते रहें,
रोऊँगा नहीं वादा रहा, पर यादें तुम्हारी मिटा न सकूँगा,
कुछ भी कहूँ मन मानेगा नहीं माँ, तुम बहुत याद आओगी,
तुम बहुत याद आयोगी, जब तुम चली जाओगी।।

– हरि प्रसाद बुधिया

अंतरात्मा के स्तर पर जीना ही मानव का अभीष्ट

संपादकीय

सिगमंड फ्रायड एक ऑस्ट्रियाई न्यूरोलॉजिस्ट और मनोविश्लेषण के जनक थे, जिन्होंने अचेतन मन के महत्व, बचपन के अनुभवों, स्वप्न विश्लेषण और मानवीय व्यक्तित्व के विकास पर क्रांतिकारी सिद्धांत दिए। उन्होंने मानव मस्तिष्क की प्रकृति और कार्य प्रणाली के बारे में अभूतपूर्व सिद्धांत विकसित किए, जिनका मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव पड़ा। फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व का गत्यात्मक पक्ष तीन अवस्थाओं द्वारा निर्मित होता है – १. इदं (Id) २. अहम् (ego) ३. पराअहम् (super ego)

(१). इदम् (Id) : यह जन्मजात प्रकृति है। इसमें वासनाएँ और दमित इच्छाएँ होती है। यह तत्काल सुख व संतुष्टि पाना चाहता है। यह पूर्णतः अचेतन में कार्य करता है। यह 'पाशविकता का प्रतीक' है।

इदम् के स्तर पर व्यक्ति इन्द्रिय जनित सुखों की खोज करता है। ईदम् को अतृप्त इच्छाओं का भण्डार भी कहते है। इच्छा पूर्ति के द्वारा व्यक्ति को सुख की प्राप्ति होती है। यह पूर्णतः अचेतन में कार्य करता है। काम प्रवृत्ति की मानसिक शक्तियों का भण्डार है। यह मन/मस्तिष्क का असभ्य भाग होता है। जिसमें आन्तरिक प्रवृत्तियां, मूल प्रवृत्तियां, इच्छाएं निहित होती है। ये सुख-सिद्धान्त द्वारा निर्देशित होती है। इदम हमारे अन्दर का पशु है, असभ्य अनियंत्रित प्रवृत्तियाँ है। तर्कहीन होता है। सुख सिद्धान्त द्वारा प्रभावित होता है।

२ अहम् (ego) : यह सामाजिक मान्यताओं व परम्पराओं के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा देता है। यह संस्कार, आदर्श, त्याग और बलिदान के लिए तैयार करता है। यह 'देवत्व का प्रतीक' है। यह व्यक्ति को उचित-अनुचित का ज्ञान करवाता है। अतः इगो को वास्तविकता का सिद्धान्त (चेतन) भी कहते है। परिणाम की अवस्था है।

क) इदम् की अवैध क्रियाओं को नियंत्रित करने के लिए अहम् एक सिपाही के रूप में कार्य करता है। यह निर्णय लेने के लिए बुद्धि से कार्य करता है।
ख) इदम् की इच्छाओं और यथार्थता की माँगों के बीच समायोजन होता है। इसे मन का मुख्य प्रशासक कहा जाता है।
ग) अहम्–चेतन व अचेतन दोनों होता है। लेकिन यह अधिक तौर पर अचेतन चेतना होता है।
घ) इसकी प्रकृति तर्कपूर्ण होती है।
च) अहम् मूल प्रवृत्तियों का दबाव, बाहरी यर्थातता और परा अहम् द्वारा नियंत्रण के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है।
छ) अहम् वास्तविक सत्य है, चेतन बुद्धि का प्रतीक है।

३ परम अहम् (super ego) : यह मन का वह भाग है, जिसे अन्तरात्मा कहा गया है। यह व्यक्तित्व का सर्वोच्च स्तर है एवं यह व्यक्ति में नैतिकता एवं आदर्श का विकास करता है। इसे आदर्शवादी सिद्धान्त कहते है। यह इद्म की अनुचित अभिव्यक्तियों को नियंत्रित रखने का प्रयास करता है। फ्रायड परा-अहम् को अहम् आदर्श (ego Ideal) कहते है। पूर्णतः चेतन से निर्धारित होता है।

क) परा अहम् सामाजिकता और नैतिकता का प्रतीक है।
ख) अहम् पर नियंत्रण रखता है।
ग) इदम् पर नियंत्रण रखता है।
घ) नैतिक समीक्षक है, जो मध्य में अचेतन दोष की भावना बनाए रखता है।
च) परम् - अहम् व्यक्ति के व्यक्तित्व का नैतिक शास्त्र होता है। यह एक आदर्श स्वत्व और अन्तरात्मा का प्रतिनिधि होता है।

इस प्रकार व्यक्तित्व इन तीनों घटकों के मध्य 'समायोजन का परिणाम' है

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में आगे विचार करने से पहले हमें यह याद रखना चाहिए कि मनुष्य केवल एक जैविक प्राणी नहीं है, वह सामाजिक प्राणी है। वह नैतिकता एवं बौद्धिक गुण युक्त रहता है। मनुष्य सोचने, समझने और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता युक्त होता है। मनुष्य समाज में रहते हुए दूसरों के भावनाओं को समझता है और उनके प्रति सहानुभूति रखता है। भारतीय दर्शन मनुष्य का आत्मज्ञानी बनने पर केंद्रित है। उसकी सूप्त आत्म चेतना जागृत होने पर ही उसे आत्मज्ञान होने लगता है। वह "मैं" से ऊपर उठकर "हम" के स्तर पर सोचने लगता है। मनुष्य सिर्फ अपने लिए नहीं जीता बल्कि दूसरों के लिए भी जीता है। वेद का आचार्य कहता है- ममं वृतम देवाः मम वाचां दिव्यम देवो हरण यम् गच्छा। अर्थात हे मानव! तू अपनी मानवता को जानने का प्रयास कर। मानव कौन है? -जो मननशील है। संसार में जो मनन नहीं कर पाता वह मानव कहलाने का हकदार नहीं होता।

सुप्त चेतना जब जागृत होने लगती है तो मानव फ्रायड द्वारा बताए गए दूसरे पायदान अहम मे प्रवेश करता है और और उसके बाद जब उसकी अंतरात्मा जागृत होती है तो वह अपने मन पर नियंत्रण करने लगता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति अपने जीवन में शनैः शनैः उपलब्धि करता है। जब भी इस उत्तरोत्तर विकास में व्यवधान होता है तो व्यक्ति एवं समाज में विसंगतियां-कुरीतियां पनपते है। इसका उदाहरण आज हम समाज में देख सकते हैं। समाज में आज बहुत कुछ हो रहा है और समाज इसे स्वीकार भी कर रहा है, पर नैतिकता एवं आदर्श के पैमाने पर वे खरा नहीं उतरते। हम यह नहीं कह सकते कि 'अहम' के स्तर पर सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं के अनुरूप कार्य हो रहे हैं। इसके विपरीत आज हम यह देख रहे हैं कि व्यक्ति के अनुचित अभिव्यक्तियों को निरंतर नियंत्रित करने की जगह उसका प्रसार हो रहा है। आज समाज में जो विसंगतियां एवं कुरीतियाँ उत्पन्न हो रही हैं इसका मुख्य कारण है कि हम 'इदं' की स्तर पर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। हम वे सब कार्य कर रहे हैं जो हमें तत्काल सुख एवं संतुष्टि देते है। हम अपने इंद्रीय सुख की इच्छाओं का दमन करने में स्वयं को विवश पाते हैं। 'परम अहम' के स्तर मे जीने के लिए हमे समाज में संस्कार, आदर्श, त्याग एवं बलिदान के लिए स्वयं को प्रस्तुत रखना होगा। समाज के जो स्थापित नैतिक मूल्य है उनका पालन करने के लिए हमें अपनी आवश्यक मनः स्थिति बनानी पड़ेगी। इसमे हमारे सामाजिक संस्थाओं, पारिवारिक एवं शिक्षण संस्थानों की मुख्य भूमिका है। हमारे समाज को आज 'ईदम' से 'परम अहम' के स्तर की यात्रा के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। तभी हम पारिवारिक-सामाजिक स्थायित्व एवं उन्नति को हासिल करते हुए अपने अंतरात्मा को जागृत करने की यात्रा सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इस विषय में समाज शास्त्रियों एवं समाज के नेतृत्व को विचार करके अपनी भूमिका का निर्वहन करने की आवश्यकता है।

शिवकुमार लोहिया

शिव कुमार लोहिया

With Best Compliments From:

NIRMAL GOENKA
ADVOCATE ON RECORD (AOR)- SUPREME COURT OF INDIA

GOENKA LAW COMPANY

PH: 9312509329, 9711106482
Email: pkgoenka59@gmail.com | nirmalgoenka.adv@gmail.co

SHIVRAMA TRADING PVT. LTD.

SHARES, STOCKS, MUTUAL FUNDS,
INVESTMENTS & ADVISORY

230-231, VARDHMAN BAHNHOF PLAZA, PLOT-10,
POCKET-7, SECTOR-12, DWARKA, NEW DELHI-110075

PH : 7838382407, Email : shivramatrading@gmail.com

सम्मेलन के ९० वर्ष : सेवा, संस्कार और संगठन का स्वर्णिम प्रवाह

पवन कुमार गोयनका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिए वर्ष २०२५ केवल एक साधारण कैलेंडर वर्ष नहीं है, यह हमारी संगठनात्मक चेतना, सामाजिक प्रतिबद्धता और ऐतिहासिक यात्रा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है। २५ दिसंबर २०२५ को सम्मेलन अपने ९० गौरवशाली वर्षगांठ पूरा करेगा। यह अवसर उन संकल्पों की पुनर्पुष्टि का है, जिन्हें हमारे पूर्वजों ने १९३५ में इस संगठन की स्थापना के समय लिखा था–समाज को एकजुट करना, संस्कार और शिक्षा का प्रसार करना, सेवा-धर्म को प्राथमिकता देना और देश-समाज की उन्नति में सक्रिय भूमिका निभाना।

आज, जब हम ९० वर्षों की इस विरासत के समीप खड़े होकर पीछे मुड़कर देखते हैं, तो लगता है कि यह यात्रा केवल वर्षों की लंबाई नहीं, बल्कि भावनाओं की गहराई, कार्यों की व्यापकता और समाज की सामूहिक आकांक्षा का सुफल है। सम्मेलन ने समय के साथ न केवल स्वयं को स्थापित किया, बल्कि लाखों मारवाड़ी परिवारों को एक सूत्र में पिरोने का एक अद्वितीय कार्य किया।

सम्मेलन की प्रारंभिक यात्रा १९३० के दशक में जब देश स्वतंत्रता संग्राम की तीव्र लहरों से गुजर रहा था, उसी समय हमारे समाज के भीतर भी संगठनात्मक चेतना का संचार हो रहा था। समाज की एकजुटता, उसकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक उत्तरदायित्व और संस्कृति की रक्षा की भावना ने सम्मेलन की नींव रखी। उस समय भी हमारा समाज व्यापार, दान, शिक्षा और राष्ट्रहित के कार्यों में अग्रणी था, परंतु सामूहिक आवाज़ के अभाव में कई कार्य सीमित रह जाते थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना ने समाज को दिशा दी–एक सुविन्यस्त, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण संगठन की। आज ९० वर्ष बाद जब हम इसकी प्रगति को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि इस संगठन ने समाज को केवल जोड़ा ही नहीं, बल्कि उसकी सोच, शक्ति और क्षमताओं को एक केंद्र में लाकर उसे प्रभावी बनाया।

९० वर्षों की उपलब्धियाँ : समाज-निर्माण का आधारस्तंभ

सम्मेलन की यात्रा केवल कार्यक्रमों की श्रृंखला नहीं, बल्कि संवेदना, सेवा और समर्पण से भरा हुआ एक आंदोलन है। इन ९० वर्षों में समाज के कमजोर वर्गों को शिक्षा, चिकित्सा और सहायता उपलब्ध कराई गई। प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्यों से लेकर कोविड काल तक, संगठन ने अपनी सक्रियता का प्रमाण दिया है।

मातृभाषा, संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए अनेक प्रयास हुए है। प्रांतीय और जिला स्तर पर शाखाओं का विस्तार कर संगठनात्मक शक्ति को व्यापक बनाया गया है। युवा पीढ़ी, महिला शक्ति और समाज के वरिष्ठजनों के अनुभव –इन तीनों के समन्वय से सम्मेलन एक जीवंत शक्ति के रूप में विकसित हुआ है। यह उपलब्धियाँ किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि हजारों सदस्यों की सामूहिक भावना, टीमवर्क, सामाजिक प्रतिबद्धता और वर्षों के निरंतर परिश्रम का परिणाम हैं।

समाज की सबसे बड़ी ताकत–हमारी एकजुटता

हमारे पुरखों ने कहा है–"संगठन ही शक्ति है"। यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि सम्मेलन का जीवन-मंत्र है। ९० वर्षों में हमने देखा है कि जहाँ-जहाँ समाज एकजुट हुआ, वहाँ-वहाँ असंभव भी संभव हुआ। चाहे सामाजिक सुधार की बात हो, आपसी विवादों का समाधान, या आर्थिक-सांस्कृतिक उन्नति; हर क्षेत्र में एकता ने ही हमें आगे बढ़ाया।

आज समाज अनेक क्षेत्रों में प्रगति कर चुका है–व्यापार, उद्योग, शिक्षा, समाजसेवा, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक गतिविधियों में मारवाड़ी समुदाय का योगदान राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। यह उपलब्धियाँ केवल व्यक्तिगत प्रतिभा का परिणाम नहीं, बल्कि उन मूल्यों का प्रसाद हैं जो समाज की जड़ों में संस्कारित हैं-विश्वास, निष्ठा, मेहनत, और सेवा-भाव।

आधुनिक समय की चुनौतियाँ : नए दौर की नई अपेक्षाएँ

हर दशक अपने साथ कुछ नई चुनौतियाँ लेकर आता है, और सम्मेलन ने हमेशा समय के अनुरूप स्वयं को ढाला है। परंतु आज की चुनौतियाँ पहले से कहीं अधिक व्यापक और जटिल हैं।

१. युवा पीढ़ी को संगठन से जोड़ना

युवा समाज के ऊर्जा-स्त्रोत हैं। उनकी प्रतिभा, तकनीकी समझ और नवाचार क्षमता संगठन के भविष्य की धुरी है। परंतु बदलते सामाजिक ढाँचे, व्यस्त जीवनशैली और आधुनिक आकर्षणों के बीच उन्हें संगठन से जोड़ना एक सतत प्रयास है। हमें उन्हें नेतृत्व में आगे लाने, निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने और उनके विचारों को सम्मान देने की आवश्यकता है।

२. डिजिटल युग में संगठनात्मक सशक्तिकरण

आज का समय सूचना और तकनीक का है। संगठन को भी डिजिटल माध्यमों–वेबसाइट, सोशल मीडिया, डेटा प्रबंधन, ऑनलाइन शिक्षण, ई-रिसोर्सेज–के माध्यम से सशक्त बनना होगा। इससे गतिविधियाँ पारदर्शी, त्वरित और व्यापक होंगी।

३. सामाजिक समस्याएँ : शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कार

समाज के छोटे, ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर हिस्सों तक पहुँच बनाना अभी भी आवश्यक है। शिक्षा और चिकित्सा वे क्षेत्र हैं जहाँ निरंतर कार्य की आवश्यकता रहती है। साथ ही, बदलते समय में पारिवारिक मूल्यों की रक्षा, युवा पीढ़ी को संस्कारों से जोड़ना और समाज में नैतिकता का स्तर बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य हैं।

४. आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिरता

मारवाड़ी समाज संस्कृति-सम्पन्न है, परंतु इसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों, भाषा शिक्षण, साहित्य सृजन और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण पर अधिक ध्यान देना होगा।

२५ दिसंबर २०२५ को मनाया जाने वाला स्थापना दिवस केवल भूतकाल का स्मरण नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा निर्धारित करने का भी अवसर है। इस अवसर पर–सम्मेलन की ९० वर्षों की यात्रा का विस्तृत मूल्यांकन प्रस्तुत होगा, राष्ट्रीय कार्यक्रमों की नई रूपरेखाएँ घोषित होंगी और यह संकल्प लिया जाएगा कि आगामी १० वर्षों में सम्मेलन और भी अधिक प्रभावी, संगठित और सेवा-केंद्रित बने। यह आयोजन समाज के हर वर्ग–वरिष्ठों, महिलाओं, युवाओं, उद्योगजगत, सामाजिक कार्यकर्ताओं और परोपकारियों–सभी की सहभागिता से ऐतिहासिक बनेगा।

९० वर्ष पूर्ण होने का यह अवसर हमें आत्मनिरीक्षण के साथ-साथ एक नए संकल्प के लिए प्रेरित करता है। भविष्य में सम्मेलन की दिशा निम्न बिंदुओं पर केंद्रित होगी – जैसे शिक्षा और कौशल विकास के लिए राष्ट्रव्यापी पहल हो, स्वास्थ्य सहायता, चिकित्सा शिविर और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ हो, युवाओं के लिए नेतृत्व तैयार करने हेतु प्रशिक्षण देना, महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष कार्यक्रम करना, सांस्कृतिक और भाषाई पहचान का संरक्षण करना, गरीब, वंचित और जरूरतमंद परिवारों तक सहायता पहूँचाना, डिजिटल और प्रशासनिक सुधार करना एवं संगठनात्मक पारदर्शिता और आधुनिकता का विस्तार करना हमारा लक्ष्य एवं सम्मेलन के इस सत्र का नारा भी 'म्हारी चाह संगठित समाज है' स्पष्ट है। – प्रत्येक मारवाड़ी परिवार तक संगठन की पहुँच, और समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक सेवा का स्पर्श।

सम्मेलन के ९० वर्ष पूर्ण होने पर मैं देश-विदेश में बसे सभी मारवाड़ी बंधुओं को हृदय से हार्दिक बधाई देता हूँ। यह उपलब्धि हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता, हमारे समाज की एकजुटता, और लाखों स्वयंसेवकों के सतत प्रयासों की देन है।

हम उन सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों, राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रांतीय पदाधिकारियों, शाखा सदस्यों और समाजसेवियों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हैं जिन्होंने सम्मेलन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की बहुमूल्य ऊर्जा समर्पित की। आज संगठन जिस बिंदु पर है, वह उनके परिश्रम और त्याग की ही देन है।

आइए, ९० वर्ष की इस पावन यात्रा को आगे बढ़ाते हुए हम सभी नए उत्साह, नई ऊर्जा और नई प्रतिबद्धता के साथ एक बार फिर संकल्प लें–कि सम्मेलन को आधुनिक, सशक्त, सेवामयी और संस्कारशील बनाते हुए हम समाज और राष्ट्र विकास में अपनी भूमिका को और मजबूत करेंगे।

जय राष्ट्र, जय समाज, जय सम्मेलन।

सम्मेलन समाचार

शिष्टाचार भेंट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय इकाई उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री डॉ. सुभाष चंद्र अग्रवाल, उत्कल प्रांत के नुआपड़ा शाखा के अध्यक्ष, श्री सुरेश कुमार अग्रवाल एवं श्री नरेश कुमार अग्रवाल, खड़ियार शाखा के अध्यक्ष के दिनांक: २५ नवंबर २०२५ को कोलकाता आगमन पर केंद्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री केदार नाथ गुप्ता के साथ शिष्टाचार भेंट संपन्न हुई।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का वाराणसी दौरा

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनोद तोदी ने शनिवार को सिद्धगिरी बाग स्थित हरि विलास होटल में समाज के लोगों के साथ बैठक की।

विनोद तोदी ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से किसी भी बच्चों की पढ़ाई के लिए हर साल दो लाख रुपये देने की योजना है। इसके अलावा किसी की बीमारी में भी मदद कीं व्यवस्था है। वरिष्ठ सदस्य एवं संरक्षक उमाशंकर अग्रवाल ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का स्वागत किया। प्रदेश उपाध्यक्ष गोकुल शर्मा ने कहा कि समाज मारवाड़ी सम्मेलन की योजनाओं का प्रचार प्रसार कर रहा है। इस दौरान अनुज डिडवानिया, हमदेव अग्रवाल, विजय मोदी, पवन अग्रवाल, राजेश, आनंद लाड़िया आदि मौजूद थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन द्वारा सीताराम रुँगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य का शुभारंभ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के द्वारा सीताराम रूँगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य का शुभारंभ दिनांकः २६ नवंबर २०२५ (बुधवार) को विशेष पूजा-अर्चना सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भवन निर्माण उपसमिति के चेयरमैन श्री संतोष सराफ एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका की देखरेख में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम २५ए, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-७००००९ स्थित प्रस्तावित भवन स्थल पर आयोजित किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम प्रातः ११.०० बजे प्रारंभ हुआ।

निर्माणाधीन भवन चार मंजिला होगा और इसका निर्माण कार्य आगामी दो वर्षों में पूर्ण होने की संभावना है। यह भवन मुख्य रूप से उन समाज के विद्यार्थियों के लिए समर्पित है जो पढ़ाई हेतु कोलकाता आते हैं। भवन में छात्रावास, अध्ययन-सुविधाएँ एवं आवासीय व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे विद्यार्थियों को सुरक्षित, संस्कारयुक्त एवं प्रेरणादायी वातावरण प्राप्त हो सके।

भवन का क्षेत्रफल १५,००० वर्ग फीट है, तथा इसे ४० विद्यार्थियों के आवास की क्षमता के साथ विकसित किया जा रहा है। प्रथम तल पर एक सांस्कृतिक कक्ष, सामाजिक गतिविधियों हेतु बहुउद्देश्यीय हॉल तथा अन्य प्रांतों से आने वाले सदस्यों के अतिथि-निवास कक्ष बनाए जा रहे हैं।

इस भवन के निर्माण में एस.आर. रुँगटा ग्रुप का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी योगदान रहा है। उनके सहयोग, समर्पण और मार्गदर्शन से इस परियोजना को प्रारंभिक स्वरूप प्राप्त हुआ है, जिसके लिए सम्मेलन उनकी हार्दिक सराहना करता है।

निर्माण कार्य की संपूर्ण जिम्मेदारी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मलेन की भवन निर्माण उपसमिति के अधीन होगी। उपसमिति के चेयरमैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ एवं संयोजक, वर्तमान संयुक्तमंत्री श्री पवन कुमार जालान दोनों इस परियोजना को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण रूप से पूर्ण कराने हेतु निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

सीताराम रुँगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन समाज की शिक्षा, सेवा और संस्कार आधारित मूल्यों को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह भवन आने वाली पीढ़ियों के लिए अवसरों का द्वार बनेगा और सामाजिक उत्थान में मील का पत्थर सिद्ध होगा। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया के अपरिहार्य कारणों से इस ऐतिहासिक पल में शामिल नहीं हो सके। इस लिए उन्होंने भवन निर्माण उपसमिति के चेयरमैन श्री संतोष सराफ से क्षमा याचना की और उनको मैसेज कर जानकारी दी कि उन्हें अति प्रसन्नता है कि सीताराम रूंगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन का निर्माण कार्य आज से प्रारंभ हो रहा है। इस अवसर पर आयोजित समारोह की मै सफलता की कामना करता हूँ।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण श्री सीताराम शर्मा, पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री संतोष सराफ, श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन कुमार गोयनका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गिरधारी लाल गोयनका, राष्ट्रीय महामंत्री श्री केदारनाथ गुप्ता, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीगण, श्री रतन साह, श्री संजय हरलालका, श्री कैलाशपति तोदी, राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री श्री पवन कुमार बंसल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अनिल

कुमार मलावत, निवर्तमान राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री श्री संजय गोयनका, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्षगण श्री गोपाल अग्रवाल, श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, प्रांतीय महामंत्री श्री पंकज भालोटिया, सर्वश्री जगदीश चंद्र एन. मुँधड़ा, सुनील मणिरामका, अमित मुँधड़ा, सुरेष कुमार शर्मा, ए.के. डालमिया, संदीप सेक्सरिया, राज कुमार अग्रवाल, अजय राय, अरुण गाड़ोदिया, ऋषभ मित्तल, उमंग तोदी, अशोक कुमार झुनझुनवाला, नंदलाल सिंघानिया, बाबुलाल बंका, अरुण प्रकाश मल्लावत, अंजनी धानुका, सुशील कुमार चौधरी, पिंकी मेदतिया, पी. चौधरी, महेंद्र कुमार अग्रवाल, विष्णु अग्रवाल, प्रकाश चंद हरलालका, बिश्वनाथ भुवालका, सत्य नारायण सोनी, संदीप अग्रवाल, आदर्श बंका, अजय कुमार अग्रवाल, सांवरमल शर्मा, सिद्धार्थ कुमार चौधरी, पवन जैन, राजेश कुमार सोंथलिया, बिनोद कुमार लिहला, सज्जन बेरिवाल, सज्जन खंडेलवाल, चंडी प्रसाद, ओम प्रकाश रुइया एवं अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

सम्मेलन समाचार

स्वागत एवं सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में दिनांकः २९ नवंबर २०२५; अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विकास अग्रवाल, दिल्ली के कोलकाता आगमन पर एवं उनके साथ श्री अमित सिंघल, श्री अजय अग्रवाल के पधारने पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री केदार नाथ गुप्ता एवं निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाश पति तोदी जी द्वारा उनका स्वागत एवं सम्मान किया गया।

अयोध्या में पूर्वांचल के गांधी से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की भेंट

मारवाड़ी समाज के वरिष्ठ अग्रणी एवं पूर्वांचल के गांधी के नाम से विख्यात श्री भागीरथ पचेरीवाला से २१ नवंबर २०२५ को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनोद तोदी की सौहार्दपूर्ण भेंट।

संस्थापक अध्यक्ष स्व. रामदेव चोखानी की १४७वीं जन्म जयंती समारोह

अखिल भारतवर्षीय मरवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय इकाई मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की इंदौर शाखा द्वारा सम्मेलन के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रायबहादुर रामदेव चोखानी जी की १४७वीं जन्मदिवस पर ७ दिसंबर २०२५ को अभय प्रशाल, जे एम बी रेस्टोरेंट, रेस कोर्स रोड, इंदौर में एक कार्यक्रम **'युगान्तर'** का आयोजन किया गया। जिसमें सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका मुख्य अतिथि एवं गरिमामयी उपस्थिति मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री शरद सरावगी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी ने इंदौर की नई शाखा को प्रोत्साहित किया और संस्था के ध्येय वाक्य **"म्हारी चाह – संगठित समाज!"** पर ज़ोर देते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज को देश के हर कोने में संगठित रहकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया, विशेषकर सामाजिक कुरीतियों जैसे प्री-वेडिंग शूट को रोकने और शादियों में शराब पर प्रतिबंध लगाने पर, तथा संगठन के मुख्य लक्ष्यों (रोज़गार, नारी शक्ति, राजनीतिक चेतना) को प्राप्त करने पर ज़ोर दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में इंदौर शाखा द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख किया। साथ ही नीट के टॉपर सीए मुकुंद अगीवाल ऑल इंडिया सीए परीक्षा २०२५ में को सम्मानित किया। साथ ही कार्यक्रम के संयोजक एवं स्वर्गीय रामदेव चोखानी के पौत्र विशिष्ट संरक्षक श्री अरुण जी चौखानी, इंदौर शाखाध्यक्ष श्री राजेश थरड़ सचिव श्री सी ए रंजन अग्रवाल एवं शाखा कोषाध्यक्ष श्री सी ए अतिन अग्रवाल एवं कार्यक्रम में उपस्थित इंदौर शाखा के सभी सदस्यों को इस सुंदर कार्यक्रम हेतु धन्यवाद दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति (२०२५-२७)

पदाधिकारीगण

श्री पवन कुमार गोयनका	राष्ट्रीय अध्यक्ष	दिल्ली
श्री गिरधारी लाल गोयनका	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	कोलकाता
डॉ. सुभाष अग्रवाल	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	कर्नाटक
श्री बिनोद तोदी	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	बिहार
श्री राज कुमार मिश्रा	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	दिल्ली
श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	छत्तीसगढ़
श्री गोकुल चंद बजाज	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	गुजरात
श्री केदार नाथ गुप्ता	राष्ट्रीय महामंत्री	कोलकाता
श्री पवन कुमार जालान	राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री	कोलकाता
श्री पवन कुमार बसंल	राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री	कोलकाता
श्री बसंत कुमार सुराना	राष्ट्रीय संगठनमंत्री	असम
श्री अनिल कुमार मलावत	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	कोलकाता

पदेन सदस्य

श्री सीताराम शर्मा	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	कोलकाता
श्री नन्द लाल रुँगटा	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	चाईबासा
डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	कोलकाता
पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	कोलकाता
श्री संतोष सराफ	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	कोलकाता
श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	रांची
श्री शिव कुमार लोहिया	निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष	कोलकाता
श्री रतन लाल साह	पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री	कोलकाता
श्री संजय कुमार हरलालका	पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री	कोलकाता
श्री कैलाशपति तोदी	निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री	हावड़ा, प.बं.

सदस्यगण

श्री अमित सरावगी – कोलकाता
श्री अनिल कुमार जाजोदिया – वाराणसी
श्री अरुण कुमार गाड़ोदिया – कोलकाता
श्री अरुण चुड़िवाल – कोलकाता
श्री अरुण कुमार सुरेका – हैदराबाद
श्री अशोक कुमार जे. मुंधड़ा – चेन्नई
श्री आत्माराम सोंथलिया – कोलकाता
श्री बाबूलाल बंका – कोलकाता
श्री बनवारीलाल शर्मा (सोती) – कोलकाता
श्री भगवानदास अग्रवाल – कोलकाता
श्री भारत वी. गुर्जर – मुंबई
श्री बिनोद कुमार अग्रवाल – बरगढ़
श्री बृजमोहन गाड़ोदिया – कोलकाता
श्री चांदमल अग्रवाल – विशाखापट्टनम
श्री दिनेश कुमार जैन – कोलकाता
श्री जुगल किशोर जाजोदिया – कोलकाता
श्री कमल नोपानी – पटना
श्री कृष्णा अग्रवाल – धनबाद
श्री कुंज बिहारी अगरवाला – कोलकाता
श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया – दिल्ली
श्री ललित बेरीवाला – कोलकाता
श्री मधुसूदन सीकरिया – गुवाहाटी
श्री महेश बंग – नागपुर
श्रीमती ममता बिनानी – कोलकाता
श्री मुकेश मित्तल – जमशेदपुर
श्री नारायण भूषणिया – रायपुर
श्री निर्मल सराफ – कोलकाता
श्री ओमप्रकाश पोद्दार – बेंगलुरु
श्री पवन टिबड़ेवाला – कोलकाता
श्री प्रदीप जीवराजका – कोलकाता
श्री राजेश कुमार सोंथलिया – कोलकाता
श्री रमेश कुमार बजाज – दिल्ली
श्री रंजीत कुमार जालान – हरिद्वार
श्री रविन्द्र चमड़िया – कोलकाता
श्री सजन कुमार अग्रवाल – गंगटोक
श्री सज्जन भजनका – कोलकाता
श्री सजन कुमार बंसल – कोलकाता
श्री संदीप गर्ग – कोलकाता
श्री संदीप कुमार सिंघल – सूरत
श्री संजय गोयनका – कोलकाता
श्री शिव रतन अगरवाला (फोगला) – कोलकाता
श्री श्याम सुंदर अग्रवाल – एरनाक्कुलम
श्री सुशील कुमार गोयनका – कोलकाता
श्रीमती सुषमा अग्रवाल – पटना
श्री विनोद कुमार लोहिया – गुवाहाटी
श्री विष्णु कुमार तुलस्यान – कोलकाता
श्री विश्वनाथ सुरेका – कोलकाता
श्री विवेक गुप्त – कोलकाता

स्थायी विशिष्ट आमंत्रित

श्री आदित्य पोद्दार – कानपुर
श्री अमित मुँधड़ा – कोलकाता
श्री आनंद कुमार अग्रवाल – कोलकाता
श्री आनंद गोयनका – अमृतसर
श्री अरुण प्रकाश मल्लावत – कोलकाता
श्री भगवान दास अग्रवाल – कोलकाता
श्री बनवारी लाल मित्तल – कोलकाता
श्री विश्वनाथ भुवालका – कोलकाता
श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका – कोलकाता
श्री गोपाल अग्रवाल – कोलकाता
श्री जगदीश गोलपुरिया – बरगढ़
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा – चेन्नई
श्री जय भगवान सांवरिया – कोलकाता
श्री मन्नालाल बैद – दिल्ली
श्री मुरारीलाल सोंथलिया – चेन्नई
श्री नंदलाल सिंघानिया – कोलकाता
श्री नारायण प्रसाद जैन – कोलकाता
श्री नरेंद्र कुमार तुलस्यान – कोलकाता
श्री नितिन अग्रवाल – कोलकाता
श्री प्रह्लाद राय गोयनका – कोलकाता
श्री प्रकाश चन्द्र हरलालका – कोलकाता
श्री राजेश ककरानियाँ – हावड़ा, प.बं.
श्री रमेश कुमार बंग – हैदराबाद
श्री सज्जन शर्मा – दिल्ली
श्री संतोष कुमार अग्रवाल – साकची
श्री सुभाष चंद खंडेलवाल – कोलकाता
श्री सुनील गुप्ता – अमृतसर
श्री सुशील कुमार चौधरी – कोलकाता
श्री विजय कुमार सकलेचा – जबलपुर
श्री युगल किशोर अग्रवाल – पटना

पदेन सदस्य

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल – आंध्र प्रदेश
श्री बालकिशन लोया – आंध्र प्रदेश
श्री राकेश बंसल – बिहार
श्री अंजनी सुरेका – बिहार
श्री अमर बंसल – छत्तीसगढ़
श्री गिरधर गोपाल अग्रवाल – छत्तीसगढ़
श्री राजेश कुमार सिंघल – दिल्ली
श्री बसंत पोद्दार – दिल्ली
श्री संजय अग्रवाल (डोकानिया) – गुजरात
श्री सुशांत कुमार बजाज – गुजरात
श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल – झारखंड
श्री विनोद कुमार जैन – झारखंड
श्री सीताराम अग्रवाल – कर्नाटक
श्री शिव कुमार टेकरीवाल – कर्नाटक
श्री शरद सरावगी – मध्य प्रदेश
श्री श्याम सुंदर माहेश्वरी – मध्य प्रदेश
श्री निकेश गुप्ता – महाराष्ट्र
श्री सुदेश करवा – महाराष्ट्र
श्री नंद किशोर अग्रवाल – पश्चिम बंग
श्री पंकज भालोटिया – पश्चिम बंग
श्री कैलाश चंद काबरा – पूर्वोत्तर
श्री रमेश चांडक – पूर्वोत्तर
श्री अशोक केडिया – तमिलनाडु
श्री मोहनलाल बजाज – तमिलनाडु
श्री रामप्रकाश भण्डारी – तेलंगाना
श्री बद्री विशाल मुँदड़ा – तेलंगाना
श्री दिनेश कुमार अग्रवाल – उत्कल
डॉ. सुभाष चन्द्र अग्रवाल – उत्कल
श्री श्रीगोपाल तुलस्यान – उत्तर प्रदेश
श्री टिकम चन्द सेठिया – उत्तर प्रदेश
श्री रंजीत कुमार टिबड़ेवाल – उत्तराखंड
श्री आशीष वेदप्रकाश गुप्ता – उत्तराखंड
श्री अक्षय अग्रवाल – केरल
श्री विनय सिंघल – केरल
श्री रमेश पेड़िवाल – सिक्किम
श्री सुरेश कुमार अग्रवाल – सिक्किम

केन्द्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल का अभिनंदन

मारवाड़ी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ जी की आवास मे केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री (भारत सरकार) के अर्जुन राम मेघवाल जी एवं केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ का पुष्पगुच्छ एवं अंग वस्त्र ओढ़ाकर अभिनंदन किया। प्रांतीय अध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल ने केंद्रीय मंत्री श्री मेघवाल को एक मांग पत्र सौंपा। जिसमें कहा गया है कि झारखंड में मारवाड़ी समाज को काफी संख्या है जो कि यहां की सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा को अपना कर राज्य के विकास में अनवरत लगा हुआ है। स्व. जमनालाल बजाज (१८८९ - १९४२), महात्मा गाँधी के सहयोगी, स्वदेशी एवं कड़ी आन्दोलन के समर्थक, समाज सुधारक, स्व. राम मनोहर लोहिया (१९१० - १९६७), स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी, चिन्तक और सामाजिक न्याय के प्रबल पक्षधर, स्व. घनश्याम दास बिड़ला (१८९४ - १९८३), स्वतंत्रता आन्दोलन के समर्थक, स्वदेशी उद्योगी के प्रवर्तक और राष्ट्रनिर्माण में योगदानकर्ता। इन सभी को मरणोपरांत भारत रत्न प्रदान करने हेतु मारवाड़ी सम्मेलन भारत सरकार से अनुशंसा करता है। मारवाडी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु मारवाड़ी सम्मेलन भारत सरकार से मांग करती है। झारखंड के गिरिडीह जिले से हमारे समाज की प्रतिभा मोर मुकुट एवं मनोज कडिया, जो कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शास्त्रीय संगीतज्ञ हैं। उन्हें प्रधानमंत्री जी ने भी विदेशी प्रतिनिधियों के सामने परफॉर्म करने का मौका भी दिया था और उनकी प्रशंसा भी की थी। हमारी मांग है कि केडिया बंधुओं को पद्मश्री से सम्मानित करने हेतु अनुशंसा करें।

आशा है आप हमारी मांगों पर समुचित कार्यवाही करते हुए पूर्ण कराएंगे। मांग पत्र की प्रतिलिपि श्री संजय सेठ को भी सौंपा गया। श्री मेघवाल ने मारवाड़ी सम्मेलन की पदाधिकारियों के साथ कई मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया। झारखंड प्रंतीय मारवाड़ी सम्मेलन की संयुक्त महामंत्री सह प्रबक्ता संजय सर्राफ ने वताया कि शिष्टमंडल में- मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय वरीय उपाध्यक्ष ललित कुमार पोद्दार, महामंत्री विनोद कुमार जैन, पवन कुमार पोद्दार, मनोज चौधरी, पवन शर्मा आदि शामिल थे।

रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष बने शंकर व प्रकाश

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन कार्यक्रम द्वारा स्थानीय मारवाड़ी धर्मशाला में सम्मेलन के अध्यक्ष महावीर अग्रवाल की अध्यक्षता में आम सभा का आयोजन किया गया। बैठक में सर्व सम्मति से सत्र २५-२७ के लिए शंकर अग्रवाल व प्रकाश पटवारी एक एक वर्ष के लिए अध्यक्ष बनाए गए।

बैठक में सर्वप्रथम सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष महावीर अग्रवाल ने सभा प्रारंभ की घोषणा की व सभा में उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया। मंत्री प्रकाश पटवारी ने सचिव प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस दौरान बैठक में प्रांतीय चुनाव पर्यवेक्षक रमेश बोन्दीया का स्वागत किया गया।

निवर्तमान प्रमंडलीय मंत्री बिमल बुधिया व चुनाव पर्यवेक्षक रमेश बोनदिया तथा उम्मीदवार शंकर अग्रवाल व प्रकाश पटवारी के बीच विचार विमर्श कर तय किया गया कि दोनो एक-एक वर्ष के लिए अध्यक्ष बनेंगे, पहले अध्यक्ष शंकर अग्रवाल होंगे व मंत्री प्रकाश पटवारी मंत्री रहेंगे।

आम सभा में शंकर अग्रवाल ने इस बात की घोषणा भी की और कहा कि मैं एक वर्ष पूरा होने पर अध्यक्ष पद सृष्टि पड़कर प्रकाश पटवारी को अध्यक्ष पद का प्रभार सौप दूंगा।

बैठक में दिवंगत विशिष्ट संरक्षक श्री रामचन्द्र रुंगटा, पूर्व अध्यक्ष महावीर प्रसाद बेरलिया, वरिष्ठ सदस्य श्री हनुमान प्रसाद गोयल, श्री अशोक अग्रवाल आदि के लिए दो मिनट का शौक संवेदना प्रकटकर मौन रखा गया। धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष मानिक चन्द जैन ने दिया।

बैठक में अध्यक्ष महावीर अग्रवाल मंत्री प्रकाश पटवारी कोषाध्यक्ष मानिक चंद जैन, विमल बुधिया, सुभाष अग्रवाल, रोहित पसारी, अजय अग्रवाल, अजय अग्रवाल, इंद्र अग्रवाल, नरेश अग्रवाल, कनिष्क अग्रवाल, उमेश राजगढ़िया, अनिल गोयल, विनोद कुमार (पंकज), गोपाल जोशी, संदीप अग्रवाल, प्रवीण अग्रवाल, अरुण गोयल, संजीव बेरलिया, मनीष अग्रवाल, कमल बगड़िया, श्याम शर्मा, महावीर खंडेलवाल, किशोर जाजु, वरुण बगड़िया, अरुण बगड़िया, मुकेश अग्रवाल, सुनील कुमार, अमित मित्तल, प्रदीप शर्मा, सागर भारती आदि उपस्थित थे।

कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित

पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन (सत्र २०२३-२५) की कार्यसमिति का अंतिम बैठक जैन भवन सभागृह, साकची मे आयोजित की गई, जिसमें संगठन के वर्तमान कार्यकाल में हुए उल्लेखनीय कार्यों की समीक्षा की गई तथा आगामी सत्र चुनाव पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक में आने वाले कार्यकाल २०२५-२०२८ के लिए संगठन को और अधिक सशक्त व सक्रिय बताने के उद्देश्य से सुझावों, योजनाओं और नीतियों पर भी चर्चा की गई।

साथ ही आगामी चुनाव प्रक्रिया पर भी आधिकारिक घोषणा की गई, जिसमें चुनाव की विधि : रविवार, १४ दिसंबर २०२५ तक के गई और सफलतापूर्वक चुनाव संचालन हेतु सुरेश कुमार अग्रवाल (देबूका) को मुख्य चुनाव पदाधिकारी और श्रीराम सरोज (अधिवक्ता) एवं सुरेश कुमार अग्रवाल (साकचा) की सह-चुनाव प्रभागे बनाने की घोषणा की गई।

बैठक को जिला के संरक्षक दीपक भालोटिया प्रांतीय उपाध्यक्ष नंद किशोर अग्रवाल, प्रांतीय संयुक्त महामंत्री भोला चौधरी, प्रांतीय संुयुक्त महामंत्री भोला चौधरी, प्रांतीय संयुक्त महामंत्री विमल अग्रवाल, संरक्षक धर्म चंद्र पोद्दार, ऋषि पवन ब्राह्मण समाज से प्रकाश जोशी, खंडेलवाल समाज से गमरतन खंडेलवाल, गोलमुरी शाखा अध्यक्ष कमल लड्डा, पालुबासा शाखा, अध्यक्ष पंकज छावछरिया, चाकुलिया शाखा अध्यक्ष राजेश लोढा, कदमा शाखा अध्यक्ष पवन अग्रवाल मणी, प्रांतीय पदाधिकारी नवीन अग्रवाल, जिला कार्यसमिति सदस्य आकाश शाह, जिले के सक्रिय सदस्य कैलाश अग्रवाल (अधिवक्ता), सीताराम देबुका, राजस्थान शिव मंदिर जुगसलाई के कोषाध्यक्ष दीपक अग्रवाल रामुका, गेलमुरी शाखा कोषाध्यक्ष राजेश अग्रवाल, मनोज चेतनी एवं जिला नारी शक्ति विंग प्रभारी संगीता शर्मा ने भी संबोधित किया।

बैठक का संचालन जिला महासचिव प्रदीप कुमार मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष विजय कुमार गोयल ने किया। कार्यसमिति बैठक के अंत में राष्ट्र गान हुआ।

बैठक में मुख्य रूप से प्रांतीय पदाधिकारी अनिल रिंगनिया, अंकुश जवनगुरिया, लाला मूनका, महेश छापोलिया, अंकित मोदी, विकाश सिंघानिया, मुकेश मित्तल, विवेकानंद लोभा, श्याम सुंदर अग्रवाल, राजेस पसारी, राजेश चौधरी, मालीराम अग्रवाल, आर.के. अग्रवाल, सुशील अग्रवाल, विमल हरुपका, ललित नढ़वाल, आर. आर. खंडेलवाल, अशोक खंडेलवाल, रतन कुमार अग्रवाल, रतन सहरिया, कमलेश अग्रवाल, राजेश कुमार नरेडी, नरेंद्र कुमरा, प्रमोद अग्रवाल, संजय शर्मा, सुशील कुमार शर्मा, कैलाश केवलका, विनोद अग्रवाल, अनुराग अग्रवाल, अमित सरायवाला, विमल बाकरेवाल, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, विवेक पुरिया, संजय शर्मा, रविकांत अग्रवाल, संतोष अग्रवाल, संतोष कुमार अग्रवाल, मनोज कुमार, सरत अग्रवाल, श्याम गोयल, संजय मोलिका, स्वाति अग्रवाल, शखी शर्मा, शंकर लाल अग्रवाल, संजय शर्मा, प्रमोद कुमार अग्रवाल, गायत्री शर्मा, वबिता अग्रवाल, गंगा खेमका, नीलम शर्मा, अनुपमा मिश्रा, संतोष देवी, अनिता गोयल एवं कई अन्य सम्मानित सदस्यों ने भाग लिया।

तीन दिवसीय मारवाड़ महोत्सव हेतु बैठक सम्पन्न

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की बैठक प्रांतीय कार्यालय मारवाड़ी भवन हरमू रोड में हुई। दिनांक १६-१८ जनवरी २०२६ तक मारवाड़ी भवन में आयोजित तीन दिवसीय मारवाड़ महोत्सव के तैयारीयों के बारे में रूपरेखा तय किया गया। प्रांतीय वरीयउपाध्यक्ष ललित कुमार पोद्दार की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई।

बैठक में झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन प्रांतीय महामंत्री विनोद कुमार जैन ने कहा कि इस तीन दिवसीय मारवाड़ महोत्सव में राजस्थानी संस्कृति, व्यंजनों, हस्त शिल्प, और परंपराओं की भव्य झलक देखने को मिलेगी।

बैठक में मारवाड़ महोत्सव के मुख्य संयोजक अरुण भरतीया ने महोत्सव के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि मारवाड़ महोत्सव रांची के पावन धरती पर अद्भुत होगा। तथा राजस्थानी लोक संगीत एवं नृत्य, राजस्थानी शिल्प बाजार, हस्तशिल्प मेला, पारंपरिक प्रतियोगिताएं, मारवाड़ भाषा प्रतियोगिता, मारवाड़ी वेशभूषा, मेहंदी, राजस्थानी रसोई, चोखी धाणी आदि मुख्य आकर्षण का केंद्र होगा। महोत्सव को सफल बनाने हेतु शीघ्र ही कमेटी का गठन किया जाएगा। बैठक में सर्वश्री राजेंद्र केडिया, मनोज चौधरी, सज्जन पाड़िया, प्रमोद अग्रवाल, अनिल अग्रवाल, कौशल राजगढ़िया, प्रमोद सारस्वत, संजय सर्राफ, रमन वोडा, अरुण भरतीया, सुनील पोद्दार, दीपेश निराला, अजय डीडवानिया, विजय कुमार खोवाल, रिंकू अग्रवाल, नरेश बंका, कमल शर्मा आदि उपस्थित थे।

प्रांतीय समाचार : गुजरात

श्री संजय अग्रवाल गुजरात के नए अध्यक्ष

दिनांकः १६ दिसंबर २०२५ दिन मंगलवार को गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण बैठक अग्रवाल समाज ट्रस्ट घोड दौड़ रोड के हाल में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माननीय श्री गोकुल चंद्र बजाज की उपस्थिति में बुलाई गई।

जिसमें पूर्णकालिक प्रदेश अध्यक्ष के चयन की प्रक्रिया शुरू हुई। चयन प्रक्रिया में प्रांतीय अध्यक्ष के चयन की घोषणा के बाद दूसरा कोई नाम सामने नहीं आने पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोकुल चंद्र बजाज ने कहा कि कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष संजय अग्रवाल को ही पूर्णकालिक प्रदेश अध्यक्ष का भार दिया जाना चाहिए। सभी उपस्थित सदस्यों ने एकमत से ताली बजाकर संजय अग्रवाल के नाम पर अपनी सहमति दी और इस प्रकार संजय अग्रवाल गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष चुने गए। प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद अपने संबोधन में संजय अग्रवाल ने बताया कि वे समाज एवं सम्मेलन के सिद्धांतों पर खड़ा उतरने की कोशिश करेंगे। साथ ही सदस्यता एवं संगठन विस्तार का कार्य जारी रखेंगे।

संक्षिप्त परिचय

नाम : संजय अग्रवाल

जन्म : १९६८ ई० (मारवाड़ी अस्पताल, बड़ा बाज़ार, कोलकाता)

माता : स्व० कौशल्या देवी

पिता : स्व० हीरालाल अग्रवाल

बचपन : जमुई (बिहार) में बीता

शिक्षा : स्नातकोत्तर (पटना विश्वविद्यालय)

समाज सेवा :

मारवाड़ी युवा मंच, पटना – १९८८ ई० से

मारवाड़ी सम्मेलन, पटना नगर शाखा (सदस्य)

मारवाड़ी सम्मेलन, पटना सिटी शाखा (सचिव – छह वर्षों तक)

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की दोनों शाखाओं में कुल २२ वर्षों का अनुभव।

इसके अलावा पटना सिटी की कई संस्थाओं में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

आकाशवाणी, पटना एवं दूरदर्शन, पटना के कई कार्यक्रमों से जुड़े रहे।

रुचि : समाज सेवा, प्रश्न मंच

व्यवसाय : पारिवारिक व्यवसाय

निवास : ११ फ़रवरी २०२५ से सूरत में स्थायी निवास करते है।

नि:शुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९१वें स्थापना दिवस (२५ दिसंबर २०२५) के उपलक्ष्य में प्रांतीय इकाई गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सूरत शाखा द्वारा आशीर्वाद एवेन्यू सोसायटी में नि:शुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोकुलचंद जी बजाज, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष संजय जी डोकानिया, जिला अध्यक्ष सुशील अग्रवाल, सचिव शिवकुमार अग्रवाल सहित अनेक पदाधिकारी एवं समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में राजा अग्रवाल, राजेंद्र अग्रवाल, विकास अग्रवाल, विजय सरावगी, सुनील अग्रवाल, कन्हैयालाल वेद, मुकेश चिरानिया, मनोज मित्तल, निखिल गोयल, सोनू डोकानिया, योगेश रामसिसारिया, बिमल अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे।

वेसू शाखा का गठन

दिनांक १६ दिसंबर २०२५ दिन मंगलवार को गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण बैठक अग्रवाल समाज ट्रस्ट घोड दौड़ रोड के हाल में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माननीय श्री गोकुल चंद्र बजाज की उपस्थिति में बुलाई गई।

गुजरात के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने सभा में उपस्थित सभी समाजसेवियों के समक्ष सूरत की नई वेसू शाखा के सदस्यों का परिचय कराया। नई शाखा का गठन श्री प्रकाश बिंदल के नेतृत्व में किया गया है। सचिव के रूप में श्री राहुल बजाज एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री विवेक लोहारूका बनाए गए हैं। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोकुल चंद बजाज जी ने नई शाखा के सभी सदस्यों का दुपट्टा ओढ़ाकर बारी-बारी से सम्मान किया एवं उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

तत्पश्चात प्रदेश अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने नई शाखा के सदस्यों को शाखा प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस प्रकार सूरत शहर में एक नई वेसू शाखा का गठन हो गया।

With Best Wishes From

Dr. Vijaykumar Lohia
Correspondent

Mrs. S. Krishnaveni
M.Sc., B.Ed, Principal

VATSALYA

MATRICULATION HIGHER SECONDARY SCHOOL
(Unit of Visharda Charitable Trust)
(Recognized by the Government of Tamil Nadu)

2-A, Chelliamman Colony, Paper Mills Road,
Peravallur, Chennai-600 082
Tel : 044-29882681, 26712532/7550024782
Email : info.vatsalya@yahoo.in, Vatsalyamhss@gmail.com
For Online Application : Visit Our Website : www.vatsalyamhss.com

With the Best Compliments from :

Devotion is a dimension
that will allow you to sail
across even if you do not
know the way.

Sadhguru

isha
FOUNDATION

DINODIA WELFARE TRUST

4A, New Road, 1st Floor, Alipore
Kolkata-700 027

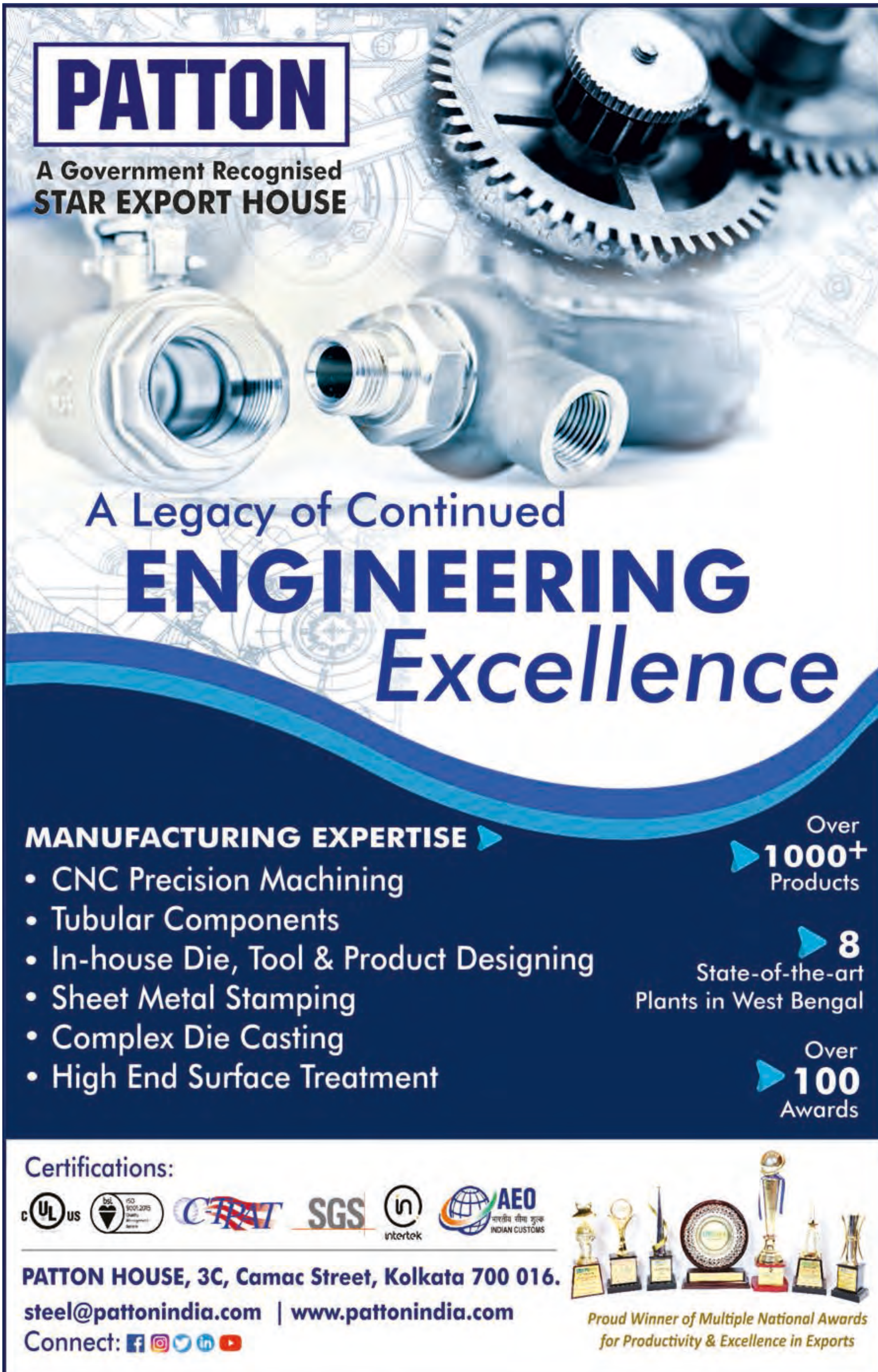
PATTON
A Government Recognised
STAR EXPORT HOUSE
A Legacy of Continued
ENGINEERING
Excellence
MANUFACTURING EXPERTISE
• CNC Precision Machining
• Tubular Components
• In-house Die, Tool & Product Designing
• Sheet Metal Stamping
• Complex Die Casting
• High End Surface Treatment
Over
1000+
Products
8
State-of-the-art
Plants in West Bengal
Over
100
Awards
Certifications:
SGS
intertek
AEO
INDIAN CUSTOMS
PATTON HOUSE, 3C, Camac Street, Kolkata 700 016.
steel@pattonindia.com | www.pattonindia.com
Connect:
Proud Winner of Multiple National Awards
for Productivity & Excellence in Exports

MIRONDA

MIRONDA GROUP OF COMPANIES
M/s Mironda Minmetals Pvt. Ltd.
M/s Reliant Commodities FZ-LLC
M/s Mercury International
M/s Malvika Renewable Energy Pvt. Ltd.
M/s R.S. Finance Pvt. Ltd.

MIRONDA MINMETALS PVT. LTD.
9/3, Hungerford Street
"LATIKA" Ground Floor
Kolkata – 700 017, WB, India
Tel: +91 33 2289 5400 / 5403
Email: info@mirondagroup.com

RELIANT COMMODITIES FZ-LLC
FDRK1931, Compass Building,
Al Shohada Road,
Al Hamra Industrial Zone-FZ,
Ras Al Khaimah, UAE
Email: info@reliantcommodities.com

धुबड़ी शाखा का गठन

पूर्वोत्तर की १००वीं शाखा

पुर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की १००वीं शाखा का गठन और शपथग्रहण समारोह आज धुबड़ी के अग्रेसन भवन के भव्य सभागार में सम्पन्न हुआ। समारोह में १०८ आजीवन सदस्यों ने भाग लिया, जिससे धुबड़ी शाखा ने आधिकारिक रूप से प्रांत के संगठनात्मक ढांचे में अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम में प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश जी काबरा, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र हरलालका, प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री विनोद जी लोहिया, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री मनोज काला, मंडलीय उपाध्यक्ष मंडल (G) के श्रीधरजी शर्मा तथा मंडल (G) की सहायक मंत्री श्रीमती स्मिता धिरासरिया को भी मंचासीन करवाया गया तथा विभिन्न मंडलों और समीपवर्ती शाखाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। शहर के गणमान्य नागरिक, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि जिसमे अग्रवाल समाज सभा, अग्रवाल महिला परिषद, युवा परिषद, तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, युवक परिषद, दिगंबर जैन समाज सभा के पदाधिकारी तथा विप्र समाज के पदाधिकारी, अणुव्रत सभा की सभा नेत्री, मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारी, मातृशक्ति और युवा वर्ग ने भी बड़ी संख्या में सहभागिता की।

प्रांतीय संगठन मंत्री श्री मनोज जी काला ने सभी सदस्यों को सामूहिक सदस्यता की शपथ दिलाई। इसके बाद प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश जी काबरा ने श्री अनोप चन्द सेठिया को शाखा अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई।

श्री राजेन्द्र हरलालका ने कार्यकारिणी के कुल २१ सदस्यों को शपथ दिलवाई।

सभा की अध्यक्षता श्रीमान जोहरी मल जी सुराणा ने की तथा कार्यक्रम का सफल संचालन धुबड़ी शाखा के संस्थापक मंत्री श्री दिनेश कुमार अग्रवाला (धनावत) ने किया।

रंगिया शाखा का शपथ ग्रहण समारोह

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की अधिकृत शाखा मारवाड़ी सम्मेलन रंगिया शाखा का शपथ विधि समारोह गत १२ नवंबर को स्थानीय राही रेस्टोरेंट, राइजमेल हॉल में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा, विशिष्ट अतिथि प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री विनोद कुमार लोहिया, मुख्य शपथ संचालन अधिकारी मंडल-ई के उपाध्यक्ष श्री सुशील कुमार गोयल और शपथ संचालन अधिकारी प्रांतीय संगठन मंत्री श्री मनोज काला मंचासीन हुए। प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा ने अपने संबोधन में सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान समय के अनुरूप शाखा की गतिविधियों की जानकारी दी। तत्पश्चात, रंगिया शाखा के नए अध्यक्ष श्री योगेश कुमार शर्मा को उनके पद की गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

शाखा अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल ने अपने कार्यकाल में किए गए कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी और नवनियुक्त समिति को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। रंगिया शाखा के सत्र २०२५-२७ के लिए अन्य पदाधिकारियों ने भी शपथ ग्रहण की, जिनमें उपाध्यक्ष श्री राजेश चौधरी, सचिव श्री जितेंद्र जाजोदिया, सह सचिव श्री कैलाश छित्रका, कोषाध्यक्ष श्री श्री पवन कुमार जाजोदिया और कार्यकारिणी सदस्य श्री प्रदीप कुमार जाजोदिया, श्री बासुदेव शर्मा, श्री दिनेश अग्रवाल शामिल हैं।

नवनियुक्त अध्यक्ष श्री योगेश कुमार शर्मा के अध्यक्षीय संबोधन और सचिव श्री जितेंद्र जाजोदिया के धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम का राष्ट्रीय गान के साथ समापन हुआ।

सत्र २०२५-२७ के लिए लोगो

सभी प्रादेशिक संगठन एवं शाखा संगठन से उपर्युक्त दिए गए लोगो का उपयोग सत्र २०२५-२७ के लिए करने का अनुरोध है। इसमें दूसरा लोगो इस सत्र का नारा '**म्हारी चाह – संगठित समाज**' का है। नए 'लोगो' में यह दर्शाया गया है कि समाज के विभिन्न घटक समन्वय एवं भाईचारा की भावना के साथ हाथ मिलाकर एकता का संदेश दे रहे हैं एवं समाज को श्रेष्ठता प्रदान कर रहे हैं।

श्री प्रकाश बैद सम्मानित

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंडल 'एच' के मंडलीय उपाध्यक्ष श्री प्रकाश बैद को समाज तथा व्यापारिक समुदायों के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए केंद्रीय मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा 'CAIT' सम्मेलन के दौरान सम्मानित किया गया।

नव-चयनित अध्यापक एवं सीए उत्तीर्ण छात्र का सम्मान

आमगुड़ी शाखा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने हाल ही में असम सरकार द्वारा चयनित स्थानीय युवा श्री गौरव जैन के घर जाकर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्हें एक असमिया गामोछा और प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर अभिनंदन ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम के दौरान शाखा के उपाध्यक्ष श्री सुरेश सिंघानिया ने उन्हें गामोछा से सम्मानित किया, वहीं उपाध्यक्ष श्री राजेन जालान ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। शाखा के कोषाध्यक्ष श्री पवन चांडक ने अपने वक्तव्य में गौरव जैन और उनके परिवार को हार्दिक बधाई दी। इस सम्मान समारोह में शाखा सचिव श्री सुरेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री सुरेश सिंघानिया सहित पूरी टीम की उपस्थिति रही। आमगुड़ी शाखा के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने हाल ही में घोषित सीए परीक्षा में उत्तीर्ण स्थानीय विद्यार्थी श्री देवेश अग्रवाल (पुत्र: रमेश अग्रवाल एवं रश्मि अग्रवाल) के घर जाकर उनका भी सम्मान किया। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष श्री दिनेश जैन ने देवेश अग्रवाल को गमछा पहनाकर सम्मानित किया तथा शाखा सचिव श्री सुरेश अग्रवाल ने प्रशस्ति पत्र सौंपा।

असम के माननीय राज्यपाल का सम्मान

मारवाड़ी सम्मेलन की धेमाजी शाखा के प्रतिनिधिमंडल ने असम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य से भेंट कर उनका अभिनन्दन किया। प्रतिनिधिमंडल में प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री दुर्गा दत्त राठी, धेमाजी के वरिष्ठ सदस्य श्री उमेश खंडेलिया, शाखा उपाध्यक्ष श्री पंकज अग्रवाल तथा शाखा सचिव श्री रोहित कुमार गाड़ोदिया सम्मिलित थे। भेंट के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने मानवीय राज्यपाल को धेमाजी के मारवाड़ी समाज की गतिविधियों एवं सामाजिक योगदान के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। साथ ही धेमाजी वासियों की कुछ प्रमुख स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु एक ज्ञापन भी सौंपा गया। इस अवसर पर क्षेत्र के सांसद श्री प्रदीप (प्रदान) बरुआ भी उपस्थित रहे।

निःशुल्क डायबिटिक डिटेक्शन शिविर

मारवाड़ी सम्मेलन सरूपथार महिला शाखा ने लायंस क्लब सरूपथार के साथ मिलकर शहर के दो अलग-अलग स्थानों पर निःशुल्क डायबिटिक डिटेक्शन शिविर आयोजित किया। शिविर का आयोजन गांधी मूर्ति चार आली तथा रेल ओवरब्रिज के पास किया गया। शिविर में सरूपथार सिविल अस्पताल की दो नर्सों की उपस्थिति में लगभग ३०० लोगों की मधुमेह की जांच की गई। कार्यक्रम के दौरान सरूपथार नगरपालिका की अध्यक्षा श्रीमती ऊषा भीलवारिया स्वयं उपस्थित रहीं और सरकारी नर्सों की उपलब्धता सुनिश्चित कराते हुए आयोजन को सहयोग प्रदान किया। इस महत्वपूर्ण जनसेवा कार्य में सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री कौशल गिनोरिया, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री दिनेश भीलवाड़िया, श्री पवन तिमानी, श्री राजेश बागड़िया, श्री नागरमल पारीक सहित महिला शाखा की सभी पदाधिकारी एवं सदस्याओं ने सक्रिय योगदान दिया। लायंस क्लब सरूपथार के सचिव श्री धरती कलिता भी शिविर में उपस्थित रहे और सेवा कार्यों में सहयोग दिया। स्थानीय लोगों ने महिला शाखा द्वारा आयोजित इस निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की खुलकर सराहना की और इसे समाजहित में अत्यंत उपयोगी पहल बताया।

विभिन्न महिला शाखाओं द्वारा बाल दिवस समारोह सम्पन्न

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने अपनी गोद ली हुई स्कूल चाबीपूल में बच्चों के साथ बाल दिवस मनाया। बच्चों को उपहार, फल, चॉकलेट तथा अन्य सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम के दौरान बच्चों के साथ बिताए पल अत्यंत आनंददायक रहे। इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र, अध्यक्ष श्री अजित शर्मा, सचिव श्री अनुज चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री संजय घिरिया, प्रधानाचार्या श्री हरीधन काकोती, उपाध्यक्ष श्री संजय खेतान तथा संयोजिका श्रीमती पिंकी घिरीया की महत्वपूर्ण उपस्थिति और सक्रिय भूमिका रही।

लखीमपुर मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा ने बाल दिवस के उपलक्ष्य में बाल आश्रम जाकर लगभग १०० बच्चों के साथ उत्सव मनाया। बच्चों को केक, बिस्किट, जूस, वॉटर बॉटल, कॉपी और पेन भेंट किए गए। इस अवसर पर अध्यक्षा सुषमा लखोटिया, सचिव राधिका तापड़िया, पूर्व अध्यक्षा उर्मिला दिनोदिया, कोषाध्यक्ष कमला हरलालका तथा कार्यकारी सदस्य बिंदु गिड़िया उपस्थित रहीं।

मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटा रोड महिला शाखा ने जैन मंदिर प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ बाल दिवस मनाया। बच्चों के लिए एक्सटेम्पोर स्पीच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें निर्णायक के रूप में प्रोफेसर जवाहरलाल नाहटा और महेश केड़िया ने भाग लिया। प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की गई तथा विजेताओं को मूमेंटो, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके साथ ही बच्चों के

लिए खाने-पीने की सामग्री और मनोरंजन का भी विशेष प्रबंध किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा जैन के नेतृत्व में संपन्न हुआ, जबकि संचालन सचिव श्रीमती कुसुम बंग ने किया। शाखा की निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमती स्मिता धीरासरिया, उपाध्यक्षा श्रीमती ईस्मिता शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीमती ऋतु चौधरी, सह सचिव श्रीमती कुसुम मोर, सलाहकार श्रीमती सरला देवी शर्मा तथा अन्य सदस्याओं की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल रहा।

मारवाड़ी सम्मेलन गुवाहाटी मेट्रो शाखा ने बाल दिवस के अवसर पर सभी बच्चों को स्नेहपूर्ण शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। शाखा अध्यक्ष श्री अमित कुमार कंसल ने प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाल प्रेम को स्मरण करते हुए कहा कि बच्चों की मुस्कान में ही भारत का भविष्य बसता है। उन्होंने सभी से यह संकल्प लेने का आह्वान किया कि हर बच्चे को प्रेम, संरक्षण और शिक्षा के अवसर मिलें, ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल और सुरक्षित हो।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

मारवाड़ी सम्मेलन की बंदरदेवा महिला शाखा के सौजन्य से पीएम श्री हारमुती दिक्रोंग उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक भव्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत छात्राओं द्वारा राजस्थानी और असमिया सांस्कृतिक झलकियों से हुई, जिसमें आकर्षक नृत्य और पारंपरिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर शाखा की उपाध्यक्ष श्रीमती शिल्पी सेठी, श्रीमती कमला देवी पचार, श्रीमती सोनू शर्मा, श्रीमती अरुणा पचार, मंडल-सी के प्रांतीय सचिव श्री ओम प्रकाश पचार उपस्थित थे। पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी सम्मेलन और मारवाड़ी महिला शाखा (बंदरदेवा) के समर्पित सहयोग ने इस आयोजन को अविस्मरणीय बना दिया।

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

प्रांतीय पदाधिकारियों द्वारा ढकुवाखाना व माजुली का भ्रमण

पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय उपाध्यक्ष मंडल पदाधिकारी श्री छत्तर सिंह गिरीया, मंडल सी से उपाध्यक्ष श्री माणीक लाल दम्माणी एवं सहायक मंत्री श्री ओमप्रकाश पचार ने २३ नवंबर को माजुली और ढकुवाखाना क्षेत्रों का दौरा किया ताकि इन क्षेत्रों में नई शाखाओं के गठन की रूपरेखा तैयार की जा सके।

तीनों पदाधिकारियों ने सबसे पहले माजुली के गरमुर और कमलाबाड़ी क्षेत्र का भ्रमण किया। श्री रामोतार शर्मा ने स्थानीय समाज बंधुओं को ११ बजे सभा में आमंत्रित किया। लगभग १२-१५ समाज बंधुओं की उपस्थिति में सकारात्मक बैठक हुई, जिसमें सर्वसम्मति से नई शाखा खोलने की सहमति जताई गई। इस प्रक्रिया को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए श्री रामोतार शर्मा को संयोजक नियुक्त किया गया। बैठक के पश्चात दोपहर का भोजन श्री शर्मा जी के निवास पर आयोजित किया गया। दोपहर ३ बजे माजुली से रवाना होकर मंडल पदाधिकारी लगभग सायं ४.३० बजे ढकुवाखाना पहुंचे। श्री प्रदीप पारिक के प्रतिष्ठान पर कुछ समाज बंधु उपस्थित थे। नई शाखा स्थापना पर विचार हुआ, लेकिन सदस्यों की संख्या कम हेने के कारण विस्तार से चर्चा आगे बढ़ाई गई। इसके पश्चात श्री प्रदीप जी के साथ श्री प्रकाश जैन के निवास पर पहुँचे, जहां समाज के अन्य सदस्यों के साथ सार्थक चर्चा की गई। वहाँ से आश्वासन मिला कि शीघ्र ही ढकुवाखाना शाखा की सभी औपचारिकताएँ पूरी कर नई शाखा का गठन किया जाएगा।

शिमलगुड़ी, शिवसागर और डिमौ शाखा का दौरा

मारवाड़ी सम्मेलन के मंडल-ए के प्रांतीय पदाधिकारियों ने शिमलगुड़ी, शिवसागर और डिमौ शाखाओं का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सामाजिक और संवेदनशील गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

यात्रा की शुरुआत दोपहर लगभग ३.३० बजे शिमलगुड़ी की आजीवन सदस्य पत्रकार श्री नटवर शर्मा के निवास से हुई। इस मौके पर शिमलगुड़ी शाखा के अध्यक्ष श्री पवन मस्करा और अन्य सदस्य, नाजिरा गलेकी शाखा के पदाधिकारी श्री घनश्याम शर्मा एवं श्री नंदकिशोर करनानी भी उपस्थित थे। मंडल-ए की टीम ने श्री नटवरजी शर्मा से भेंटकर स्वर्गीय गजानंद शर्मा के निधन पर संवेदना प्रकट की तथा शोक संवेदना पत्र दिया। इसके अतिरिक्त, शिमलगुड़ी और नाजिरा गलेकी शाखाओं ने भी श्री नट वर शर्मा को शोक संवेदना पत्र प्रदान किया। इसके पश्चात टीम ने शिवसागर शाखा का दौरा किया और उपाध्यक्ष श्री गोपालकृष्ण चांडक के निवास पर जाकर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीला देवी चांडक के असामयिक निधन पर संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर विचारों का आदान-प्रदान भी किया गया। शाम ६ बजे डिमौ शाखा के सचिव श्री शंकरलाल शर्मा से मुलाकात की गई। उनके माध्यम से शाखा के १५ आजीवन सदस्यों के सर्टिफिकेट्स वितरित किए गए। इस दौरान शाखा के अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और उपाध्यक्ष अनुपस्थित थे।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

सेवा कार्य

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की संबलपुर शाखा द्वारा अपने समाज की श्रीमती नीना अग्रवाल जो आर्थिक रूप से कमजोर महिला है उनको संबलपुर शाखा ने नया घर बनाकर उनका विधि विधान से गृह प्रवेश कराया। इस कार्य हेतु प्रांतीय अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल ने संबलपुर शाखा एवं उनके सदस्यों के सेवा कार्य हेतु सराहना की एवं उनको धन्यवाद दिया। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष श्री शीशराम अग्रवाल, प्रांतीय कार्य करणी सदस्य श्री श्याम सुंदर अग्रवाल, निर्माण चेयरमैन श्री अशोक जिंदल, शाखा उपाध्यक्ष श्रीमती सरिता अग्रवाल, श्री राजू जिंदल तथा अन्य उपस्थित थे। सम्मेलन ने सभी सहयोगकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा भविष्य में इसी तरह सबका सहयोग रहेगा इसकी आशा व्यक्त की।

प्रांतीय समाचार : मध्य प्रदेश

इंदौर शाखा का ऐतिहासिक कार्यक्रम 'युगान्तर'

मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की इंदौर शाखा द्वारा ७ दिसंबर २०२५ को आयेजित 'युगांतर' कार्यक्रम आयोजन किया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी का सानिध्य इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहा, जिसे सभी सदस्यों, संरक्षकों और उपस्थित गणमान्य महानुभावों की एकता ने मील का पत्थर बना दिया।

दिल्ली से पधारे मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी ने इंदौर की नई शाखा को प्रोत्साहित किया और संस्था के ध्येय वाक्य **"म्हारी चाह-संगठित समाज!"** पर जोर देते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज को देश के हर कोने में संगठित रहकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया, विशेषकर सामाजिक कुरीतियों जैसे प्री-वेडिंग शूट को रोकने और शादियों में शराब पर प्रतिबंध लगाने पर, तथा संगठन के मुख्य लक्ष्यों (रोज़गार, नारी शक्ति, राजनीतिक चेतना) को प्राप्त करने पर जोर दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में इंदौर शाखा द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख किया।

मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री शरद सरावगी जी ने अपना जोशीला उद्बोधन दिया। उन्होंने पारंपरिक मारवाड़ी भाषा एवं वेशभूषा को अपनाने पर ज़ोर दिया।

इंदौर के शाखाध्यक्ष श्री राजेश थरड़ ने अपने स्वागत भाषण में संस्था की गौरवशाली ९०वीं वर्षगांठ और संस्थापक अध्यक्ष राय बहादुर रामदेव जी चोखानी जी की १४७वीं जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री थरड़ ने राय बहादुर चोखानी जी के कुली प्रथा की समाप्ति, प्रवासी राजस्थानियों को वोटिंग राइट्स और नारी शिक्षा पर जोर देने जैसे क्रांतिकारी कार्यों को याद किया। उनके प्रेरणादायी इतिहास को श्रीमती रचना शुक्ला ने खूबसूरत शब्दों में सदन से सामने प्रस्तुत किया।

डॉ. माधवी पटेल, जो स्वयं एक प्रतिष्ठित ईएनटी सर्जन हैं, का "द्रौपदी का सखा श्री कृष्ण से संवाद" विषय पर सुंदर और प्रेरणादायक वक्तव्य कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा।

चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) की परीक्षा २०२५ में अखिल भारतीय टॉपर रहे श्री मुकुंद अगिवाल (धामनोद से) का विशेष सम्मान किया गया। यह उपलब्धि मारवाड़ी समाज के युवाओं के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा का स्रोत बनी।

कार्यक्रम की सफलता के लिए, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी ने विशिष्ट संरक्षक एवं संयोजक श्री अरुण चोखानी जी को विशेष रूप से सम्मानित किया। उन्हें संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय राय बहादुर रामदेव जी चौखानी जी की डाक टिकट को फ्रेम कराकर भेंट किया गया। यह सम्मान न केवल श्री अरुण चोखानी जी के अतुलनीय सहयोग के लिए था, बल्कि संस्थापक अध्यक्ष के गौरवशाली योगदान को याद करने का एक भावुक क्षण भी था।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका जी ने कार्यक्रम के सुंदर और सुव्यवस्थित संचालन के लिए श्रीमती राजेश्वरी थरड़ और श्रीमती रचना शुक्ला की मुक्त कंठ से सराहना की और उन्हें सम्मानित किया।

कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ संरक्षक गणों–श्री अरुण चौखानी जी, श्री सर्वप्रिय बंसल जी, श्री विष्णु बिंदल जी, और श्री मदन अग्रवाल (गरोठ जी) एवं श्री कृष्ण गोपाल सुरेखा जी, उद्योगपति टीकमचंद जी गर्ग, डॉ. के. जी. गोयल जी, डीएसपी पवन सिंघल, एसीपी सौम्या अग्रवाल, श्री बासु तिबारीवाल जी, श्री अजय अग्रवाल जी, एसपी मनोज केड़िया जी, श्री ओम प्रकाश जी पसारी, सीए कृष्णा गर्ग, श्री लोकेश मोदी, श्री सी.के. अग्रवाल, श्री प्रमोद जी अग्रवाल, श्री गौरव चौखानी, श्री चंद्रकांत चौखानी, श्रीमती रुचि चौखानी, और श्री सुशील बेरीवाल जी आदि उपस्थित रहे। आयोजन समिति के सदस्य, जिसमें संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय राय बहादुर रामदेव जी चौखानी जी के पौत्र और कार्यक्रम-संयोजक श्री अरुण जी चौखानी, श्री रंजन अग्रवाल, और श्री अतिन अग्रवाल शामिल थे।

कार्यक्रम के अंत में, कोषाध्यक्ष श्री अतिन अग्रवाल ने सभी उपस्थित गणमान्यों, संरक्षकों, संयोजक और वरिष्ठ सदस्यों के सहयोग के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

प्रांतीय समाचार : महाराष्ट्र

"आओ सहारा बने बे सहारो का"

जालना मारवाड़ी सम्मेलन एवं जालना मारवाड़ी युवा मंच की और से "आओ सहारा बने बे सहारो का" ठिठुरती ठंड में रास्ते किनारों एवं मंदिरों के पास रात की सर्द ठंड में सोए हुवे जरूरत मंद को ब्लैंकेट वितरण किया जा रहा है।

जिसकी शुरुआत मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से हर शनिवार को अलग अलग मंदिरों में फूड पैकेट दिए जाते उसके साथ आज ब्लैंकेट भी दिए गए। जिसकी शुरुआत गणपति मंदिर (नाथ बाबा गली), राम मंदिर (बड़ी सड़क), शनि मंदिर (बड़ी सड़क), पंचमुखी महादेव मंदिर, मम्मादेवी मंदिर, शनि मंदिर (जूना जालना), पर दिए गए।

इस सेवाकार्य में सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री श्री सुदेश करवा, मनीष बगडिया, पन्नालाल बगडिया, आनंद सकलेचा, उमेश पंचारिया, लक्ष्मीनारायण मानधना, महावीर जांगिड़, अध्यक्ष शरद काबरा, मधुसूदन की उपस्थिति रही।

प्रांतीय समाचार : पश्चिम बंग

वाटर कूलर मशीन का उदघाटन

मयनागुड़ी शाखा के १२ न. वार्ड के जागृति मोड़ में दिनांकः १३ नवम्बर २०२५ को में वाटर कूलर मशीन का अधिष्ठापन प्रांतीय अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल, स्थानीय काउंसलर तथा सिलीगुड़ी से विशिष्ट समाजसेवी श्री रामअवतार बरेलिया, प्रांतीय सचिव श्री पंकज भालोटिया, कोर्डिनेटर श्री मनीश बजाज द्वारा किया गया। इस मौके पर मयनागुड़ी शाखा के शाखाध्यक्ष श्री हनुमान कल्याणी शाखा सचिव श्री सुनील खोरिया, शाखा उपाध्यक्ष श्री बिनोद दुगड़वाल, शाखा कोषाध्यक्ष श्री कौशिक बिहानी एवं सर्वश्री राम खोरिया, पवन खोरिया, रवि प्रकाश खोरिया, दीपक अग्रवाल, जितेन्द्र हीरावत, कैलाश अग्रवाल सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

वाटर कूलर मशीन का अधिष्ठापन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की जलपाईगुड़ी शाखा में वाटर कूलर मशीन का जलपाईगुड़ी में दिनांकः १३ नवम्बर २०२५ को अधिष्ठापन किया गया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल एवं स्थानीय काउंसलर एवं अध्यक्ष प्रदीप सितानी द्वारा किया गया। प्रांतीय अध्यक्ष श्री अग्रवाल ने कहा कि यह पेयजल मशीन लगने से रोजाना हजारों लोगों शुद्ध ठंडे व गरम पेयजल का पान कर सकेंगे। प्रदेश महामंत्री श्री भालोटिया ने सम्मेलन के कार्यकलापों के बारे में सभी उपस्थित लोंगो को अवगत कराया। इस मौके पर प्रांतीय कोर्डिनेटर मनीश बजाज, जलपाईगुड़ी शाखा के अध्यक्ष प्रदीप सितानी, सचिव दिलीप साह सुशील सिंघी, मोहन जालान, शंकर मलाका, सुरेश मलाका, विनोद झंवर, सुनील खोरिया एवं अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

वाटर कूलर मशीन का उदघाटन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सिलीगुड़ी शाखा द्वारा दिनांकः १३ नवंबर २०२५ को सिलीगुड़ी स्थित बयॉज हाई स्कूल, जिसमें २८०० छात्रों की संख्या है एवं वृद्ध निवास स्थल (अपना घर) में इन दोनों स्थानों पर दो पानी की वाटर कूलर मशीन का अधिष्ठापन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रांतीय अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं सिलीगुड़ी नगर निगम के माननीय मेयर श्री गौतम देव जी के

द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रांतीय सचिव श्री पंकज कुमार भालोटिया, प्रांतीय कोऑर्डिनेटर श्री मनीष बजाज, सिलीगुड़ी शाखा से श्री रामअवतार बेरलिया, श्री अरुण कंदोई (सचिव – कार्यक्रम समन्वयक), श्री संजय शर्मा, श्री जयसिंह कुण्डलियाँ, श्री मनोज शर्मा गौड़, श्री विजय अग्रवाल, श्री बजरंग सेठिया, श्री अशोक अग्रवाल तथा अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे। सबकी उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमामयी और सफल बनाया।

प्रांतीय समाचार : आंध्र प्रदेश

कार्यकारिणी की बैठक

०५-१२-२०२५ को आंध्रप्रदेश प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन की शाखा श्रीकाकुलम मारवाडी सम्मेलन के अध्यक्ष बाबुलालजी पोद्दार की उपस्थित मे कार्यकारणी सदस्य एवं समाज के गणमान्य बन्धुओ के साथ होटल ग्राण्ड श्रीकाकुलम मे एक बैठक चाय नास्ते के साथ आयोजित की गई।

इस बैठक में मुख्य अतिथि प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल सम्मेलन उपस्थित हुए। श्रीमान राममोहन जी तेलुगु देशम पार्टी के लीडर ने मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश अग्रवाल का शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

ओमप्रकाश अग्रवाल ने अपने सम्बोधन मे संस्था का परिचय ओर संस्था के द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रम को विस्तार से आगवत कराते हुए उपस्थित बंधुगणो को सदस्य बनाने के लिए आवाहन किया। उपस्थित सदस्यों में १० नये सदस्य बनाये गये ओर उपस्थित बंधुगणो ने आश्वासन दिया कि अपने सभी मित्रो से मिलकर १५ से २० दिनों में ओर भी ज्यादा सदस्य बनाने की कोशिश करेंगे।

सभी सदस्यों ने अपने अपने विचार रखे ओर कहा कि हम सब मिलकर श्रीकाकुलम के आस पास के रहने वाले सभी वासियो की सेवा कार्यक्रम करते हुए इस संस्था को आगे बढ़ाने का काम करेंगे।

पूर्वोत्तर : वार्षिक रपट

सत्र २०२५-२७ के अंतर्गत ३१ अगस्त २०२५ से ४ दिसंबर २०२५ तक की अवधि में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन ने संगठन विस्तार, सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक संरक्षण और जनजागरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। यह रिपोर्ट पूरे सत्र की प्रमुख गतिविधियों का समग्र एवं संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है।

३१ अगस्त २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तृतीय कार्यकारिणी सभा सरुपथार में आयोजित।

३१ अगस्त २०२५ – सरुपथार में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तृतीय कार्यकारिणी सभा में प्रांत का आंठवाँ मंडल 'आई' का गठन किया गया।

६ सितम्बर २०२५ – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के २८वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन नई दिल्ली में पूर्वोत्तर प्रदेश का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व रहा। राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री पवन गोयनका जी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार संभाला। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन को "सर्वश्रेष्ठ प्रदेश" और गुवाहाटी शाखा को "सर्वश्रेष्ठ शाखा" का राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

११ सितम्बर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की कोर कमेटी की बैठक प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा के निवास स्थान गुवाहाटी में संपन्न हुई।

२३ सितम्बर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा स्व. जुबिन गर्ग को श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

२६ सितंबर २०२५ – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों में पूर्वोत्तर प्रांत से राष्ट्रीय संगठनमंत्री श्री बसंत जी सुराना के चयन पर उनका अभिनंदन किया गया।

२७ सितम्बर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल ने स्व. जुबिन गर्ग के परिवार से भेंट कर चित्र पर दीप प्रज्वलन व श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके परिजनों को शोक संदेश सुपुर्द किया।

११ अक्टूबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की सत्र (२०२५–२७) की विशेष प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक गुवाहाटी एवं कामरुप शाखा के आतिथ्य में संपन्न।

१२ अक्टूबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा दीपावली पर्व सादगीपूर्ण ढ़ग से मनाने की अपील की गई।

२० अक्टूबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय कार्यालय में दीपावली पूजन एवं मिलन समारोह संपन्न।

२२ अक्टूबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल ने राजभवन, गुवाहाटी में राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य से शिष्टाचार भेंट। साथ ही स्व. जुबिन गर्ग को **"भारत रत्न"** देने की आधिकारिक अनुशंसा प्रस्तुत की गई।

२७ अक्टूबर २०२५ – गुवाहाटी में छठ महापर्व के अवसर पर पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से शुभकामना संदेश प्रेषित की गई।

३० अक्टूबर २०२५ – पूर्वोत्तर में समाज के स्थाई कार्य की गणना।

१ नवंबर २०२५ – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार के निधन पर श्रद्धांजलि व शोक संदेश प्रेषित किया गया।

२ नवंबर २०२५ – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सत्र (२०२५-२७) की प्रथम अखिल भारतीय समिति की प्रथम बैठक कोलकाता में संपन्न हुई। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश जी काबरा ने प्रतिनिधित्व किया।

३ नवंबर २०२५ – गुवाहाटी शाखाओ के साथ पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की एक विशेष बैठक प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ गुवाहाटी की पांच शाखाओं – गुवाहाटी, गुवाहाटी मिहला, कामरुप शाखा, गुवाहाटी मेट्रो, गुवाहाटी ग्रेटर शाखा के शीर्ष पदाधिकारी उपस्थित रहे।

९ नवम्बर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सौजन्य से केल्विन गोल्ड थिएटर में स्व. जुबिन गर्ग की अंतिम फिल्म "रोई रोई बिनाले" का विशेष प्रदर्शन।

१७ नवम्बर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा जयपुर में (प्रवासी राजस्थानी दिवस) १० दिसम्बर २०२५ को आयोजित होने वाले आयोजन में सहभागिता हेतु सभी सदस्यों से रजिस्ट्रेशन पूरा करने का अनुरोध।

२६ नवम्बर २०२५ – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के सहयोग से सीताराम रुँगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण का शुभारंभ।

४ दिसंबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की मंडल – सी की शाखाओं के साथ वर्चुअल बैठक संपन्न। शाखाओं में चुनाव एवं शपथ ग्रहण समारोह

१० सितंबर २०२५ – बिलासीपाड़ा शाखा की नई कार्यकारिणी का गठन एवं महिला शाखा का गठन।

३० अक्टूबर – गोलाघाट शाखा की नई कार्यकारिणी का गठन एवं पदभार हस्तांतरण।

१४ नवंबर २०२५ – रंगिया शाखा का शपथ ग्रहण समारोह।

४ दिसंबर २०२५ – धुबड़ी शाखा में नई कार्यकारिणी का गठन।

शाखा विस्तार हेतु दौरे

८ सिंतबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की नारी चेतना की संयोजिका एवं महिला शाखा गुवाहाटी की अध्यक्ष श्रीमती संतोष शर्मा एवं उनकी टीम द्वारा सीलापथार शाखा का दौरा।

१० सिंतबर २०२५ – नुमलीगढ़ शाखा को स्थापना प्रमाण पत्र का वितरण।

२० सिंतबर २०२५ – प्रांतीय उपाध्यक्ष का गोसाईगांव एवं बंगाईगांव शाखा का दौरा।

१८ अक्टूबर २०२५ – प्रांतीय उपाध्यक्ष का गोसाईगांव शाखा का भ्रमण।

२९ अक्टूबर २०२५ – प्रांतीय पदाधिकारियों का एक दिवसीय लोवर असाम भ्रमण।

१३ नवंबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की मंडल – ए प्रांतीय पदाधिकारियों का शिमलागुड़ी, शिवसागर एवं डिमो शाखाओं का दौरा।

२३ नवंबर २०२५ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की मंडल-सी द्वारा माजुली तथा ढकुआखाना क्षेत्रों का दौरा।

सांगठनिक जानकारी

वर्तमान सत्र २०२५-२७ के शुरुआत में प्रांत में कुल ८३ शाखाएं थी, जिसमें दो शाखाएं निष्क्रिय है। आजीवन सदस्य संख्या ६२५२ थी। प्रांतीय अध्यक्ष ने "हर घर सम्मेलन - घर घर सम्मेलन" नारे के तहत इस सत्र में शाखाओं की संख्या १०८ तथा आजीवन सदस्य की संख्या १० हजार का लक्ष्य निर्धारित किया है।

जिसमे से वर्तमान संख्या में १ अप्रैल २०२५ से ३० नवंबर २०२५ तक १८ नवीन शाखाओं का गठन तथा आजीवन सदस्य के रुप में ११८९ सदस्य की बढ़ोत्तरी हुई।

नवीन शाखा गठन :

१. कोठियातुली शाखा २. मंगलदै शाखा ३. गोरेश्वर शाखा ४. जोनाई शाखा ५. दापरिजो शाखा ६. होजाई महिला शाखा ७. कोकराझार शाखा ८. गुवाहाटी मेट्रो शाखा ९. बरपथार शाखा १०. डिफु शाखा ११. बोगीजान चोकीहोला शाखा १२. नुमलीगढ़ शाखा १३. सिलोनीजान शांतिपूर शाखा १४. डिमो शाखा १५. सारुपथार महिला शाखा १६. गोलकगंज शाखा १७. धुबड़ी शाखा १८. नौजान शाखा। कुल - शाखा : १०१, आजीवन सदस्य : ७४४१।

बालिका छात्रावास निर्माण योजना

इस हेतु जमीन क्रय कर सम्मेलन के नाम पंजीकृत की जा चुकी है। इस भूमि पर ग्राउंड के साथ दो तल्लो की छत ढलाई की हुई है। निर्माण हेतु नक्सा पारित करने हेतु शहर विकास प्राधिकरण के पास गये हुए है। बोरिंग (पानी) एवं बिजली मिटर की व्यवस्था हो गयी है। निर्माण अगले महीने में कार्य आरंभ होने की आशा है। २०२६ में बालिका छात्रावास के लोकार्पण का लक्ष्य तय है।

सामाज सेवा, कल्याण, सम्मान तथा जागरुकता कार्यक्रमः

०१ सितंबर २०२५ – मोरानहाट शाखा द्वारा अभयपुर नामघर में सेवा एवं भेंट।

०५ सितंबर २०२५ – शिक्षक दिवस समारोह (मारवाड़ी सम्मेलन के विभिन्न शाखाओं का दौरा)

०६ सितंबर २०२५ – गुवाहाटी महिला शाखा का मातृ सम्मान समारोह। गणेश पूजा में सहभागिता, नेत्रदान जागरुकता हेतु गुवाहाटी व कामरुप शाखा सम्मानित।

०७ सितंबर २०२५ – शिवसागर शाखा द्वारा स्वास्थ्य जाँच व कैंसर रोधी कार्यक्रम

८ सितंबर २०२५ – डॉ. भूपेन हज़ारिका जन्म शतवार्षिकी कार्यक्रम। धेकियाखोवा नामघर में सेवा गतिविधि, डॉ. भूपेन हज़ारिका जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में मोरानहाट शाखा ने जलाए १०० दीप, महिला शाखा ने डॉ. भूपेन हज़ारिका जन्म शतवार्षिकी पर अर्पित किए श्रद्धा सुमन, श्री विकास अग्रवाल का मानवीय सहयोग। स्व. श्रीमती शीतल कुचेरिया का मरणोपरांत नेत्रदान। प्राकृतिक चिकित्सा शिविर। आलांग शाखा द्वारा सम्मान समारोह। निशुल्क स्वास्थ्य परिक्षण शिविर।

९ सितंबर २०२५ – दीमापुर शाखा सचिव की राष्ट्रपति से मुलाकात।

१० सितंबर २०२५ – मोरानहाट शाखा की रैली में सहभागिता।

इसके अलावा गुवाहाटी में छः दिवसीय नेचुरल थेरेपी कैंप का समापन, गीतौरे ए जुगौर यात्रा नामक सांस्कृतिक संध्या का भव्य आयोजन, फकीराग्राम में अष्ट दुर्गा कार्यक्रम, गुवाहाटी में स्व. शारदा देवी नोहल का नेत्रदान, फकीराग्राम महिला शाखा द्वारा गांधी जंयती समारोह, गुवाहाटी में दीवाली मेले संग प्रदर्शनी का आयोजन, गुवाहाटी में भरलू बचाओं अभियान, तिनसुकिया में फिजियोथेरेपी शिविर, बरपेटा रोड शाखा द्वारा असाइनमेंट कार्यक्रम, सीलोनीजान शाखा द्वारा निशुल्क नेत्र परिक्षण शिविर, गुवाहाटी मेट्रो शाखा द्वारा हैप्पीनेस कीट वितरण, डिब्रूगढ़ शाखा द्वारा अमृत जलधारा (पयाऊ) लोकार्पण, नाउजान शाखा द्वारा योगाभ्यास कार्यक्रम एवं शरबत सेवा, कोकराझाड़ शाखा, डिब्रूगढ़ शाखा, गुवाहाटी मेट्रो शाखा, जोरहाट शाखा, शिलांग शाखा एवं गुवाहाटी शाखा द्वारा दीपावली मिलन समारोह, बरपेटा रोड शाखा द्वारा दीपावली पर विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित, गुवाहाटी शाखा द्वारा मयंक अग्रवाल सम्मान समारोह, गौशाला में शीतल पेयजल मशीन की स्थापना, लखीमपुर शाखा द्वारा दीपावली पर रामा-श्यामा कार्यक्रम, गुवाहाटी महिला शाखा की कार्यकारिणी की बैठक एवं दीपावली मिलन समारोह, छापरमुख शाखा द्वारा आपातकालीन सेवा, बरपेटा रोड शाखा द्वारा श्लोक वाचन प्रतियोगिता, गुवाहाटी में नेत्रदान महादान कार्यक्रम और भी अनगिनत कार्यक्रमो का आयोजन प्रांत एवं शाखाओं द्वारा किया गया।

आंध्र प्रदेश : वार्षिक रपट

२५-०८-२०२४ को "वास्तु से सफलता की ओर" वास्तु की जानकारी के लिए एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अपने राष्ट्रीय महासचिव श्रीमान कैलाश पति तोदी के मुख्य अतिथि के तत्वावधान में किया गया।

अगस्त २०२४ में आंध्र प्रदेश में आई भयंकर बाढ़ में पीड़ितों की सेवा कार्यक्रम किया गया और आंध्र प्रदेश मुख्यमंत्री जी को बाढ़ राहत कोष में १०००००/- की राशी दिनांक ९-९-२०२४ को चेक के द्वारा सहयोग किया गया।

२५-१०-२०२४ को राजस्थान इंग्लिश मिडियम पाठशाला में छात्रों के लिए एक कंप्यूटर एवं एक प्रिंटर दिया गया।

२८-०४-२०२५ को गर्मियों के दिनों में आम जनता के लिए एक घंटा छाछ वितरण एवं सुबह से सायंकाल तक सादे एवं ढंडे पानी की प्याऊ, का वितरण। यह कार्यक्रम २८-०४-२०२५ को विजयवाड़ा से चालू होकर करीब २ महीने तक चलाया गया।

२०-०७-२०२५ को विजयवाड़ा में मेधावी छात्र एवं छात्रों को सहयोग राशि कार्यक्रम जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं उन ३० बच्चो को सहयोग राशि का वितरण किया गया।

२७-०७-२०२५ को भगवान शिवजी के पावन श्रवण मास में "भव्य कावड़ यात्रा" का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जो कृष्णा नदी के वीआईपी घाट से पवित्र जल लेकर गुरुनानक कॉलोनी शिव मंदिर में चढ़ाया गया, यह पैदल यात्रा करीब ८ किलोमीटर की रही।

इन सभी के अलावा भी अपने सम्मेलन के तत्वावधान में छोटे मोटे कार्यक्रम भी आयोजित किये गए।

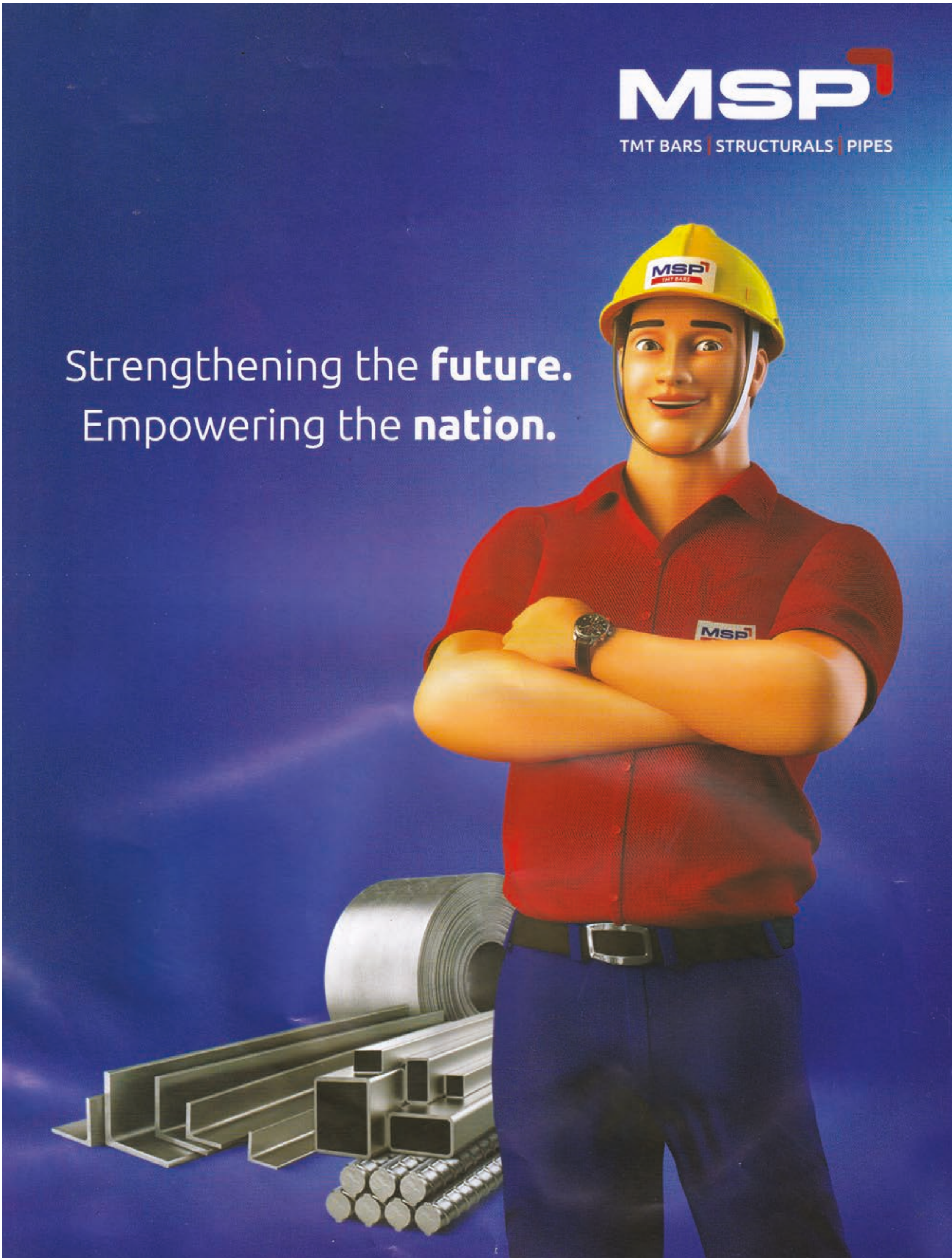
MSP
TMT BARS | STRUCTURALS | PIPES
Strengthening the future.
Empowering the nation.

Manaksia Aluminium Company Limited

WE RECYCLE

- ➢ **LARGEST EXPORTER OF ALUMINIUM SHEETS AND COILS TO THE USA**
- ➢ **SECOND LARGEST EXPORTER OF ALUMINIUM SHEETS AND COILS**

MANUFACTURERS OF

- **Aluminium Coils**
- **Aluminium Plain Sheets**
- **Aluminium Roofing Sheets**
- **Aluminium Pre- Painted/Colour Coated Coils**
- **Aluminium Flooring Sheets(5 Bar & Diamond Pattern)**

Pre-Painted Aluminium Coils

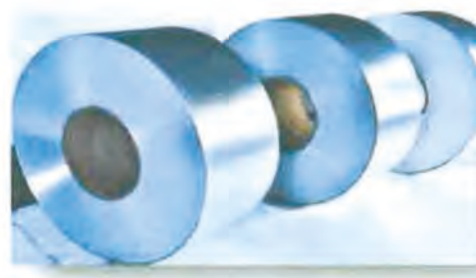

Aluminium Plain Coils

Roofing Sheets

5 Bar Flooring Sheet

Registered Office:
8/1, Lal Bazaar Street, Bikaner Building, Kolkata - 700 001
Phone: 033 – 2243 5053 / 5054 / 6055
E-mail: info@malcoindia.co.in
www.manaksiaaluminium.com

भगवान का घर

कल दोपहर में, मैं बैंक में गया था। वहाँ एक बुजुर्ग भी अपने काम से वहां पर आये हुए थे। वहाँ वह कुछ काम की बात ढूंढ रहे थे।

मुझे लगा शायद उन्हें पेन चाहिये। इसलिये मैने उनसे पुछा तो, वह बोले- "बिमारी के कारण मेरे हाथ कांप रहे हैं और मुझे पैसे निकालने की स्लीप भरनी हैं। इसलिये मैं देख रहा हूँ कि मुझे किसी की मदद मिल जाये तो अच्छा रहता।" मैं बोला- "आपको कोई हर्ज न हो तो क्या मैं आपकी स्लीप भर दूँ?"

परेशानी दूर होती देखकर उन्होंने मुझे स्लीप भरने की अनुमति दे दी। मैंने उनसे पुछकर स्लीप भर दी। रकम निकाल कर उन्होंने मुझसे पैसे गिनने को कहा। मैंने पैसे गिनकर उन्हें वापस कर दिये।

मेरा व उन का काम लगभग साथ ही समाप्त हुआ तो, हम दोनों एक साथ ही बाहर आ गये तो, वह बोले– "सॉरी तुम्हें थोड़ा कष्ट तो होगा। परन्तु मुझे कोइ रिक्शा करवा दो। भरी दोपहरिया में रिक्शा मिलना कष्टकारी होता हैं।"

मैं बोला "मुझे भी उसी तरफ जाना हैं। मैं आप को अपनी कार से आप को आप के घर छोड़ दूँ तो चलेगा क्या?" वह तैयार हो गये। थोड़ी ही समय के बाद हम उनके घर पहुंच गये। उनका घर क्या आलीशान बंगला था घर में उनकी वृद्ध पत्नी थी।

वह मुझे साथ देख कर, थोड़ी डर गई कि इनको कुछ हो तो नहीं गया जिन को छोड़ने के लिए एक अपरिचित व्यक्ति घर तक आया हैं। फिर उन्होंने पत्नी के चेहरे पर आये भावों को पढ़ कर कहा कि "चिंता की कोई बात नहीं। यह मुझे छोड़ने आये हैं।"

फिर हमारी थोड़ी बातचीत हुई। उन बातचीत में वह बोले "इस भगवान के घर में हम दोनों पति-पत्नी ही रहते हैं। हमारे बच्चे विदेश में रहते हैं।"

मैंने जब उन्हें भगवान के घर के बारे में पुछा तो कहने लगे "हमारे घर में भगवान का घर कहने की पुरानी परंपरा हैं। इसके पीछे की भावना यह है कि यह घर भगवान का हैं और हम तो उनके घर में रहते हैं।

लोग कहते हैं कि घर हमारा और भगवान हमारे घर में रहते हैं।"

मैंने विचार किया कि, दोनों कथनों में कितना अंतर हैं। फिर वह आगे बोले...

"भगवान का घर बोला तो इस भगवान के घर में कोई नकारात्मक कार्य हम से नहीं होते। हम हमेशा सद विचारों से ओत-प्रोत रहते हैं।"

बाद में मजाकिया लहजे में बोले...

"लोग मृत्यु उपरान्त भगवान के घर जाते हैं परन्तु हम तो जीते जी ही भगवान के घर का आनंद ले रहे हैं।"

यह वाक्य ऐसा लगा कि, जैसे भगवान ने मुझे कोई प्रसाद ही दे दिया हैं। उन बुजुर्ग को घर छोड़ने की बुद्धि शायद भगवान ने ही मुझे दी होगी।

घर भगवान का और हम उनके घर में रहते हैं- यह वाक्य बहुत देर तक मेरे दिमाग में घुमता रहा। सही में कितने अलग विचार थे यह। जैसे विचार वैसा आचार। इसलिये वह उत्तम होगा ही इसमें कोई शंका नहीं।

अगर मेरा/हमारा घर को भगवान का घर कहना/अपनाया तो आप इसके अन्दर छिपे अर्थ/स्वरूप को समझे।।

संस्कार बहुत महंगे होते हैं

पत्नी ने पूछा "एक बात बताओ? मैं बोला क्या? पत्नी बोली" मान लो कभी ऐसा वक्त आ जाए। जब आपको मेरे और आपकी माँ में से एक को चुनना पड़े तो बताओ किसको चुनोगे? 'मैंने तुरंत उत्तर दिया- माँ को चुनुँगा।' पत्नी उदास होकर बोली - १५ साल की वफादारी का ये इनाम? मैंने कहा - क्या तुम्हें मेरे प्रेम पर शक है? पत्नी बोली - मगर मैं तुम्हारे लिए प्रथम तो नहीं हूँ न? माँ के बाद मेरी जगह है? मैंने कहा - आज अगर मैं माँ को चुनुंगा तो कल तुम्हारा बेटा तुम्हें चुनेगा। मैं नहीं चाहता तुम्हारा बेटा तुम्हे छोड़ कर बहु के बगल में खड़ा हो जाए। पत्नी बोली - बेटे को संस्कार देने के लि पत्नी की उपेक्षा? मैंने कहा संस्कार के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता है। संस्कार सस्ते कहाँ है? संस्कार बलिदान मांगते हैं। वो संस्कार ही थे जो श्रीराम ने पिता का वचन पूरा करने के लिए राज्य त्याग दिया। वनवास चुना।

अहंकार का पश्चाताप

एक नगर में एक जुलाहा रहता था। वह स्वाभाव से अत्यंत शांत, नम्र तथा वफादार था। उसे क्रोध तो कभी आता ही नहीं था।

एक बार कुछ लड़कों को शरारत सूझी। वे सब उस जुलाहे के पास यह सोचकर पहुँचे कि देखें इसे गुस्सा कैसे नहीं आता ?

उन में एक लड़का धनवान माता-पिता का पुत्र था। वहाँ पहुँचकर वह बोला यह साड़ी कितने की दोगे ?

जुलाहे ने कहा - दस रुपये की।

तब लड़के ने उसे चिढ़ाने के उद्देश्य से साड़ी के दो टुकड़े कर दिये और एक टुकड़ा हाथ में लेकर बोला - मुझे पूरी साड़ी नहीं चाहिए, आधी चाहिए। इसका क्या दाम लोगे?

जुलाहे ने बड़ी शान्ति से कहा पाँच रुपये।

लडके ने उस टुकड़े के भी दो भाग किये और दाम पूछा? जुलाहा अब भी शांत था। उसने बताया - ढाई रुपये। लड़का इसी प्रकार साड़ी के टुकड़े करता गया।

अंत में बोला - अब मुझे यह साड़ी नहीं चाहिए। यह टुकड़े मेरे किस काम के ?

जुलाहे ने शांत भाव से कहा - बेटे! अब यह टुकड़े तुम्हारे ही क्या, किसी के भी काम के नहीं रहे।

अब लड़के को शर्म आई और कहने लगा- मैंने आपका नुकसान किया है। अंतः मैं आपकी साड़ी का दाम दे देता हूँ।

संत जुलाहे ने कहा कि जब आपने साड़ी ली ही नहीं तब मैं आपसे पैसे कैसे ले सकता हूँ ?

लड़के का अभिमान जागा और वह कहने लगा कि, मैं बहुत अमीर आदमी हूँ। तुम गरीब हो। मैं रुपये दे दूँगा तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर तुम यह घाटा कैसे सहोगे? और नुकसान मैंने किया है तो घाटा भी मुझे ही पूरा करना चाहिए।

संत जुलाहे मुस्कुराते हुए कहने लगे - तुम यह घाटा पूरा नहीं कर सकते। सोचो, किसान का कितना श्रम लगा तब कपास पैदा हुई। फिर मेरी स्त्री ने अपनी मेहनत से उस कपास को बीना और सूत काता। फिर मैंने उसे रंगा और बुना। इतनी मेहनत तभी सफल हो जब इसे कोई पहनता, इससे लाभ उठाता, इसका उपयोग करता। पर तुमने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। रुपये से यह घाटा कैसे पूरा होगा? जुलाहे की आवाज़ में आक्रोश के स्थान पर अत्यंत दया और सौम्यता थी।

लड़का शर्म से पानी-पानी हो गया। उसकी आँखे भर आई और वह संत जुलाहे के पैरों में गिर गया।

जुलाहे ने बड़े प्यार से उसे उठाकर उसकी पीठ पर हाथ फिराते हुए कहा -

बेटा, यदि मैं तुम्हारे रुपये ले लेता तो है उस में मेरा काम चल जाता। पर तुम्हारी ज़िन्दगी का वही हाल होता जो उस साड़ी का हुआ। कोई भी उससे लाभ नहीं होता। साड़ी एक गई, मैं दूसरी बना दूँगा। पर तुम्हारी ज़िन्दगी एक बार अहंकार में नष्ट हो गई तो दूसरी कहाँ से लाओगे तुम? तुम्हारा पश्चाताप ही मेरे लिए बहुत कीमती है।

संत की उँची सोच-समझ ने लड़के का जीवन बदल दिया।

ये कोई और नहीं, ये थे सन्त कबीर ।।

देवता शराब नहीं पीते थे

सोमरस सोम के पौधे से प्राप्त रस था ये पौधा आज लगभग विलुप्त है।

शराब पीने को सुरापान कहा जाता था, सुरापान असुर करते थे, ऋग्वेद में सुरापान को घृणा के तौर पर देखा गया है। टीवी सीरियल्स ने भगवान इंद्र को अप्सराओं से घिरा दिखाया जाता है और वो सब सोमरस पीते रहते हैं, जिसे सामान्य जनता शराब समझती है। सोमरस, सोम नाम की जड़ीबूटी थी जिसमें दूध और दही मिलाकर ग्रहण किया जाता था, इससे व्यक्ति बलशाली और बुद्धिमान बनता था।

जब यज्ञ होते थे तो सबसे पहले अग्नि को आहुति सोमरस से दी जाती थी।

ऋग्वेद में सोमरस पान के लिए अग्नि और इंद्र का सैकड़ों बार आह्वान किया गया है।

आप जिस इंद्र देवता को सोचकर अपने मन में टीवी सीरियल की छवि बनाते हैं वास्तव में वैसा कुछ नहीं था।

जब वेदों की रचना की गयी तो अग्नि देवता, इंद्र देवता, रुद्र देवता आदि इन्हीं सब का महत्व लिखा गया है।

मन में वहम मत पालिये.......

कहीं पढ़ रहा था, किसी ने पोस्ट किया था कि देवता भी सोमरस पीते थे तो हम भी पीयेंगे तो अचानक मन में आया तो लिखा दिया।

आज का चरणामृत/पंचामृत सोमरस की तर्ज पर ही बनाया जाता है बस प्रकृति ने सोम जड़ीबूटी हमसे छीन ली।

तो एक बात दिमाग में बैठा लीजिये, सोमरस नशा करने की चीज नहीं थी।

आपको सोमरस का गलत अर्थ पता है अगर आप उसे शराब समझते हैं।

शराब को शराब कहिए सोमरस नहीं।

सोमरस का अपमान मत करिए, सोमरस उस समय का चरणामृत/पंचामृत था।

(संकलित)

!! तीन मूर्तियाँ !!

एक राजा था जिसे शिल्प कला अत्यंत प्रिय थी। वह मूर्तियों की खोज में देश-प्रदेश जाया करता था। इस प्रकार राजा ने कई मूर्तियाँ अपने राज महल में लाकर रखी हुई थी और स्वयं उनकी देख रेख करवाते। सभी मूर्तियों में उन्हें तीन मूर्तियाँ जान से भी ज्यादा प्यारी थी। सभी को पता था कि राजा को उनसे अत्यंत लगाव है।

एक दिन जब एक सेवक इन मूर्तियों की सफाई कर रहा था तब गलती से उसके हाथों से उनमें से एक मूर्ति टूट गई। जब राजा को यह बात पता चली तो उन्हें बहुत क्रोध आया और उन्होंने उस सेवक को तुरन्त मृत्युदंड दे दिया। सजा सुनने के बाद सेवक ने तुरन्त अन्य दो मूर्तियों को भी तोड़ दिया। यह देख कर सभी को आश्चर्य हुआ। राजा ने उस सेवक से इसका कारण पूछा, तब उस सेवक ने कहा - "महाराज! क्षमा कीजियेगा, यह मूर्तियाँ मिट्टी की बनी हैं, अत्यंत नाजुक हैं। अमरता का वरदान लेकर तो आई नहीं हैं। आज नहीं तो कल टूट ही जाती अगर मेरे जैसे किसी प्राणी से टूट जाती तो उसे अकारण ही मृत्युदंड का भागी बनना पड़ता। मुझे तो मृत्युदंड मिल ही चुका हैं इसलिए मैंने ही अन्य दो मूर्तियों को तोड़कर उन दो व्यक्तियों की जान बचा ली।

यह सुनकर राजा की आँखें खुली की खुली रह गई उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने सेवक को सजा से मुक्त कर दिया। सेवक ने उन्हें साँसों का मूल्य सिखाया, साथ ही सिखाया की न्यायाधीश के आसन पर बैठकर अपने निजी प्रेम के चलते छोटे से अपराध के लिए मृत्युदंड देना उस आसन का अपमान हैं। एक उच्च आसन पर बैठकर हमेशा उसका आदर करना चाहिये। राजा हो या कोई भी अगर उसे न्याय करने के लिए चुना गया हैं तो उसे न्याय के महत्व को समझना चाहिये। मूर्ति से राजा को प्रेम था लेकिन उसके लिए सेवक को मृत्युदंड देना न्याय के विरूद्ध था। न्याय की कुर्सी पर बैठकर किसी को भी अपनी भावनाओं से दूर हट कर फैसला देना चाहिये।

राजा को समझ आ गया कि मुझसे कई गुना अच्छा तो वो यह सेवक था जिसने मृत्यु के इतना समीप होते हुए भी परहित का सोचा! राजा ने सेवक से पूछा कि अकारण मृत्यु को सामने पाकर भी तुमने ईश्वर को नही कोसा, तुम निडर रहे, इस संयम, समस्वस्भाव तथा दूरदृष्टि के गुणों के वहन की युक्ति क्या है? सेवक ने बताया कि आपके यहाँ काम करने से पहले मैं एक अमीर सेठ के यहां नौकर था। मेरा सेठ मुझसे तो बहुत खुश था लेकिन जब भी कोई कटु अनुभव होता तो वह ईश्वर को बहुत गालियाँ देता था।

एक दिन सेठ ककड़ी खा रहा था । संयोग से वह ककड़ी कड़वी थी। सेठ ने वह ककड़ी मुझे दे दी। मैंने उसे बड़े चाव से खाया जैसे वह बहुत स्वादिष्ट हो। सेठ ने पूछा – "ककड़ी तो बहुत कड़वी थी। भला तुम ऐसे कैसे खा गये ?" तो मैने कहा – "सेठ जी आप मेरे मालिक है। रोज ही स्वादिष्ट भोजन देते है। अगर एक दिन कुछ कड़वा भी दे दिए तो उसे स्वीकार करने में क्या हर्ज है?" राजा जी इसी प्रकार अगर ईश्वर ने इतनी सुख–सम्पदाएँ दी है, और कभी कोई कटु अनुदान दे भी दे तो उसकी सद्भावना पर संदेह करना ठीक नहीं। जन्म, जीवनयापन तथा मृत्यु सब उसी की देन है।

शिक्षाः- असल में यदि हम समझ सके तो जीवन में जो कुछ भी होता है, सब ईश्वर की दया ही है। ईश्वर जो करता है अच्छे के लिए ही करता है! यदि सुख दुःख को ईश्वर का प्रसाद समझकर संयम से ग्रहण करें तथा हर समय परहित का चिंतन करें।

सदैव प्रसन्न रहिये - जो प्राप्त है, पर्याप्त है।
जिसका मन मस्त है - उसके पास समस्त है।।

ज्ञान की प्यास

एक गुरु के दो शिष्य थे। एक पढ़ाई में बहुत तेज और विद्वान था और दूसरा फिसड्डी। पहले शिष्य की हर जगह प्रसंशा और सम्मान होता था।

जबकि दूसरे शिष्य की लोग उपेक्षा करते थे। एक दिन रोष में दूसरा शिष्य गुरु जी के जाकर बोला, "गुरुजी! मैं उससे पहले से आपके पास विद्याध्ययन कर रहा हूँ। फिर भी आपने उसे मुझसे अधिक शिक्षा दी।"

गुरुजी थोड़ी देर मौन रहने के बाद बोले, "पहले तुम एक कहानी सुनो।

एक यात्री कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे प्यास लगी। थोड़ी दूर पर उसे एक कुआं मिला। कुएं पर बाल्टी तो थी लेकिन रस्सी नही थी। इसलिए वह आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद एक दूसरा यात्री उस कुएं के पास आया। कुएं पर रस्सी न देखकर उसने इधर-उधर देखा। पास में ही बड़ी बड़ी घास उगी थी। उसने घास उखाड़कर रस्सी बटना प्रारम्भ किया।

थोड़ी देर में एक लंबी रस्सी तैयार हो गयी। जिसकी सहायता से उसने कुएं से पानी निकाला और अपनी प्यास बुझा ली।"

गुरु जी ने उस शिष्य से पूछा, "अब तुम मुझे यह बताओ कि प्यास किस यात्री को ज्यादा लगी थी?" शिष्य ने तुरंत उत्तर दिया कि दूसरे यात्री को।

गुरुजी फिर बोले, "प्यास दूसरे यात्री को ज्यादा लगी थी। यह हम इसलिए कह सकते हैं क्योंकि उसने प्यास बुझाने के लिए परिश्रम किया।

उसी प्रकार तुम्हारे सहपाठी में ज्ञान की प्यास है। जिसे बुझाने लिए वह कठिन परिश्रम करता है। जबकि तुम ऐसा नहीं करते।" शिष्य को अपने प्रश्न का उत्तर मिल चुका था। वह भी कठिन परिश्रम में जुट गया।

धर्म की रक्षा के लिए कठोर बनना होगा - श्रीकृष्ण

भीष्म चुप रहे, कुछ क्षण बाद बोले- "पुत्र युधिष्ठिर का राज्याभिषेक करा चुके केशव?"

"उनका ध्यान रखना, परिवार के बुजुर्गों से रिक्त हो चुके राजप्रासाद में उन्हें अब सबसे अधिक तुम्हारी ही आवश्यकता है!"

कृष्ण चुप रहे! भीष्म ने पुनः कहा - "कुछ पूछूँ केशव? बड़े अच्छे समय से आये हो, सम्भवतः धरा छोड़ने के पूर्व मेरे अनेक भ्रम समाप्त हो जाँय"!!

कृष्ण बोले - "कहिए न पितामह!" "एक बात बताओ प्रभु! तुम तो ईश्वर हो न?"

कृष्ण ने बीच में ही टोका, "नहीं पितामह! मैं ईश्वर नहीं, मैं तो आपका पौत्र हूँ पितामह! ईश्वर नहीं!"

भीष्म उस घोर पीड़ा में भी ठ्हाके लगा हँस पड़े! बोले- "अपने जीवन का स्वयं कभी आकलन नहीं कर पाया कृष्ण, सो नहीं जानता कि अच्छा रहा या बुरा, पर अब तो इस धरा से जा रहा हूँ कन्हैया, अब तो ठगना छोड़ दे रे!!

"कृष्ण जाने क्यों भीष्म के पास सरक आए और उनका हाथ पकड़ कर बोले- "कहिये पितामह!"

भीष्म बोले- "एक बात बताओ कन्हैया! इस युद्ध में जो हुआ वो ठीक था क्या?" "किसकी ओर से पितामह? पांडवों की ओर से?" "कौरवों के कृत्यों पर चर्चा का तो अब कोई अर्थ ही नहीं कन्हैया! पर क्या पांडवों की ओर से जो हुआ वो सही था?" आचार्य द्रोण का वध, दुर्योधन की जंघा के नीचे प्रहार, दुःशासन की छाती का चीरा जाना, जयद्रथ और द्रोणाचार्य के साथ हुआ छल, निहत्थे कर्ण का वध, सब ठीक था क्या? यह सब उचित था क्या?"

इसका उत्तर मैं कैसे दे सकता हूँ पितामह! इसका उत्तर तो उन्हें देना चाहिए जिन्होंने यह किया!! उत्तर दें दुर्योधन, दुःशाशन का वध करने वाले भीम, उत्तर दें कर्ण और जयद्रथ का वध करने वाले अर्जुन!!

"मैं तो इस युद्ध में कहीं था ही नहीं पितामह!" "अभी भी छलना नहीं छोड़ोगे कृष्ण? अरे विश्व भले कहता रहे कि महाभारत को अर्जुन और भीम ने जीता है, पर मैं जानता हूँ कन्हैया कि यह तुम्हारी और केवल तुम्हारी विजय है! मैं तो उत्तर तुम्हीं से पूछूंगा कृष्ण!"

"तो सुनिए पितामह! कुछ बुरा नहीं हुआ, कुछ अनैतिक नहीं हुआ! वही हुआ जो हो होना चाहिये!"

"यह तुम कह रहे हो केशव? मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अवतार कृष्ण कह रहा है? यह छल तो किसी युग में हमारे सनातन संस्कारों का अंग नहीं रहा, फिर यह उचित कैसे हुआ?" "इतिहास से शिक्षा ली जाती है पितामह, पर निर्णय वर्तमान की परिस्थितियों के आधार पर लेना पड़ता है! हर युग अपने तर्कों और अपनी आवश्यकता के आधार पर अपना नायक चुनता है! राम त्रेता युग के नायक थे, मेरे भाग में द्वापर आया था! हम दोनों का निर्णय एक सा नहीं हो सकता पितामह!!"

"नहीं समझ पाया कृष्ण! तनिक समझाओ तो!"

"राम और कृष्ण की परिस्थितियों में बहुत अंतर है पितामह! राम के युग में खलनायक भी 'रावण' जैसा शिवभक्त होता था! तब रावण जैसी नकारात्मक शक्ति के परिवार में भी विभीषण, मंदोदरी, माल्यावान जैसे सन्त हुआ करते थे! तब बाली जैसे खलनायक के परिवार में भी तारा जैसी विदुषी स्त्रियाँ और अंगद जैसे सज्जन पुत्र होते थे!"

उस युग में खलनायक भी धर्म का ज्ञान रखता था! इसलिए राम ने उनके साथ कहीं छल नहीं किया! किंतु मेरे युग के भाग में कंस, जरासन्ध, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनी, जयद्रथ जैसे घोर पापी आये हैं! उनकी समाप्ति के लिए हर छल उचित है पितामह! पाप का अंत आवश्यक है पितामह, वह चाहे जिस विधि से हो!!"

"तो क्या तुम्हारे इन निर्णयों से गलत परम्पराएं नहीं प्रारम्भ होंगी केशव? क्या भविष्य तुम्हारे इन छलों का अनुसरण नहीं करेगा? और यदि करेगा तो क्या यह उचित होगा?"

"भविष्य तो इससे भी अधिक नकारात्मक आ रहा है पितामह! कलियुग में तो इतने से भी काम नहीं चलेगा! वहाँ मनुष्य को कृष्ण से भी अधिक कठोर होना होगा, नहीं तो धर्म समाप्त हो जाएगा! जब क्रूर और अनैतिक शक्तियाँ सत्य एवं धर्म का समूल नाश करने के लिए आक्रमण कर रही हों, तो नैतिकता अर्थहीन हो जाती है पितामह! तब महत्वपूर्ण होती है धर्म की विजय, केवल धर्म की विजय! भविष्य को यह सीखना ही होगा पितामह!!"

"क्या धर्म का भी नाश हो सकता है केशव? और यदि धर्म का नाश होना ही है, तो क्या मनुष्य इसे रोक सकता है?"

"सब कुछ ईश्वर के भरोसे छोड़ कर बैठना मूर्खता होती है पितामह!

कर्म प्रधान होगा, भविष्य उसी पर आधारित होगा, कर्म के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। हरि नाम ही मोक्ष का सुगम मार्ग होगा।

DIWANSONS®

JEWELLERS

Diwansons Jewellers Pvt. Ltd.

101, Park Street, Siddha Point, 5th Floor, Kolkata-700 016

Phone : 033 2217 4753/54, Email : dsj@diwansons.in

Branch :

City Center I, Salt Lake, Block-DC, Shop No. C-208

Kolkata-700 064, Mobile : 9331344218

email : dsjcc@diwansons.in

City Centre II, New Town, Rajarhat, Block-B

Shop No. B117 & B118, Kolkata, Mobile : 9331344219

email : dsjccnt@diwansons.in

NS-EN ISO 9001:2008/ISO 9001:2008

M/S HINDUSTAN PRODUCE COMPANY

• IMPORTERS • EXPORTERS • INDENTORS • STOCKISTS
FOR ALL KINDS OF:

FERRO ALLOYS :	Ferro Silicon, Ferro Manganese (H/C, L/C, M/C), Silico Manganese (HC, LC), Ferro Chrome. (HC, LC), Ferro Molybdenum, Ferro Vanadium, Ferro Phosphorous, etc.
REFRACTORIES RAW MATERIALS :	Natural Graphite Flakes, Silicon Carbide, Dead Burnt Magnesite, Fused Magnesia, Brown Fused Alumina, Calcined Bauxite, etc.
FOUNDRY RAW MATERIALS :	Lime Stone (Low Silica), Bentonite Powder, Iron Ore, Materials & Minerals, Flourspar, Graphite Powder, CPC, Amorphous Graphite Powder, etc.
OTHER PRODUCTS :	Graphite Electrodes of all sizes and Grades.
OFFICE :	98 Christopher Road, B2/3rd Floor/U-4, Kolkata - 700046.
TELEPHONE NO. :	+91-33-23290828
MOBILE NO. :	+91-94330-46939 (PIYUSH KEYAL)
	+91-98369-86000 (PUNEET KEYAL)
E-MAIL ADDRESS :	hindproco@gmail.com
WEB SITE :	www.hindustanproduceco.com

पश्चिम बंग : वार्षिक रपट

३१ मई २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा "बिजनेस संवाद २०२५" का आयोजन साल्टलेक स्थित होटल ऑल्टऐयर, अम्बूजा नेवटिया इकोसेन्टर में पूरी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के मुख्य वक्ता बिजनेष बुल्स के सह-संस्थापक श्री प्रकाश अग्रवाल रहे। जिन्होंने एमएसएमई (लघु और मध्यम उद्यम) और आइपीओ (प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश) के विषय पर विस्तार से जानकारी दी। इसके अतिरिक्त सीए श्री विष्णु बासिया ने एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) के महत्व और उसके लाभों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया, प्रांतीय अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री मनोज गुप्ता, सचिव श्री पंकज भालोटिया, कोषाध्यक्ष श्री अभिषेक शरद, संयुक्तमंत्री श्री शैलेष जिन्दल, श्री बसंत गद्यान सीए गणेश अग्रवाल, श्री संजय जैन, श्री मनीष बजाज, श्री लक्ष्मण अग्रवाल, तथा श्री प्रदीप ढंडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

२९ जून २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा **'प्रतिभा सम्मान समारोह'** का आयोजन महानगर के ऐतिहासिक महाजाति सदन ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुआ। जिसमें करीबन ४०६ से अधिक मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित कर उनकी विद्या-साधना को नमन किया गया। समारोह का उद्घाटन भागवताचार्य बालव्यास श्री श्रीकांत शर्मा एवं पीपीपी समूह सीईओ श्री राजेश सोंथालिया, पार्षद श्री महेष शर्मा, आईआरएस (जीएसटी) श्री मनोज कुमार केडिया, सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल, सचिव श्री पंकज भालोटिया, चार्नक अस्पताल की निर्देशक श्रीमती श्वेता शर्मा, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया, श्रीमती ममता बिनानी एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने दीप प्रज्वलित कर किया। सम्मान समारोह के संयोजक श्री मनीष बजाज ने अपने कुशल नेतृत्व के जरिये सभी सदस्यों में सर्वश्री अभिषेक शरद डोकानिया, शैलेष जिन्दल, रूपक केडिया, गणेश अग्रवाल, संजय जैन, लक्ष्मण अग्रवाल, संजय रूंगटा, सोनू जैन, अभिषेक अग्रवाल सहित कई पदाधिकारियों का श्रम और समर्पण उल्लेखनीय रहा।

२५ अक्टूबर २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा पारम्परिक **'दीपावली मिलन समारोह'** कोलकाता स्थित मेवाड़ वैन्क्वेट हॉल में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें अपने सम्मेलन के करीबन ३०० से ज्यादा सदस्यों एवं उनके परिवारजनों ने बड़े ही उत्साह एवं आनन्द के साथ भाग लिया। इस शुभ अवसर पर अपने समाज के विशिष्ट समाजसेवी एवं बड़े बुजूर्ग व्यक्तियों के अलावा सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन गोयनका, राष्ट्रीय महामंत्री केदार नाथ गुप्ता, प्रांतीय अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल, प्रांतीय सचिव पंकज भालोटिया, प्रांतीय कोषाध्यक्ष एडवोकेट अभिषेक शरद डोकानियां मंचासीन रहे। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल महिला सम्मेलन के अध्यक्षा विनीता अग्रवाल, सरिता अग्रवाल, नागेर बाजार महिला सम्मेलन के अध्यक्षा सुषमा भालोटिया, पुनम अग्रवाल, विनीता बंका के अलावा अनेक महिलावृंद उपस्थित होकर समारोह की गरीमा में श्रीवृद्धि की। इस अवसर पर सांस्कृतिक गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किए गये। कार्यकम को सफल बनाने में संयोजक मनीष बजाज और सदस्यों में सर्वश्री दीनदयाल धनानिया, शैलेष जिन्दल, सीए रूपक केडिया, बिनोद लिहाला, सोनू जैन, सीए गनेश अग्रवाल, लक्ष्मण अग्रवाल, संजय जैन, रमेष बंका, बिक्रम गोयल सहित अन्य सदस्यगणों का विशेष योगदान रहा है।

१३ अगस्त २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा रानीगंज शाखा के शिशु बागान मोड़ पर राहगीरों के लिए शीतल जल धारा नामक वाटर कूलर मशीन का उद्घाटन किया गया। सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष नंद किशोर अग्रवाल, सचिव पंकज भालोटिया, आसनसोल नगर निगम के एमआईसी (स्वास्थ्य) दिव्येंदु भगत, और ओम प्रकाश बाजोरिया प्रांतीय महामंत्री श्री पंकज भालोटिया व स्टेट प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर मनीश बजाज ने कहा कि संस्था आगे भी इस तरह के सेवा कार्य करता रहेगा।

आसनसोल शिल्पांचल शाखा के दुर्गा मंदिर स्थान के बाहर ठंडे पानी की मशीन का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल एवं आसनसोल नगर निगम के उपमेयर अभिजीत घटक, प्रांतीय सचिव श्री पंकज भालोटिया एवं प्रांतीय कोर्डिनेटर श्री मनीष बजाज के द्वारा उद्घाटन किया गया।

बर्द्वमान शाखा के कंकेश्वर काली मंदिर के सामने ठंडे पानी की मशीन का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर दक्षिण बर्द्वमान के स्थानीय विधायक श्री सपन दास ने फीता काट कर इसका उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर प्रांतीय सचिव श्री पंकज भालोटिया एवं प्रांतीय कोर्डिनेटर श्री मनीष बजाज उपस्थित थे।

२१ अगस्त २०२५; को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से संबद्ध पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की रानीगंज शाखा ने मारवाड़ी समाज के लिए एक महत्वपूर्ण सभा का आयोजन किया। श्री सीताराम भवन में आयोजित इस सभा में रानीगंज, दुर्गापुर, आसनसोल, बांकुड़ा, पुरूलिया, बर्धमान शाखा के सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस दौरान कई महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दो पर चर्चा की गयी। इस बैठक में प्रांतीय अध्यक्ष श्री नन्द किशोर अग्रवाल, प्रांतीय सचिव श्री पंकज भालोटिया, पुरूलिया शाखा के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश केजरीवाल, बर्द्ववान शाखा के अध्यक्ष श्री जगदीश झंवर, बांकुड़ा शाखा के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र शर्मा, आसनसोल शिल्पांचल शाखा के अध्यक्ष श्री नरेश अग्रवाल, दुर्गापुर पश्चिम शाखा के अध्यक्ष श्री नारायण सिकरिया, श्री अनिल मोहनका, एवं ब्राह्मण सभा से श्री श्रवण जोशी विशेष

रूप से उपस्थित रहे। जहां उन्हें मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सम्मानित किया गया।

२० सितम्बर २०२५; को आद्योगिक नगरी दुर्गापुर स्थित महावीर मंदिर (डंगाल सेवा समिति) प्रांगण में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से ठंडा पेयजल मशीन स्थापित की गई। इस अवसर पर दुर्गापुर नगर निगम प्रशासनिक बोर्ड के सदस्य श्री धमेन्द्र यादव, दुर्गापुर दो नंबर ब्लॉक के सभापति श्री उज्ज्वल मुखर्जी, मंदिर कमेटी के अध्यक्ष श्री शिव शंकर प्रसाद, उपाध्यक्ष श्री राजेश प्रसाद, सचिव श्री पिंटू राय तथा फाउंडर मेंबर श्री सुरेष यादव समेत कई पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, प्रदेश सचिव श्री पंकज भालोटिया, प्रदेश कोर्डिनेटर श्री मनीष बजाज तथा दुर्गापुर पश्चिम शाखा के उपाध्यक्ष श्री अशोक काजरिया, सचिव श्री राजेष कुमार अग्रवाल, संयुक्त सचिव श्री संतोष माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष श्री बृजमोहन गुप्ता, संयुक्त कोषाध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल सहित कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य और समाज के अनेक गणमान्य लोग भी शामिल हुए।

१३ नवम्बर २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का जलपाईगुड़ी शाखा में वाटर कूलर मशीन (गर्म एवं ठंडे पेय जल) का उदघाटन जलपाईगुड़ी में उदघाटन किया गया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल, सचिव पंकज भालोटिया, कोर्डिनेटर मनीष बजाज उपस्थित थे। वाटर कूलर मशीन का उद्घाटन श्री नन्द किशोर अग्रवाल वहां के स्थानीय काउन्सीलर एवं अध्यक्ष प्रदीप सितानी द्वारा किया गया।

१३ नवम्बर २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का मयनागुड़ी शाखा में वाटर कूलर मशीन (गर्म एवं ठंडे पेय जल) का उद्घाटन मयनागुड़ी के १२ न. वार्ड के जागृति मोड़ में किया गया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष नन्द किशोर अग्रवाल, सचिव पंकज भालोटिया, कोर्डिनेटर मनीष बजाज उपस्थित थे। वाटर कूलर मशीन का उद्घाटन स्थानीय काउंसलर तथा सिलीगुड़ी से विशिष्ट समाजसेवी श्री रामअवतार बरेलिया द्वारा किया गया।

१३ नवम्बर २०२५; को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सिलिगुड़ी शाखा द्वारा दो गर्म व ठंडे पानी वाटर कूलरों का सफल उद्घाटन २८०० विद्यार्थियों वाले विद्यालय ब्यॉज हाई स्कूल सिलिगुड़ी तथा वृद्ध निवास (अपना घर) में की गई। इसका उद्घाटन सिलीगुड़ी नगर निगम के माननीय मेयर श्री गौतम देव जी के कर-कमलों द्वारा किया गया एवं "अपना घर" वृद्ध निवास में बुजुर्गों की मांग पूरी की गई। इस अवसर पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, प्रांतीय सचिव श्री पंकज कुमार भालोटिया, श्री मनीष बजाज कोर्डिनेटर एवं सिलिगुड़ी शाखा से - श्री रामअवतार बेरलिया, श्री अरुण कंदोई (सचिव - कार्यक्रम समन्वयक), श्री संजय शर्मा, श्री जयसिंह कुण्डलियाँ, श्री मनोज शर्मा गौड़, श्री विजय अग्रवाल, श्री बजरंग सेठिया, श्री अशोक अग्रवाल तथा अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

उपलब्धियाँ

दरभंगा निवासी सम्मेलन के आजीवन सदस्य श्री आनंद लुहारूका जी के सुपुत्र आयुष लुहारूका जिन्होंने पटना में रणजी ट्रॉफी क्रिकेट मैच खेलते हुए बिहार को मिजोरम पर विजय दिलायी और **"प्लेयर ऑफ द मैच"** का खिताब अपने नाम किया। आयुष को हार्दिक बधाई!

उदयपुर शहर की लवी जैन ने अथक मेहनत से २२ साल की उम्र में पायलट बन आसमान छूने का अपने बचपन का सपना साकार किया है। केंद्र सरकार के उपक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी, रायबरेली (आईजीएनए) से कठिन प्रशिक्षण पूरा कर ३ दिसंबर को पायलट बनीं लवी दूसरों के लिए प्रेरणा बनीं। बधाई!

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंडल-c के युवा सदस्य श्री जयपाल पचार ने हाल ही में दो महत्वपूर्ण मैराथन कार्यक्रमों में शानदार प्रदर्शन कर समाज का नाम रोशन किया। २ नवंबर को काजीरंगा में आयोजित १० किलोमीटर Kaziranga Rhino Run में श्री जयपाल ने अपनी मेहनत और धैर्य का परिचय दिया। २९ नवंबर २०२५ को गुवाहाटी में आयोजित २१ किलोमीटर SBI Green Marathon (Half Marathon) में भी उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। श्री जयपाल पचार, मंडल स से सहायक मंत्री श्री ओमप्रकाश पचार और श्रीमती कमला देवी पचार के सुपुत्र हैं। बधाई!

इंदौर के पिता श्री गोविन्द अग्रवाल एवं माता श्रीमती मेघा अग्रवाल की प्रतिभाशाली बेटी भूमि अग्रवाल ने साउथ अफ्रीका में आयोजित मॉडर्न पेंटाथलान की बायथले ट्रायथले वर्ल्ड चैम्पियनशिप २०२५ में भारत की ओर से हिस्सा लिया। इंदौर की होनहार तैराक और एथलीट भूमि अग्रवाल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत को १ गोल्ड, १ सिल्वर और २ ब्रॉन्ज पदक दिलाए। बधाई!

संस्थापक अध्यक्ष स्व. रामदेवजी चोखानी

२५ नवंबर २०२५ का दिन हमें उस महान विभूति की १४७वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अवसर देता है, जिन्होंने अपने निस्वार्थ कर्मों से शिक्षा, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में एक अमिट हस्ताक्षर किए। हम बात कर रहे हैं स्व. रायबहादुर रामदेवजी चोखानी की, जिन्हें प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. लक्ष्मीमलजी सिंघवी ने सच्चे अर्थों में एक **'युग पुरुष'** की संज्ञा दी थी। उनका जीवन त्याग, तप और सेवा की एक ऐसी त्रिवेणी था, जिसकी धाराएँ आज भी समाज को सींच रही हैं।

प्रारंभिक जीवन, मेधा और कर्मभूमि

२५ नवंबर १८७८ को राजस्थान के मंडावा (झुंझुनू) में जन्मे रामदेवजी चोखानी के व्यक्तित्व पर उनके पिता सेठ श्री दौलतरामजी चोखानी के संस्कारों की गहरी छाप थी। वह बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। वर्ष १८९४ में, उन्होंने अपनी परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसके लिए उन्हें प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता के डब्लू ग्रिफिथस साहब द्वारा पुरस्कृत किया गया। यह घटना उनकी जीवन भर की यात्रा का संकेत थी–एक ऐसी यात्रा जहाँ वह उत्कृष्टता, शिक्षा और नेतृत्व को प्राथमिकता देंगे।

हालांकि उनका जन्म मरुधरा में हुआ, उनकी कर्मभूमि कलकत्ता बनी, जहाँ उन्होंने व्यापारिक और सामाजिक दोनों मोर्चों पर नए कीर्तिमान स्थापित किए। २० जून १९५८ को उनका भौतिक शरीर शांत हुआ, लेकिन उनका कृतित्व आज भी प्रेरणास्रोत है।

शिक्षा के प्रति अटूट लगनः मंडावा से कलकत्ता तक

रामदेवजी चोखानी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनका शिक्षा के प्रति समर्पण था। उन्होंने शिक्षा को समाज की सबसे बड़ी शक्ति माना और इसे जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

मंडावा के लिए ऐतिहासिक कार्य (बच्चों के प्रति कर्तव्य)

आज से लगभग सवा सौ साल पहले, जब मंडावा और ५० किलोमीटर के दायरे में कोई स्कूल नहीं था, तब रामदेवजी ने शिक्षा की अलख जगाई। उन्होंने मंडावा में **'श्री सनातन धर्म पंचायत विद्यालय'** की स्थापना की, जो आज भी शिक्षा का एक गौरवशाली केंद्र है।

स्त्री शिक्षा के प्रणेता (महिलाओं के प्रति कर्तव्य)

वह रूढ़िवादिता के बंधनों से परे थे और उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को समाज के उत्थान के लिए अनिवार्य माना।

कलकत्ता में उन्होंने न केवल पुरुषों की शिक्षा के लिए, बल्कि विशेष रूप से महिलाओं के लिए भी **'बालिका शिक्षा सदन'** और **'सावित्री पाठशाला'** की स्थापना की। इन संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने उस दौर में महिलाओं को सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त किया।

राष्ट्र एवं समाज के प्रति कर्तव्यः कर्मयोगी की भूमिका

रायबहादुर रामदेवजी चोखानी का जीवन राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पित एक कर्मयोगी का जीवन था। उन्होंने समाज सुधार के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाई।

सम्मेलन के प्रति लगन और नेतृत्व

सम्मेलनों और संस्थाओं के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय था। वह **'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन'** के संस्थापक सदस्यों में से थे और १९३५ से १९३८ तक (मृत्युपर्यंत) इसके प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। यह दीर्घकालीन नेतृत्व उनकी सामाजिक दृष्टि और समाज के उत्थान के लिए उनकी अविचल लगन का प्रमाण है।

ऐसी घटनाएँ जिनमें उनका अहम रोल रहा

'कुली प्रथा' का उन्मूलनः राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाते हुए, उन्होंने दीनबन्धु एण्डूज के साथ मिलकर अंग्रेजों के समय की अमानवीय 'कुली प्रथा' के विरुद्ध संघर्ष किया और हजारों मजदूरों को दासता से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज की स्थापनाः कलकत्ता में व्यापार और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के उद्देश्य से उन्होंने २ नं. रॉयल एक्सचेंज पैलेस में 'स्टॉक एक्सचेंज' की स्थापना की, जो उनके आर्थिक दूरदर्शिता को दर्शाती है।

'रायबहादुर' की उपाधिः उनकी निस्वार्थ परोपकारिता, दयालुता और लोक-कल्याण के कार्यों को देखते हुए, दिसंबर १९२७ में बंगाल के गवर्नर ने उन्हें प्रतिष्ठित **'रायबहादुर'** की उपाधि से सम्मानित किया, जो उनके सामाजिक योगदान की आधिकारिक स्वीकृति थी।

साहित्य, संस्कृति और मित्रों के प्रति स्नेह

रामदेवजी केवल समाज सुधारक नहीं, बल्कि साहित्य और संस्कृति के अनन्य प्रेमी भी थे।

उन्होंने **'राजस्थान रिसर्च सोसायटी'** की स्थापना की और उसके प्रथम सभापति बने, जिसका उद्देश्य राजस्थानी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करना था।

उनका विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से गहरा संबंध था। रामदेवजी ने शांति निकेतन में **'हिन्दी भवन'** की स्थापना में टैगोर का भरपूर सहयोग किया।

एक संस्मरण के अनुसार, जब टैगोर ने उनसे राजस्थानी 'डिंगल' के दोहे सुने, तो वे इतने मंत्रमुग्ध हुए कि उन्होंने भावुक होकर कहा, "काश इस अगाध निधि से मुझे पहले अवगत कराया गया होता।" यह घटना साहित्य के प्रति उनके अनुराग और उनकी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व को दर्शाती है।

उपसंहारः १४७वीं जयंती पर संकल्प

स्व. रायबहादुर रामदेवजी चोखानी का १४७वाँ जन्मदिवस हमें यह याद दिलाता है कि व्यक्ति अपने कर्मों से कितने युगों को प्रभावित कर सकता है।

आज, जब हम उनके कृतित्व का स्मरण कर रहे हैं, तो हमें उनके जीवन के उस संदेश को अपनाना चाहिए।

श्री अरुण चोखानी
पौत्र स्व. रामदेव चोखानी

With Best Compliments From :

M/S. ANZEN EXPORTS PVT. LTD.

20C, Hazra Road

Kolkata – 700026, W.B. India

Mobile No. 9830028628

Email - jkj@anzen.co.in

आलेख

पिछले नौ दशकों की विशिष्ट उपलब्धियाँ

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रायः प्रश्न किया जाता है, मारवाड़ी सम्मेलन ने क्या किया है, क्या दिया है? समाज की सम्मेलन से बड़ी अपेक्षा रही है, उसी तरह सम्मेलन की भी समाज से अनगिनत अपेक्षाएँ हैं। समाज से सम्मेलन है और सम्मेलन समाज का है। सम्मेलन के प्रथम सभापति की हैसियत से स्व. रायबहादुर रामदेव जी चोखानी द्वारा दिये गये वक्तव्य के निम्न अंश से सम्मेलन की भूमिका और मारवाड़ी समाज की उपलब्धियों को समझा जा सकता है - **"जिस महान एवं पवित्र उद्देश्य को लेकर हम लोग आज यहाँ उपस्थित हुए हैं, वह उद्देश्य है सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज का सामूहिक संगठन, ऐसा संगठन जो जाति में नवजीवन का संचार करने वाला हो, उसके कार्यकर्ताओं में उल्लास, सजीवता एवं कर्मोद्यम का भाव भरने वाला हो और जिसमें समाज की विभिन्न शाखाएँ सम्बद्ध हों, जो अपने जातीय हित और उससे भी बृहत्तर सम्पूर्ण देश के स्वार्थ सम्बंध रखने वाले समस्त प्रश्नों पर विचार करे और अपना कर्त्तव्य स्थिर करे।"**

सम्मेलन की उपलब्धियों की फेहरिस्त लम्बी है। तथापि कुछ विशिष्ट उपलब्धियों के विषय में संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत है -

मतदान एवं नागरिक अधिकारः सम्मेलन की स्थापना के वर्ष में ही १९३५ के भारत विधेयक की रूप-रेखा में ऐसी आशंका के संकेत प्राप्त हुए थे कि मारवाड़ी समाज के व्यक्ति जो विभिन्न प्रदेशों में बसे हुए हैं, उन्हें देशी राज्यों की प्रजा मानकर यदि नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त हुए तो ये देश में विदेशियों की तरह समझे जायेंगे। ऐसा होने से न तो उनको मतदान का अधिकार प्राप्त होगा और न ही कोई नागरिक अधिकार।

सम्मेलन के प्राण-पुरुश श्री ईश्वरदास जालान ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष रायबहादुर रामदेव चोखानी, घनश्याम दास बिड़ला, बद्रीदास गोयनका, देवीप्रसाद जालान, मदन मोहन मालवीय से विचार-विमर्श किया और सुप्रसिद्ध बैरिस्टर सर एन.एम. सरकार को विलायत भेज कर आवश्यक संशोधन का प्रयास किया। भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने संशोधन प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा - "मारवाड़ी समाज की कठिनाईयों को दूर करने के लिये यह संशोधन किया जा रहा है।" स्थापना वर्ष १९३५ में ही यह सम्मेलन की पहली और सबसे बड़ी उपलब्धि थी, जिसके अन्तर्गत मारवाड़ी समाज को मतदान करने और नागरिक अधिकारों से वंचित होने से बचाया जा सका।

संगठित समाज की नींव रखीः १९३५ में मारवाड़ी समाज इतना विभक्त था कि सनातनी समाज किसी भी समाज सुधार के प्रश्न पर कोई भी समझौता तो दूर, बातचीत के लिये भी तैयार नहीं था। अतः सम्मेलन के संस्थापकों का उस समय मुख्य उद्देश्य था सभी वर्गों को एक मंच पर लाकर एक सशक्त संगठन खड़ा करना। संस्थापकों ने 'समाज का सर्वांगीण विकास' को सम्मेलन का लक्ष्य निर्धारित किया एवं समाज में विभेद को रोकने के लिये 'समाज सुधार' जो आज सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है, को कई वर्षों तक सम्मेलन से परे रखा गया, जिससे आपस में फूट न पड़े और मारवाड़ी शब्द के अन्तर्गत आने वाली सभी जातियों के व्यक्ति इसमें सम्मिलित होकर काम कर सकें। सम्मेलन ने समग्र मारवाड़ी समाज को एक सूत्र में बाँधने का काम किया।

किसी भी सामाजिक कार्यक्रम की सफलता हेतु सामाजिक संगठन अनिवार्य है। समाज के सभी तबकों को एकजुट करके ही सामाजिक समस्याओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर समग्र मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए समाज के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील रहा है। गत दशकों में सम्मेलन ने संगठन-विस्तार में अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है। फलस्वरूप आज अपनी प्रादेशिक शाखाओं के माध्यम से सम्मेलन देश के लगभग सभी प्रांतों यथा - आन्ध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पूर्वोत्तर, सिक्किम, तमिलनाडू, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, गुजरात आदि राज्यों में सक्रिय रूप से कार्यरत है।

'समाज सुधार' को स्वीकृतिः १९३५ में स्थापना के बाद, १२ वर्षों तक लगातार सम्मेलन ने समाज सुधार की आवश्यकता पर समाज को मानसिक रूप से तैयार किया। इस काल के अध्यक्षों - रायबहादुर रामदेव चोखानी, पद्मपत सिंघानिया, बद्रीदास गोयनका, रामदेव पोद्दार, राम गोपाल मोहता की इसमें महती भूमिका रही। ये समाज सुधार के प्रबल समर्थक थे। १९०८ में मारवाड़ी एसोसिएशन ने श्री जयनारायण पोद्दार के सभापतित्व में वैवाहिक सुधार को लेकर २६ नियम बनाये एवं समाज ने इन नियमों का पालन भी किया। इसी मारवाड़ी एसोसिएशन के प्रधान कार्यकर्ता श्री रामदेव चोखानी १९३५ में सम्मेलन के राष्ट्रीय सभापति बने।

यह वह समय था जब समाज का सम्पन्न व्यक्ति भी समाज सुधार के कार्यों में दिलचस्पी लेता था। एक मजेदार, महत्वपूर्ण और प्रेरक घटना १९१७ की है जब कलकत्ता में बड़ी चर्चा थी कि घी में चर्बी मिलाई जाती है। समाज में बड़ा क्षोभ था। व्यापारियों से पूछताछ की लेकिन सबने इन्कार कर दिया। एक दिन प्रातः सर्वश्री रंगलाल पोद्दार, सर हरिराम गोयनका, रायबहादढ़र शिवप्रसाद झुनझुनवाला, रायबहादुर विशेसर लाल हलवासिया, जयनारायण पोद्दार, दौलतराम चोखानी दल बाँधकर घी के व्यवसायियों के यहाँ पहुँचे एवं प्रत्येक दुकान एवं गोदाम से एक-एक पीपे नमूने के लिये ले गये। जाँच से पता चला कि उसमें चर्बी थी या मूँगफली के तेल की मिलावट थी। बड़ी सनसनी फैली। महापंचायत बुलाई गयी और सबके खातों की जाँच हुई। जुर्माने किये, जाति बहिष्कृत किया गया। ७५,००० रुपये जुर्माने स्वरूप प्राप्त हुए। इन रुपयों से वृन्दावन में गोचर भूमि खरीदी गई। आज की पीढ़ी के लिये यह घटना प्रेरणा के स्रोत बन सकती है।

१९४७-१९६७ सम्मेलन की समाज सुधार की स्वर्णिम यात्राः स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज एवं देश के प्रश्नों में एकरूपता बनी, कहीं कोई पृथक धरातल का प्रश्न नहीं रह गया था। सम्मेलन ने समाज को रूढ़िग्रस्त और हानिप्रद प्रथाओं से निकालने की आवश्यकता को सर्वोपरि समझा और १९४७ के बम्बई अधिवेशन में सुप्रसिद्ध समाजसुधारक श्री बृजलाल बियाणी की अध्यक्षता में सामाजिक विषयों को सम्मेलन के कार्यक्षेत्रों में अन्तर्निहित किया एवं समाज सुधार सम्बंधी कई दस्तावेज पारित किये गये।

इस क्रम में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों सेठ गोविन्द दास, रामेश्वरलाल टांटिया, गजाधर सोमानी की महत्वपूर्ण भूमिका रही और जिसे भावी अध्यक्षों भंवरमल सिंघी, नन्द किशोर जालान, रामकृष्ण सरावगी आदि ने अग्रगति प्रदान की।

बिलायत यात्रा पर समाज से बहिष्कृत करने की परम्परा का भारी विरोध सम्मेलन द्वारा किया गया। फलस्वरूप विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालय भवन के शिलान्यास के समय कालीप्रसाद खेतान को विलायत भेजने की घोषणा का स्वागत किया गया। बाद में देवीप्रसाद खेतान, कमलापति सिंघानिया, लक्ष्मी प्रसाद पोद्दार, घनश्याम दास बिड़ला आदि ने सपरिवार बिलायत यात्रा की और गलत मान्यताओं को हमेशा के लिये समाप्त कर दिया।

वृद्ध विवाह भी समाज का एक कोढ़ था। सुधारवादी नवयुवकों ने एक ऐसे विवाह का विरोध किया और उसे रोक कर, उस लड़की का विवाह नवयुवक गजानन्द मस्करा के साथ सम्पन्न कराया गया, जिसमें लगभग २०० मारवाड़ी बन्धु शामिल हुए थे। श्री लक्ष्मी नारायण खेमानी की छोटी बहन बाल विधवा हो गयी थी। उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिये जालन्धर कन्या महाविद्यालय में भर्ती कराया गया। रूढ़िवादियों ने उसे धर्मविरुद्ध घोषित कर उन पर फौजदारी मामला चलाया जो शेष में खारिज हो गया।

सम्मेलन के प्रयासों से समाज सुधार की एक ऐसी लहर फैल गयी थी जिसमें पोंगापन्थी एवं जड़ मान्यताओं को सुधारवादी नवयुवक चुनौती दे रहे थे। इस दल के प्रमुख थे - नागरमल मोदी, बैजनाथ केडिया, राजकुमार जालान, रामकुमार गोयनका, फूलचन्द चौधरी आदि।

सीठनों पर प्रतिबन्धः गंगाबक्स कानोड़िया, भागीरथ कानोड़िया, बसन्तलाल मुरारका के नेतृत्व में विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले सीठनों (अश्लील गीतों) को बंद करवाने का आंदोलन मारवाड़ी सम्मेलन के नेतृत्व में किया गया।

बाल विवाहः शारदा एक्ट पारित हुआ जिसमें विवाह की कम से कम उम्र निर्धारित हुई लेकिन इसके बावजूद बाल विवाह हो रहे थे। सम्मेलन ने इसका डटकर विरोध एवं आंदोलन किया। महात्मा गांधी तक ने इसे अनैतिक एवं अमानवीय कार्य बताया। जब बाल विवाह के साथ बाल वैधव्य की विभीषिका मिल जाती है, तब यह भीषण ट्रैजेडी बन जाती है। यंग इण्डिया में प्रकाशित महात्मा गांधी के इससे सम्बन्धित लेख को सम्मेलन ने समाज में प्रचारित एवं प्रसारित किया। इसका व्यापक प्रभाव हुआ।

विधवा विवाह के समर्थन में मारवाड़ी सम्मेलन ने जोरदार आंदोलन किये। इसके पक्ष में आयोजित कलकत्ता में एक बैठक के बाद कुछ सनातनियों ने स्टेज पर कब्जा कर लिया और मारवाड़ी समाज के १२ व्यक्तियों को बहिष्कृत कर दिया। इनमें थे - प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, भागीरथ कानोड़िया, सीताराम सेक्सरिया, बसंतलाल मुरारका, नागरमल मोदी, ओंकारमल सराफ, रामकुमार भुवालका, जगन्नाथ गुप्ता, धर्मचंद रानीवाला आदि। मजे की बात रही कि बहिष्कृत करने वालों ने इन बहिष्कृत भाईयों के खान-पान और सामाजिक उत्सवों में जाना पूर्ववत चालू रखा। विधवा विवाह के समर्थकों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती रही और विरोध का प्रभाव प्रायः शून्य हो गया। बसंतलाल मुरारका ने अपने ही कुंआरे पुत्रों का विवाह विधवाओं से किया और रामकुमार भुवालका ने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अपना पुनर्विवाह विधवा से किया। सम्मेलन के दो पूर्व अध्यक्षों भंवरमल सिंघी और रामकृष्ण सरावगी ने भी विधवा विवाह किया।

मृतक बिरादरी भोज के विरोध की आवाज सम्मेलन ने लगातार उठाई और इसके फलस्वरूप इस प्रकार का भोज प्रायः बंद हो गया। हालाँकि अभी भी कहीं-कहीं यह भोज होता है लेकिन उसमें लगातार कमी आ रही है।

पर्दा प्रथा के अभिशाप से मारवाड़ी नारियाँ इस हद तक ग्रस्त थीं कि पर्दा सर्वाधिक अपने घरवालों और सगे-सम्बन्धियों से किया जाता था। इस प्रथा पर सबसे बड़ा प्रहार सम्मेलन द्वारा १९४७ से १९५४ तक चलाये गये आंदोलनों द्वारा हुआ। पर्दे के विवाहों के सामने प्रदर्शन हुए। पर्दे के विवाह में सम्मिलित नहीं होने की युवकों-युवतियों ने शपथ ली। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं स्तम्भ स्व. नन्द किशोर जालान अपने चचेरे भाई के पुत्र एवं पुत्री के विवाह तक में शरीक नहीं हुए। कलकत्ता में कई वर्षों तक पर्दा प्रथा निवारण दिवस मनाया गया। नन्द किशोर जालान के अनुसार जब आंदोलन चल रहा था, उस दौरान उन्होंने और बसन्त लाल मुरारका ने घूँघट निकाली बैठी दो महिलाओं के सिर पर से पीलिये खींच लिये। जिनकी ओढ़नियाँ खींची गयी थी उनकी मृदुल मुस्कान ने उन दोनों की रक्षा की, वर्ना सर फूट जाते। इस आंदोलन में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी महती भूमिका निभाई जिनमें प्रमुख थीं - सुशीला सिंघी, सुशीला देवी भंडारी, विजय कुमारी मेहता, मांगकुमारी भूतोड़िया, इन्दुमती गोयनका, चम्पादेवी गंगवाल, रतनदेवी जैन, रमादेवी मुरारका, पुष्पा लाठ, भगवती देवी पोद्दार, अनुसूइया कानोड़िया, शकुंतला चिंतामणी, गंगादेवी चांडक आदि।

सामाजिक समरसताः सम्मेलन ने समरसता के सिद्धान्त पर बराबर जोर दिया है। जो भाई जिस प्रांत में रहते हैं, वहाँ के लोगों के साथ मिल कर काम करते हैं और अपने आप को उसी प्रांत का मानते हैं। यह काम भी अब जगह-जगह हो रहा है। मेरे कार्यकाल में साहित्य, संस्कृति और लेखन में समरसता के लिये कई कार्यक्रम हाथ में लिये गये जिनमें विभिन्न प्रांतों में उनके लेखकों और साहित्यकारों द्वारा राजस्थान एवं मारवाड़ी समाज के सम्बंध में लेखन को उस प्रांत की साहित्यिक अकादमी के साथ मिलकर लेखक को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करने का कार्यक्रम प्रमुख रहा था।

सादगीपूर्ण विवाह एवं दहेजः पर्दा विरोधी आंदोलन के साथ-साथ सम्मेलन १९४७ से ही दहेज विरोधी अभियान एवं सादगीपूर्ण विवाह करने के लिये निरंतर आंदोलन चलाता आ रहा है। हालाँकि दहेज का उन्मूलन नहीं किया जा सका, फिर भी

आंदोलन स्वरूप हजारों परिवारों में दहेज के बिना विवाह हुए हैं और समाज में अच्छे व्यक्तियों का मानस दहेज विरोधी बना है। इन कुरीतियों का मुकाबला एक लगातार समाज सुधार के आंदोलन के माध्यम से ही किया जा सकता है। समाज सुधार एक अत्यन्त कठिन और धीमी मन-परिवर्तन की प्रक्रिया है और इसके लिये सम्मेलन कटिबद्ध है।

शिक्षा का महत्व एवं कन्या शिक्षाः सम्मेलन ने समाज में शिक्षा-प्रचार पर बहुत अधिक ध्यान दिया। शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए पश्चिम बंग, बिहार, असम आदि प्रांतीय सम्मेलनों ने दशकों पहले शिक्षा कोष की स्थापना की जिसके माध्यम से मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को हजारों की संख्या में छात्रावृति प्रदान की गयी। उच्च शिक्षा के लिये युवक-युवतियों को प्रेरित किया गया। इस काम में सम्मेलन ने जो सफलता पायी वह अभूतपूर्व है। **उच्च शिक्षा कोष** का श्रीगणेश ७ अक्टूबर २००७ को मेरे कार्यकाल में कुमारी प्रियंका खण्डेलवाल को एक लाख चालीस हजार रुपये के अनुदान से आरम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत समाज के जरूरतमंद एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिये अनुदान का कार्यक्रम हाथ में लिया गया। इस योजना के अन्तर्गत अभी तक सैकड़ों छात्र-छात्राओं को ४ करोड़ से अधिक की राशि का अनुदान दिया जा चुका है।

सम्मेलन से प्राप्त सहयोग से शिक्षित युवक-युवतियाँ आज उच्च पदों पर आसीन है। आज समाज में मारवाड़ी डॉक्टरों, वकीलों, चार्टर्ड एकाउन्टेन्टों, इंजीनियरों आदि की बहुत बड़ी संख्या है। जहाँ पहले केवल लक्ष्मी को ही प्रधानता दी जाती थी, आज उतनी ही प्रधानता माँ सरस्वती को भी दी जा रही है और समाज अन्य समाजों से किसी भी तरह पीछे नहीं है। महिलाओं में शिक्षा की अभूतपूर्व चेतना जागृत हुई है। जहाँ एक दिन बालिकाओं को प्राथमिक पाठशालाओं में भेजने में भी झिझक ही नहीं, विरोध होता था, वहाँ आज हमारी बहनें-बेटियाँ स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाती हैं। उच्च ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में, शोध केन्द्रों में, अस्पतालों-अदालतों में, दफ्तरों, उद्योग-धन्धों के संचालन में सहयोग देती हैं। महिलाओं में आर्थिक स्वतंत्रता के निर्माण की दिशा में एक नई चेतना उत्पन्न हुई है। इनके साथ-साथ सम्मेलन द्वारा समाज के जरूरतमंद युवक-युवतियों को रोजगार में सहायता हेतु **'रोजगार सहायता उपसमिति'** का गठन भी किया गया जिसके माध्यम से अभी तक सैकड़ों युवक-युवतियों को रोजगार प्रदान किया जा चुका है। इसमें उपसमिति के चेयरमैन दिनेश जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाहों का एक लम्बा सिलसिला सम्मेलन द्वारा दहेज-दिखावा के विरुद्ध हाथ में लिया गया। सम्मेलन द्वारा आरम्भ यह कार्यक्रम पूरे देश में स्वीकृत हुआ और बहुत संस्थाओं ने इस कार्यक्रम को अपनाया। इसमें महिला सम्मेलन का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिये इस बीच एक लगातार प्रयास सम्मेलन द्वारा जारी रहा। केन्द्रीय मंत्रियों एवं राजस्थान सरकार को बराबर सम्मेलन की तरफ से प्रतिवाद एवं प्रतिवेदन जारी रही। 'धरती धोरां री' के रचयिता कविश्रेष्ठ कन्हैयालाल सेठिया को सम्मेलन के प्रयास से पद्मश्री से नवाजा गया। इसमें सम्मेलन को तत्कालीन उप-राष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत का सर्वाधिक सहयोग प्राप्त हुआ।

पुरस्कार स्थापितः सम्मेलन ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के लिये कई पुरस्कार स्थापित किये - भंवरमल सिंघी समाज-सेवा पुरस्कार, बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार, रामनिवास-आशारानी लाखोटिया राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान, सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा-साहित्य सम्मान, केदारनाथ-भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान। इनके अन्तर्गत समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया गया है। वर्ष २०१४ में स्थापित 'रामनिवास-आशारानी लाखोटिया राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान' से गत वर्षों में श्रीमती अनुराधा लोहिया, न्यायमूर्ति श्री रमेशचंद्र लाहोटी, श्रीमती राजश्री बिड़ला, श्री अनिल अग्रवाल, श्री ओम बिरला, श्री अरविंद केजरीवाल, न्यायमूर्ति श्री आदर्श कुमार गोयल, श्रीमती अमला रूईया, श्री देवेन्द्र राज मेहता एवं श्री वेणूगोपाल बांगड़ को सम्मानित किया गया है।

वैचारिक आचार संहिता निर्धारित करने हेतु ४-५ नवम्बर २००६ को कोलकाता में एक दो-दिवसीय चिंतन शिविर का आयोजन किया गया जिसमें एक लम्बी एवं सार्थक बातचीत के बाद एक सर्वसम्मत एवं सर्वमान्य वैवाहिक आचार संहिता को पारित किया गया। मैंने अपने कार्यकाल में **राजनीतिक चेतना** के विकास के लिये 'कोषाध्यक्ष नहीं, अध्यक्ष बनो' के नारे के साथ राजनैतिक चेतना शिविरों का आयोजन किया जिनमें समाज को मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिये प्रेरित किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन भवनः १९३५ में स्थापित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का कोलकाता में जल्द ही ५ मंजिला भवन-निर्माण प्रस्तावित है। भवन के लिये वर्ष २००५ में अमहर्स्ट स्ट्रीट के करीब १० कट्ठा जमीन खरीदी गई जिसका भूमिपूजन २० जुलाई २०१८ को मेरे और मेरी पत्नी आशा शर्मा द्वारा किया गया। इसी वर्ष, २६ नवम्बर २०२५ को सम्मेलन भवन का निर्माण-कार्य का शुभारंभ भी हो चुका है। भवन का निर्माण सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदलाल रूँगटा के आर्थिक सहयोग से उनके पिता स्व. सीताराम रूँगटा की स्मृति में किया जायेगा। वर्ष २०१६ में शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित 'डकबैक हाउस' में अपना कार्यालय खरीदा गया जहाँ से वर्तमान में सम्मेलन का केन्द्रीय कार्यालय कार्यरत है जिसमें सभी सुविधाओं सहित एक कॉन्फ्रेंस हॉल भी उपलब्ध है।

सम्मेलन का मुखपत्र - समाज विकासः अपने कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को दूर-दराज के समाजबंधुओं तक पहुँचाने के लिये सम्मेलन का मुखपत्र 'समाज विकास' का प्रकाशन गत कई दशकों से निरंतर होता आया है। पूरे देश में फैले सम्मेलन के सदस्यों को यह निःशुल्क वितरित किया जाता है जिसके माध्यम से सम्मेलन की गतिविधियों के अलावा देश एवं समाज से सम्बंधित महत्वपूर्ण विषय-वस्तुओं एवं सूचनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाता है। वर्तमान में सम्मेलन का अपना वेबसाईट www.marwarisammelan.com भी सम्पूर्ण जानकारियों सहित कार्यरत है।

इनके अलावा मारवाड़ी समाज ने कई नये-पुराने क्षेत्रों में बड़ी सफलता प्राप्त की है। उद्योग-धन्धों के अतिरिक्त शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, खेल आदि के क्षेत्र में समाज ने आशातीत प्रगति की है। मारवाड़ी समाज आढ़ती, दुकानदार, व्यापारी से आगे बढ़कर कल-कारखानों का मालिक, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का उद्योगपति बन गया है।

जीवन के मूल्यों के प्रति नये दृष्टिकोण का आविर्भाव हुआ है। वैज्ञानिक सोच के साथ-साथ राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास हुआ है। आज मारवाड़ी समाज व्यवसायिक रूप से सफल एवं शिक्षित समाज है। समाज अपनी खूबियों - सादगी, संचय प्रवृति, ईमानदारी, दूरदर्शिता, सहिष्णुता, परिश्रमशीलता, व्यवहार-कुशलता, दानवीरता, पारिवारिक अनुशासन, साहस, व्यापारिक परिपक्वता व जोखिम उठाने की क्षमता के चलते सफलता की नयी ऊँचाईयों को प्राप्त कर रहा है। इन पुराने चारित्रिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बचाकर रखने के लिये सम्मेलन सदैव एक सजग प्रहरी की भूमिका निभाते हुए समाज को नित नयी ऊँचाईयों पर स्थापित करने का प्रयास करता है।

समाज सुधार, जो सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम है - का मार्ग कठिन और दुरुह है क्योंकि समाज सुधार के लिये वैचारिक परिवर्तन आवश्यक है जिसे एक निरंतर प्रक्रिया एवं सामाजिक आंदोलन के माध्यम से ही हासिल किया जा सकता है। एक तरफ कतिपय पुरानी कुरीतियों पर अंकुश लगा है तो दूसरी तरफ नयी-नयी कुरीतियों - तलाक, टूटते परिवार, धन का प्रभाव, मद्यपान, प्री-वेडिंग शूट आदि ने जन्म लिया है। सम्मेलन ने हाल के वर्षो में इन कुरीतियों के विरुद्ध समाज को जागरूक किया है और एक जनमत तैयार किया है। सम्मेलन के लिये समाज सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है जिस रास्ते पर सम्मेलन को चलते रहना है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर **मद्यपान** करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

विविध

"चिलका डाक"

बीकानेर के व्यापारियों ने ईजाद की चिलका डाक
उन्नीसवीं सदी का अंतिम दशक था
बीकानेर में अफीम, रूई, चांदी के सट्टे होने शुरू हो गये थे
बंबई और कलकत्ता के भाव चाहिए थे
कलकत्ता-बंबई से टेलीग्राम के माध्यम से अजमेर से जोधपुर और अजमेर से बीकानेर तक पहुंचे सौदों के भावों को बीकानेर तक तुरंत लाने के लिये डाक व्यवस्था की जरूरत थी।
सीमित साधन
अनोखी बुद्धि का भ्रमण
"चिलका डाक"
का अन्वेषण
इस व्यवस्था में कासिदों या हरकारों के स्थान पर
हर दस कोस पर धोरों के भाखर (धोरों के टीले) पर बड़े बड़े दर्पण लगाये गये सूरज के सामने करके दर्पण से चिलका पैदा करते।
"सांकेतिक भाषाओं"
में चिलका फेंक - फेंक कर संदेश भेजे जाने लगे
समय लगता था मात्र
"आधा घंटा"

भाव
अजमेर से जोधपुर
अजमेर से बीकानेर
तक पहुंच जाया करते थे

इस डाक का नाम हुआ "चिलका डाक"

ये पूर्वज हमारी नींव है
जिनकी बुड़ाई जितनी करे उतनी कम है

जरूरतों पर किसी सरकारी आशीर्वाद के सहारे न रह कर
खुद की व्यवस्था बनाना
ये सीख देती है हमें

तभी हम २१वीं सदी में पहले ही पहुंच गये थे

स्वामी विवेकानंद के प्रेरक विचार

"एक विचार चुनिए और उस विचार को अपना जीवन बना लीजिए। अपने दिमाग, अपने शरीर के हर अंग को उस विचार से भर लें बाकी सारे विचार छोड़ दें, यही सफलता का रास्ता हैं।"

GAMCO
LET'S GROW
(Golden Goenka Group)

BUILDING A UNIQUE PORTFOLIO OF ASSETS

Creating sustainable value for all stakeholders

Multi-Asset Investments

Capital Market Investments

Real Estate

Warehousuing

Structured Finaring & Secured Lending

Investments in Emerging Companies

At Gamco, our vision is to stay successful through strategic multi-asset investments and sustainable value creation.
Our distinctive asset curation strategy makes us unique among listed companies.

GAMCO LIMITED

25A S.P. Mukherjee Road, Kolkata-700025
Phone: 03324750073
Email: gamcoltd@gamco.co.in
Website: www.gamco.co.in

With best complements from

PPPS GROUP

For 91st Foundation Day of All India Marwari Fedaration

Address: DB-126, Sector-1, Salt Lake City, Kolkata-700064.

Business Activities: Generation of Solar Power Energy, Development of Solar Park, EPC Contractor, Module Manufacturing on OEM, Engineering Products and Steel, Polymers and plastic Products, Textiles and Garments, Gems and Jewellery, Infrastructure Development and International Trade.

Person in Contact: Mr. Rajesh Kumar Sonthalia.

Contact No.9831077130.

Email ID: ptpl1995@gmail.com.

आंध्रप्रदेश प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन

Head Office : Vijayawada, (A.P.)

OM PRAKASH AGARWAL
State President

BALKISHAN LOYA
State General Secretary

RAJESH KUMAR BHANSALI
State Treasurer

राजस्थानी स्कुल मे बच्चो के पढाई के लिए कम्प्यूटर एव प्रीटर

राजस्थानी स्कुल मे बच्चो के पढाई के लिए कम्प्यूटर एव प्रीटर

Holi Saneh Milan Program With Central Minister Arjunji Singhji Megwal

बाढ पीङितो को सेवा कार्यक्रम

" वास्तु से सफलता की ओर "
मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महासचिव श्रीमान कैलाशपति तोदी

Buttermilk counter opening by police ACP SIR

CM RELIEF FUND For FLUDS

मारवाडी सम्मेलन श्रीकाकुलम के तत्वावधान मे गरीब बच्चो को कपडे वितरण किये गये ।
---- मुख्य अतिथि ----
केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री
के. राम मोहन नायडू जी उपस्थित हुए ।

विशाखापट्टनम मारवाडी सम्मेलन के तत्वावधान मे रक्त दान शिविर का आयोजन

मेधावी 30 बच्चो को सहयोग राशी वितरण कार्यक्रम

सब का साथ
सब का विकास

विजयवाडा मारवाडी सम्मेलन के तत्वावधान मे कावड यात्रा

With Best Wishes From

Shri Ashok Kumar Jalan

M/S. Tandhan Group

Mobile : 9831028666

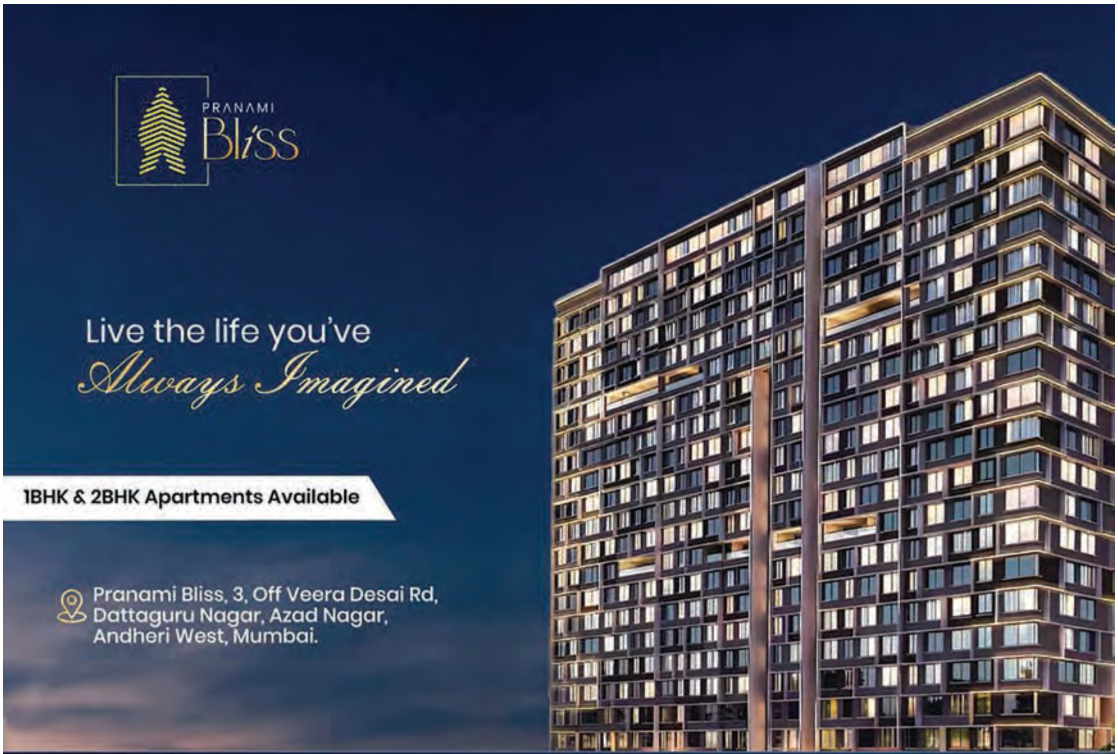
PRANAMI
Bliss
Live the life you've
Always Imagined
1BHK & 2BHK Apartments Available
Pranami Bliss, 3, Off Veera Desai Rd,
Dattaguru Nagar, Azad Nagar,
Andheri West, Mumbai.

PRANAMI
CREST
A lifestyle wrapped
in Comfort
3BHK & 4BHK Apartments Available
Pranami Crest, Near Palm Island
Vasundhara, Ranchi Jharkhand.

West Coast Paper Mills Ltd.
Your partner in progress...
COPIER & OFFICE STATIONERY PRODUCTS
70, 75 & 80 GSM
75 GSM
70 GSM
80 GSM
75 GSM
70 GSM
85 & 100 GSM
65 GSM
70, 80 & 90 GSM
Range of Cup Stock
135 - 350 GSM
A WESCO Product
PREMIUM PRINTING & WRITING PAPER PRODUCTS
Solution for all printing needs
52 - 140 GSM
DURAPRINT
60-150 GSM
DURA COLOUR
90-200 GSM
DURALENO
60-150 GSM
STRAW BASE
90-140 GSM
STRAW FOLD
60-140 GSM
WESCO
REGISTERED OFFICE
Bangur Nagar
Dandeli - 581325,
Uttar Kannada, Karnataka
E-mail: pro@westcoastpaper.com
TEL: 08284-231391-395
CORPORATE OFFICE
31, Jawaharlal Nehru Road
Kolkata - 700016
West Bengal, India
E-mail: sales.ho@westcoastpaper.com
TEL: 033 - 7150 0500
www.westcoastpaper.com

manipalhospitals
LIFE'S ON
In Emergencies,
Let the ICU Come to You.
Introducing
MARS
Manipal Ambulance Response Service
Complete Medical Emergency Solutions
033 2222 1111
Manipal Hospitals' care on wheels – from your doorstep to our hospital.
We're happy to launch MARS (Manipal Ambulance Response Services) in Kolkata, a 24x7 advanced pre-hospital emergency care service to ensure life-support during the golden hour of medical emergencies.
Why Trust MARS:
Advanced Fleet: Equipped with ventilators, ECG monitors, defibrillators, and syringe pumps.
24/7 Rapid Response: 17 ambulances strategically deployed across Kolkata.
Hub & Spoke Model: Efficient, proximity-based dispatch system.
Centralised Command Centre: One hotline, automated dispatch, real-time tracking.
Clinical Care Integration: Co-ordination with doctors en route.
Golden Hour Focus: Timely intervention that saves lives.

Srihari Global School
Learning For life
Kanoria Foundation
33 Students in a Section.
Lush Green Campus.
Fully equipped lab with all modern facilities.
GPS enabled Transport facility with CCTV.
HOLISTIC LIFE LEARNING
SRIHARI GLOBAL SCHOOL
A C.B.S.E. AFFILIATED CO-EDUCATIONAL ENGLISH MEDIUM SCHOOL
Shirstinagar, Asansol, W.B.:-713305
www.sriharigloba1.com
enquiry@sriharigloba1.com
+91-7797683332
0341-2251818

सम्मेलन – एक अविस्मरणीय यात्रा

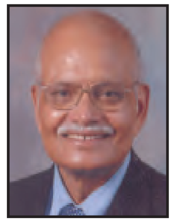

डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

भाइयो एवम् बहनों
राम राम! राधे राधे!

आने वाले नव वर्ष की शुभकामनाएँ। अखिल भारतवर्षीय की स्थापना १९३५ में स्थापना हुई। यह संगठन व्यक्तिगत, सामाजिक, एवं राष्ट्रीय समस्याओं में अपना पूरा योगदान कर रहा है। समाज ने देश की स्वतंत्रता के लिए तन मन धन से हिस्सा लिया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा एवं अन्य कई बुरी प्रथा को समाप्त करने में सफलता मिली है। समाज नारी शक्ति को पहचान कर उन्हें ऊँची शिक्षा दे रहा है। सम्मेलन का ध्येय वाक्य **'म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति'** है। संगठन सम्मेलन समाज सुधार, सादगी, बहुओं-बेटियों को प्यार से रखना, समान बर्ताव करना यही संदेश दे रहा है। शादी विवाह में शराब आदि का उपयोग ना करे, महालक्ष्मी का आगमन होता है। समाज सुधार करते रहने की आवश्यकता है। वर्तमान में शादी विवाह में फिजूल खर्च काफी होता है, काफी दिखावा होता है। माध्यम वर्ग में इसका काफी असर होता है। शराब और तामसी भोजन से बुद्धि पर काफी असर पड़ता है। व्यापार में, कार्यक्रम में इसका काफी असर पड़ता है। समाज के सामने अभी वर्तमान में तलाक का बहुत प्रचलन हो गया है। तलाक बढ़ते जा रहा है और विवाह अत्यधिक देरी से होने लगा है। ३५/४० उम्र पार हो जाती है, युवा एवं युवतियाँ शादी नहीं करते है। उन्हें लेकर परिवारजनों को काफी चिंता रहती है। मानसिक चिंता से शरीर पर भी इसका असर होता है, इसके लिए समाज में जागरूकता लाने की विशेष आवश्यकता है।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा – मुझे चार प्रकार के लोग भजते है – आर्त, जिज्ञासु, धन चाहने वाले, और ज्ञानी जिन्हें परम ज्ञान प्राप्त है। भगवान को आवाहन कर प्रार्थना करे कि हमे बुद्धि दे, ज्ञान दे, प्रकाश दे, धन दे ताकि समाज के विकास में सहयोग कर सके।

सम्मेलन की सदस्यता बढ़ाकर सम्मेलन को मजबूत करते हुए अपने संस्कार को बढ़ावा दे। हमारी मारवाड़ी भाषा जो लुप्त हो रही है उसका प्रचलन करे। घरों में जो अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते है या अपने प्रदेश की भाषा में बात करते है, इसके साथ ही साथ अपनी मारवाड़ी भाषा को भी उपयोग में लाए।

मेरा बिहार का ६ दिन का अविस्मरणीय दौरा शायद प्रथम बार ७५ वर्ष के सम्मेलन के इतिहास में एक नई क्रांति और जागरण की है। प्रथम दौरा असंभव मालूम हो रहा था पर उसी वक्त मन से एक आवाज आई "मन के हारे, हार है। मन के जीते, जीत।। और इस से मुझे असंभव को संभव बनाने की प्रेरणा मिली। फिर क्या था!!! चल पड़े मंजिल की ओर।

कई प्रांत के पदाधिकारी श्रीमती सुषमा अग्रवाल और अन्य कई जन साथ में चले। एक फूल, तुलसी, के साथ एक फल देकर स्वागत करने की शुरुआत की गई। गया से बोध गया होते हुए दूसरे दिन मेरे गाँव मेरा जन्म स्थान बढ़ैया पहुचे वहाँ माँ जगदम्बा का आशीर्वाद लिया। ऐसी मान्यता है कि माता वैष्णव देवी वही से गई थी। बढैया से ६ किलो मीटर आगे बाबा शिव जी का विशाल मंदिर बाबा अशोक धाम के नाम से प्रसिद्ध है। अशोक नाम का हमारे ही गांव का एक लड़का, उसी जमीन से शिवजी का लिंग निकाला जो कम से कम ८ से १० फुट का होगा। कहते है भगवान श्री राम जी अपनी बहन शांता को खोजते हुए इसी जगह आए थे और उन्होंने ही इन शिव जी की मूर्ति की स्थापना की थी। कई क्षेत्रों में मुज्जफ्फरपुर, पटना आदि होते हुए हम वापस आ गए।

समाज में सम्मेलन का काफी उत्साह था और काफी सुधार हो रहा थे। नारी शक्ति का विकास हो रहा था, नारियों को उच्च शिक्षा भी दी जा रही थी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुए ९० वर्ष पूरे हो गए। हमारा संदेश यही है की शादी-विवाह आदि समारोह में फिजूल खर्च रोकना, शराब आदि को रोकना। नारी शक्ति को शिक्षा देना, बहू बेटियों में समान व्यवहार करना। मारवाड़ी भाषा का जहाँ तक हो सके व्यवहार में लाना। संस्कार और सभ्यता का अनुसरण करना। काम काज करते हुए भगवान का स्मरण बनाये रखना।

हरि शरणम्! हरि शरणम्!

सोशल मीडिया पेज से जुड़ें

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सोशल मीडिया में उपस्थिति फेसबुक एवं इंस्टाग्राम पेज के माध्यम से प्रारंभ हो चुकी है। सभी समाज-बंधुओं से विनम्र निवेदन है कि फेसबुक : AIMF1935 व इंस्टाग्राम : allindiamarwarifederation_ को अधिक से अधिक संख्या में लाइक/फॉलो करें। इसके द्वारा हम आपसी संवाद एवं संपर्क को बढ़ावा देंगे एवं इससे सम्मेलन की सूचनाओं का आदान-प्रदान भी संभव हो पाएगा। सम्मेलन के सभी प्रांत, शाखा एवं समाज से जुड़े सभी समाज-बंधुओं से अनुरोध है कि इस सुविधा का लाभ उठाएं तथा अपने सूचना/विचार एवं कार्यक्रम की फोटो पोस्ट करने के लिए राष्ट्रीय कार्यालय में व्हाट्सएप +91 86973 17557 करके या ईमेल (aimf1935@gmail.com) में भेज सकते हैं, ताकि उपयुक्त जानकारियों को हम एक-दूसरे के साथ साझा कर सकें। इस संबंध में आपके सुझाव आमंत्रित हैं। राम! राम!!

– **केदार नाथ गुप्ता**, राष्ट्रीय महामंत्री

आलेख

हम सुधरें, सुधारें, मनाएं नयी व्यवस्था

संतोष सराफ
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

'मारवाड़' राजस्थान का एक क्षेत्र हैं, जिसमें माड़मेर, जोधपुर, पाली, जालैंर और नागार जिले आते हैं। सही मायन में इस क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग, चाहे वो किसी भी जाति, या धर्म के हों, 'मारवाड़ी' कहलाते हैं, पर व्यवहार में केवल वैश्य/अग्रवालों को ही मारवाड़ी समझा जाता है। इधर, बनिया समाज में अग्रवाल, माहेश्वरी और जैन (ओसवाल, पोरवाल आदि) लोगों को लिया जाता है। मारवाड़ी समाज का महत्व उनकी आर्थिक योगदान, समाज सेवा और सांस्कृतिक विरासत में निहित है। यह समाज व्यापार और व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी कुशलता के लिए जाना जाता है, जो देश की अर्थव्यवस्था का मजबूत करता है। इसके साथ ही, वे शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के लिए विभिन्न संस्थाओं जैसे विद्यालय, अस्पताल और धर्मशालाओं के माध्यम से सेवा कार्य भी करते हैं।

मारवाड़ी समाज ने व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। ऐतिहासिक रूप से, उन्होंने वित्तीय और बैंकिंग कौशल का उपयोग करके निवेश किया और कई उद्योगों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। वे ऐतिहासिक रूप से प्रवासी रहे हैं और भारत के विभिन्न हिस्सों में व्यापारिक नेटवर्क स्थापित किए हैं। मारवाड़ी समाज ने पूरे देश में कई विद्यालय स्थापित किए हैं, जिससे शिक्षा के प्रसार में मदद मिली है। समाज ने अस्पतालों और स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा धर्मशालाओं और अन्य सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से जरूरतमंदों की सेवा करना उनके समाज सेवा के मूल्यों का एक अहम हिस्सा है।

यह समाज अपनी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों के लिए जाना जाता है, जो समय के साथ विकसित हुई है। उनकी उद्यमशीलता और कड़ी मेहनत उनके समाज की पहचान है। वे अपने व्यवहार और सामंजस्य से जिस भी समुदाय या क्षेत्र में जाते हैं, वहाँ अपनी मिठास और अपनापन बिखेर देते हैं। आजकल, वे राजनीति और सार्वजनिक जीवन में भी सक्रिय भूमिका निभा ही रहे हैं, समाज सेवा और शिक्षा के माध्यम से, वे रोजगार के अवसर भी पैदा करते हैं। खुशी की बात है कि यह समाज अपनी युवा पीढ़ी को सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। ये एक अफसोस है, कि साम्यवादी लेखकों के एक वर्ग के निहित लक्ष्यों के कारण मारवाड़ी को हर साहित्य और हर फिल्म में एक लोभी लालची के रूप में दर्शाया जाता रहा है। कोई भी फिल्म देखिये या कोई भी काल्पनिक उपन्यास पढ़िए, कुछ पात्र इस प्रकार लिखे जाएंगे - एक मारवाड़ी होगा जो बहुत लोभी और निर्दयी होगा और एक पठान होगा जो बहुत सहयोगी होगा - ये जानबूझ कर इस समाज को हीनभावना से भरने का षड़यंत्र ही था।

नयी पीढ़ी ने पाश्चात्य शिक्षा को अपना लिया है और वे अपने आपको मारवाड़ी कहने में भी संकोच करते हैं। जो मारवाड़ी प्रबंध शैली अनेक वर्षों की गुलामी के बाद भी सलामत रह गयी, वो आजादी के बाद उपेक्षा का शिकार हुई और कुछ ही दशकों में लुप्त हो गयी। आज कल ये फैशन बन गया है, कि प्रबंध सीखना है, तो अमेरिका की कुछ प्रबंध संस्थाओं में जाओ (वो संस्थाएं वाकई महान हैं), लेकिन अफ़सोस तो ये है कि अद्भुत प्रबंध दक्षता रखने वाले मारवाड़ी अपनी नयी पीढ़ी को अपनी प्रबंध दक्षता सिखाने की बजाय इसी फैशन में बह कर विदेश से प्रशिक्षित करवा रहे हैं।

मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक चेतना

मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक चेतना में परिवार, परंपरा, और सामाजिक मूल्यों पर गहरा जोर है। यह समाज अपनी जीवंत कला, संगीत और पारंपरिक शाकाहारी भोजन के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, यह सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेता है और दान-पुण्य जैसे कार्यों में भी योगदान देता है। पारंपरिक मारवाड़ी संस्कृति वीरता और शौर्य को भी महत्व देती है। मारवाड़ी समाज परिवार के साथ रहने और बड़ों का सम्मान करने पर बहुत ध्यान देता है। छोटों के प्रति प्यार और भाई-बहनों का साथ देना भी इसके महत्वपूर्ण मूल्य है।

कला और साहित्य, समाज सुधार

समाज में कला, संगीत और साहित्य की समृद्ध परंपरा है। मारवाड़ चित्रकला और विभिन्न लोक नृत्यों में वीर रस और श्रृंगार के प्रभाव देखने को मिलता है। हेम रत्न सूरि जैसे साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मारवाड़ी समाज में सामाजिक बुराइयों जैसे मद्यपान, तम्बाकू, दहेज और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष करने की भी चेतना है। यह समाज धार्मिक और सामाजिक आयोजनों का सूत्रधार है और इन क्षेत्रों में करोड़ों का दान भी करता है। आधुनिकता और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर में भी मारवाड़ी समाज अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है। इसमें पारंपरिक मूल्यों के साथ-साथ नए सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को अपनाने की क्षमता भी है। मारवाड़ी समाज ने अपनी मेहनत और परिश्रम से देश-विदेश में एक विशिष्ट स्थान बनाया है और यह भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था के शुरु होने से अनेक वर्ष पहले से मारवाड़ी व्यापारी हुंडी व्यवस्था को चलाते आ रहे है, जिसको अंग्रेजों ने पूरी तरह से रोक दिया और फिर आजादी के बाद आधुनिक सरकार ने पूरी तरह से खत्म कर दिया था। ये हुंडी व्यवस्था आज की आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था से कम लागत पर मुद्रा के स्थानांतरण का माध्यम था, जिसमे बिना इंटरनेट के भी आज की तरह ही एक जगह से दूसरी जगह पर मुद्रा का आदान प्रदान होता था।

धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना

व्यापार शुरु करने से पहले वे मंदिर बनाना और 'शुभ लाभ'

लिखना आज भी जारी है। शुभ, यानी हर व्यक्ति का कल्याण लाभ से पहले लिखा जाता है, ताकि हर निर्णय को सबके कल्याण के लिए ले सकें। हर निर्णय को धर्म और अध्यात्म के आधार पर जांचा जाता है। तकनीक के देवता विश्वकर्मा की पूजा की जाती है, तो धन के देवता गणेश और लक्ष्मी को आराध्या माना जाता है। सभी निर्णय सिद्धांतों पर आधारित होते हैं और सबसे बड़ा सिद्धांत ये है कि जो भी निर्णय हो, वो जीवन को जन-कल्याण और आत्मकल्याण की तरफ ले जाए। जीवन का मकसद - केवल ज्ञान की तरफ जाना और इसीलिए हर निर्णय को पुण्य के अवसर के रूप में देखना है, पाप से बचने के प्रयास किये जाते हैं। ऐसी तकनीक नहीं अपनायी जाती थी, जिससे जीवों का नाश हो। हर व्यापारिक निर्णय श्री गणेश और ऋद्धि-सिद्धि की आराधना के बाद किया जाता है। श्री गणेश विघ्नहर्ता हैं तो उनकी पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती हैं। आय का कुछ हिस्सा देवों को अर्पित कर दिया जाता है, जो किसी न किसी रूप में समाज के कल्याण के काम में आये। व्यापार की आमदनी का कुछ भाग गोशाला या ऐसे ही अन्य किसी संस्था को देने से ये माना जाता है कि देवताओं का हिस्सा उनको अर्पित कर दिया गया है। प्राचीन भारत में इसी कारण मंदिरों में प्रचुर संपति दान में आती थी, जो किसी न किसी रूप में समाज के कल्याण हेतु अर्पित की जाती थी।

मारवाड़ी व्यवसायी उस समय के राजा की जरूरत के समय आर्थिक मदद किया करते थे और इसी कारण अनेक मेहरों में मारवाड़ी व्यापारियों को नगर-सेठ की उपाधि दी जाती थी। कई बार देश हित में व्यापार और उद्यम की बलि भी चढ़ा दी जाती थी। भामा शाह द्वारा महाराणा प्रताप के लिए अपने खजाने खोल देने की ऐतिहासिक घटना को हम सब जानते ही है। मारवाड़ी जहाँ पर भी व्यापार करने के लिए जाते थे वहां के स्थानीय लोगों को अपने व्यापार और उद्योगों से लाभान्वित करने का प्रयास करते थे और इसी कारण उनको स्थानीय लोगों से पर्याप्त सहयोग और सम्मान मिलता था। मारवाड़ियों को अन्य भारतीय लोगों की तरह सत्ता पक्ष से विरोध का सामना करना पड़ा। डाकुओं, लुटेरों और अनेक अधिकारियों को मारवाड़ी सरल लक्ष्य नजर आते थे, जिन पर वे अपने अत्याचार आसानी से कर लेते थे। सत्ताधारी उनसे मनमाना टैक्स वसूलते थे। ब्याज की सूक्ष्म गणना किसी को भी अच्छी नहीं लगती थी। लोग मारवाड़ियों से पैसे तो उधार लेना चाहते थे, लेकिन ब्याज नहीं देना चाहते थे, लेकिन मारवाड़ियों की सफलता का आधार ही उनकी सूक्ष्म गणना थी, जिसके कारण वे पैसे के सही इस्तेमाल पर जोर देते थे। आज भी बहुत कुछ इसी तरह से चल रहा है। मारवाड़ी उद्यमी अपनी आय में से कुछ राशि बचा करके समाज के लिए कुछ करना चाहते थे और इसी क्रम में उन्होंने प्याऊ, गोशालाएं, मंदिर, शिक्षण संस्थाएं, अस्पताल और धर्मशालाओं का निर्माण किया। उनके प्रयासों से राजस्थान में विकट परिस्थितियों में भी लोगों को रहने में दिक्कत नहीं आयी। मारवाड़ी उद्यमी आज भी दिवाली से दिवाली अपने व्यापार के बही खाते रखते हैं। बही खाते बहुत ही सुन्दर अक्षरों में लिखे जाते हैं, जिनमे कभी भी कोई त्रुटि नहीं होती है। हर विवरण बहुत ही सहेज कर रखा जाता है। हर दिवाली को नयी पुस्तकों में खाते-बही की पूजा करके शुरुआत की जाती है। हर खाता पूरी तरह से व्यवस्थित होता है। पहले के उस जमाने में कम्प्यूटर नहीं था, तो सारे खाते वर्षों तक सुरक्षित रखे जाते थे।

पूरी दुनिया जानती है, किस प्रकार बजाज, बिरला, सिंघानिया, पीरामल, लोहिया, दुगड़, गोलछा, संघवी, मित्तल, पोद्दार, रुइया, और बियानी आदि घराने अपने व्यापारिक कौशल से आगे बढ़े हैं। बिरला समूह तो इस बात के लिए जाना जाता है, कि वो फैक्ट्री बाद में लगाता है - पहले वहां लक्ष्मी नारायण का मंदिर बनाता है, लोगों को रहने के लिए मकान देता है। है न अद्‌भुत बात। भामा शाह ने राणा प्रताप को दिल खोल कर मदद की, तो जमनालाल बजाज ने गाँधी जी को दिल खोल कर मदद की। इन्हीं नीतियों के कारण अंग्रेजों के आने से पहले भारत में लाखों गुरुकुल, गोशालाएं, धर्मशालाएं कार्यरत थीं और उस समय की शिक्षा मूल्य-परक थी। उस समय में हर घर में श्रवण कुमार जैसे पुत्र होते थे, जो अपने व्यापार से ज्यादा अपने माँ-बाप और देश की सेवा को महत्व देते थे। मारवाड़ी व्यवस्था में कमियां निकालना बहुत आसान है, लेकिन उसकी जो अच्छाइयां हैं, उनको अगर आज का उद्यमी अपनाता है, तो वो निश्चित रूप से पर्यावरण के अनुकूल प्रबंध व्यवस्था स्थापित कर पायेगा और इससे उसका और इस दुनिया का दोनों का भला ही होगा।

जागरूकता अभियान

कन्या भ्रूण, हत्या और दहेज प्रथा जैसी बुराइयों को समाप्त करने के लिए सार्वजनिक जागरूकता अभियान चलाने की आवयकता है। लड़का-लड़की में समानता रखना और शादी-विवाह जैसे आयोजनों में फिजूलखर्ची को छोड़कर सादगी अपनानी चाहिए। सामूहिक विवाह का आयोजन फिजूलखर्ची और दहेज प्रथा जैसी समस्याओं से निपटने में मदद कर सकता है और खुशी की बात है कि ऐसा हो भी रहा है। समाज की अच्छी बातों, जैसे दान-धर्म और समाज सेवा, का अधिक प्रचार करना चाहिए, ताकि समाज को उसकी असली पहचान मिल सके।

समग्र रूप से हिंदी भाषी समाज की बात करें तो उनकी अच्छाइयों में सांस्कृतिक विविधता के बीच एकता लाना, संवाद और सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देना, और वैश्विक स्तर पर संपर्क और कूटनीति के अवसर खोलना शामिल है। इसकी कमियों में भाषा में पश्चिमीकरण और शॉर्टकट का बढ़ना, नई पीढ़ी में भाषा को लेकर हीन भावना, और सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास शामिल है।

आज की नई पीढ़ी में हिंदी को पिछड़ा या असभ्य मानने की प्रवृत्ति देखी जा रही है, जिसका कारण पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण है। सोशल मीडिया पर शॉर्टकट और अश्लील भाषा के अत्यधिक प्रयोग ने भाषा के संस्कार और मर्यादा को प्रभावित किया है। भाषा के संस्कार और आदर्शों में कमी आई है, जिससे समाज में आदर-पूर्वक भाषा और सार्थक जीवन के मूल्यों की उपेक्षा हो रही है।

हिंदी भाषी समाज विभिन्न संस्कृतियों को एक सूत्र में पिरोने का काम करता है, जिससे सामाजिक एकता की भावना बढ़ती है। हिंदी भारत के बड़े हिस्से में बोली जाती है, जिससे यह विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम बनती है। हिंदी वैश्विक स्तर पर संपर्क, शिक्षा और व्यापार के अवसर प्रदान करती है, जिससे सांस्कृतिक समझ और सहयोग को बढ़ावा मिलता है। इसलिए मारवाड़ी हो या गैर मारवाड़ी भारत की सांस्कृतिक धरोहर और साहित्य का संरक्षण करने वाली हिंदी और हिंदी बोलने वाले दूसरे समुदायों को साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति हममें होनी चाहिए।

मारवाड़ी सम्मेलन की प्रासंगिकता

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्मेलन के ९० वर्ष के शानदार सफ़र के वावजूद भी आज समाज के एक बहुत बड़ा वर्ग सम्मेलन का सम्मेलन से जुड़ाव नहीं हो पाया है। सम्मेलन की कोई भी महत्ता उस बड़े वर्ग के लिए नहीं है। उनमें जो निम्न आय श्रेणी के लोग हैं उनके पास समय का अभाव है एवं उनका सोचना है कि सम्मेलन म्हानै रोटी घाल देसी के, और जो उच्च आय श्रेणी वाले हैं वे अपने को सम्मेलन से ऊंचा समझते हैं। इस भ्रांति को मिटाने में सम्मेलन असफल रहा है। सम्मेलन को समाज के दोनों वर्गों की भ्रांति को दूर करने का अथक भागीरथी प्रयास करना होगा।

सम्मेलन संकट निवारण का काम करता है। संकट आने पर इसकी आवश्यकता अनुभव होती है। विभिन्न प्रांतों में समय समय पर अपने समाज के लोगो को स्थानीय लोगों के द्वेष का सामना करना पड़ा, स्थानीय सब लोग द्वेष नहीं करते पर कुछ शरारती तत्व निजी स्वार्थ वश एवं कभी कभी राजनैतिक कारणों से भी न होते हुये भी शोषक होने का तग्मा लगाया। अग्नि शमन दस्ते की उपयोगिता आग लगने पर मालूम होती है, उस विक्षोभ काल में सम्मेलन ने आगे आकर प्रशासन, राजनीतिज्ञों एवं अन्य लोगों से मिलकर समस्या का निराकरण करने का हर सम्भव प्रयास किया, संकट में सम्मेलन सदा समाज के साथ खड़ा रहा है। मारवाड़ी समाज जहां भी प्रवास करता है वहां स्कूल, कालेज, धर्मशाला, अस्पताल, बावड़ी, गौशाला, पशुओं के लिए चर भूमि, मन्दिर, छात्रावास, पुस्तकालय, वाचनालय आदि का निर्माण करता है जो सभी के काम आता है। मारवाड़ी समाज जहां भी रहता है स्थानीय लोगों के साथ मिलजुल कर रहता है। सेवा हमारे संस्कार में है। कोरोना काल में कई महिनों तक निशुल्क भोजन का वितरण, निशुल्क मास्क का वितरण, प्राण रक्षक ऑक्सीजन की उपलब्धता एवं निशुल्क आवागमन के साधन मुहैया कराना जैसी सेवायें पूरे राष्ट्र में उपलब्ध कराई। मारवाड़ी समाज जन्मभूमि एवं कर्मभूमि दोनों के विकास के लिए काम करता है।

आजादी के कुछ वर्ष पूर्व अंग्रेजी हुकूमत ने एक श्वेत पत्र जारी किया जिसके अनुसार अपनी रियासत से बाहर रहने वाले प्रवासी को जहां प्रवास करते हैं वहां की नागरिकता नहीं मिलेगी। समाज के ऊपर बहुत बड़ा संकट था।अपनी ही देश में हम विदेशी होंगे। कोई संगठन नहीं था, कौन आगे बढ़े। उस समय समाज के कुछ जागरूक बन्धु आगे आये। इनमें प्रमुख थे समाज के प्राण पुरुष ईश्वर दास जालान, काली प्रसाद खेतान, बद्री प्रसाद गोयनका आदि। २५ दिसम्बर १९३५ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना कलकत्ता (कोलकाता) में हुई। रामदेव जी चोखाणी को सम्मेलन का संस्थापक अध्यक्ष बनाया गया। संगठन बनने से विरोध का स्वर तीक्ष्ण हो गया। राजनीतिक स्तर पर भी विरोध हुआ और अंततः: अंग्रेजी हुकूमत को झुकना पड़ा। श्वेत पत्र वापस हुआ, इतना कुछ लिखने का मेरा आशय यही है कि संगठन में ही समाज की शक्ति निहित है। कार्यशील संगठन सदा प्रासंगिक है और रहेगा।

अंग्रेजी हुकूमत द्वारा श्वेत पत्र वापस लेने के बाद सम्मेलन समाज सुधार और समाज विकास के काम में लग गया। पर्दा प्रथा के उन्मूलन में सम्मेलन ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई। पर्दा हटते हटते कपड़ों की तंगी हो गई। अब बात शालिनता पर आ गयी है। दहेज उन्मूलन के लिए बहुत काम हुआ। दहेज तो चला गया पर अपने भाई पाखंड और दिखावा को छोड़ गया। ये अब बहुत नाच नचा रहे हैं। बाल विवाह की परम्परा को समूल नष्ट कर दिया। अब तो समस्या ज्यादा देर से विवाह होने की हो रही है। बालिकाओं की शिक्षा और युवकों में उच्च शिक्षा के लिए सम्मेलन ने समाज को प्रेरित किया। आज हमारे समाज के युवक युवतियां विधा के हर क्षेत्र में चुनौती बने हुए हैं। हां, उच्च शिक्षा के चलते बच्चों में इगो की समस्या हो रही है। इसके चलते वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद बहुत हो रहे हैं। एक तरफ सुधार होता है पिछले दरवाजे से नयी समस्या सामने आ जाती है। ज्यादा आधुनिक बनने के चक्कर में विवाह संस्कार में मदिरापान, प्री वेडिंग शूट, आयोजनों में ड्रेस कोड आदि का प्रचलन बढ़ रहा है । सम्मेलन इनका विरोध करता है पर असर बहुत धीमा है कारण अहंकार वश कुछ लोग अपने को सम्मेलन से ऊंचा समझते हैं। गीत-सम्मेलन की तैयारी के लिए कोरियोग्राफर कई दिनों तक घर पर आते हैं फलस्वरूप नतीजा भी सराहनीय नहीं रहा है। इसी प्रकार मेहंदी मांड़ने आजकल युवक आते हैं सो वर्जित होना चाहिए।

संकट की घड़ी में काम आने के अलावा सम्मेलन ने अन्य समाजों में समाज की अच्छी छवि बना रखी है। समय समय पर देश की जानी मानी हस्तियों ने सम्मेलन की बागडोर संभाली। देश के कई पूर्व राष्ट्रपतियों सहित कई सुप्रसिद्ध राजनेताओं ने समय समय पर सम्मेलन के कार्यक्रमों में उपस्थित होकर अपना समर्थन दिया।

सेवा और सहायता प्रदाता तथा दान दाता एवं धार्मिक आयोजनों के कर्ता के रूप में हमारी छवि सराहनीय रही है। सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में समाज मुक्तहस्त दान देता है। यह हम पर अनुवांशिक कृपा है। किसी भी समाज को संगठित होना उसके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

संगठित समाज सशक्त आवाज
संस्कारों की नाव पर समय की धार पर
परस्पर सहयोग की भावना

जैसे मूल मंत्रों के साथ सम्मेलन कल भी प्रासंगिक था, आज भी है और कल भी रहेगा।

समाज को संगठित करना प्राथमिकता हो

डॉ. गिरधारी लाल गोयनका
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नई कार्यकारिणी पूरे दम-खम के साथ मारवाड़ी समाज को संगठित करने, वैचारिक विमर्श को नई धार देने एवं युवाओं को सम्मेलन से जोड़कर भविष्य के सामाजिक सरोकारों को सुसंगत और सुव्यवस्थित करने के लिए समर्पित भाव से काम पर लग गई है। सम्मेलन अपनी स्थापना के शताब्दी दशक में प्रवेश कर रहा है इसीलिए इसका महत्व और इससे अपेक्षाएं बढ़ गई हैं।

प्रवासी मारवाड़ियों की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था होने के नाते अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का कार्यक्षेत्र व्यापक है जिसे समुचित ढंग से संचालित करने के लिए ऐसे समर्पित लोगों के समूह की आवश्यकता है जो समाज के वर्तमान में आवश्यक सुधारों की पहल करने के साथ भविष्य के लिए ऐसी योजनाओं की रूपरेखा तैयार करने में सक्षम हो जिससे समाज का सांगठनिक ढांचा मजबूत बना रहे और इसमें समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व शामिल हो।

सम्मेलन का राष्ट्रीय कार्यालय कोलकाता है जिसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। कोलकाता समाज सुधार आंदोलनों की आदिभूमि है। उन्नीसवीं सदी के मध्य से यहाँ जो समाज सुधार आंदोलन चले उसका राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव पड़ा। चाहे वह सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन हो या विधवा विवाह याकि बाल विवाह सारे आंदोलन यहाँ से शुरू होकर राष्ट्रीय क्षितिज पर फैले और उसके सुपरिणाम भी मिले। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय से लेकर रवीन्द्र नाथ टैगोर और काजी नज़रुल इस्लाम तक आंदोलनों का सिलसिला लगातार चला। इन आंदोलनों के पक्ष में कविता, कहानियाँ, नाटक रचे गए, शहर-गाँव में उनका मंचन हुआ और लोकगीतों के माध्यम से वे लोगों की जुबान तक पहुंचे जिससे आम आदमी की समझ में ये बातें आईं और धीरे-धीरे समाज पौराणिक रुढियों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों से मुक्त होने लगा। बीसवीं सदी के प्रारंभ में शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय की कहानियाँ पढ़ें, उनके उपन्यास पर चिंतन करें तो समाज को सुधारने की ललक स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ही मारवाड़ी समाज ने छोटे-छोटे समूह बनाकर समाज सुधार के प्रति अपने प्रयासों को रंग देना शुरू किया। कलकत्ता के मारवाड़ी समाज की गतिविधियों ने देश के अन्य प्रान्तों में रह रहे मारवाड़ी समाज के लोगों को भी सक्रिय किया और वे भी इस धारा से जुड़ गए। १८८५ में समाज सुधार नामक पत्रिका निकालकर बिहार के आरा के मारवाड़ियों ने बड़ी पहल की। १९१० में इस आंदोलन में एक बड़ा मोड़ आया जब इंग्लैंड से बैरिस्ट्री पास करके लौटे कालीकृष्ण खेतान को समुद्र पार करने के पाप में समाज निकाला दे दिया गया। समाज के प्रगतिशील तबके ने इसके खिलाफ मोर्चा संभाला और तीव्र आंदोलन शुरू किया। बीचबचाव में उस समय प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच चुके बिड़ला परिवार को आना पड़ा और अंततः कालीकृष्ण खेतान को समाज ने स्वीकृति प्रदान की। इसके बाद ही मारवाड़ी समाज में शिक्षा के प्रति अनुराग बढ़ा और किसी तरह व्यापार-बाणिज्य के संचालन की योग्यता से आगे बढ़कर विधिवत उच्च शिक्षा प्राप्त करने की शुरुआत हुई।

इसके बाद आंदोलन का निशाना सदियों पुराने संस्कार बने। सैकड़ों तरह की रूढ़ियों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों से जर्जरित मारवाड़ी समाज को नया जामा पहनाने के लिए कतिपय समर्पित समाजसेवी, विचारक सामने आये और इन्होनें बिना विरोध कि परवाह किये लगातार समाज सेवा और सुधार के कार्यक्रम अपने हाथों में लिए जिसका परिणाम आखिरकार दर्ज़नों विद्यालयों, अस्पतालों और दातव्य चिकित्सालयों के रूप में सामने आया। आज कोलकाता के बड़ाबाज़ार अंचल में विशुद्धानंद विद्यालय, माहेश्वरी विद्यालय, डीडू माहेश्वरी विद्यालय हों, या मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानंद अस्पताल (आमहर्स्ट स्ट्रीट और बड़ाबाज़ार) सब समाज के चंदे से निर्मित ऐतिहासिक धरोहर हैं जिसने मारवाड़ी समाज की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाए।

१९३५ में रजवाड़ों को मतदान के अधिकार को लेकर शुरू हुए आंदोलन की परिणति अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन जैसे राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था के गठन तक पहुंची और समाज को वैचारिक आधार देने के लिए चोटी के समाज सुधारक एकत्रित होकर नेतृत्व में आये। यह वह समय था जब पश्चिम बंगाल की राजनीति में भी मारवाड़ी समाज की प्रतिनिधि भागीदारी थी और एक समय १६ विधायक मारवाड़ी हुआ करते थे जो बंगाली बहुल इलाकों से जीत कर आते थे। स्वर्गीय ईश्वर दास जालान क़ानून मंत्री और बाद में विधानसभा अध्यक्ष तक बने। विजय सिंह नाहर उपमुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचे।

आज जब समाज को समग्रता में देखता हूँ तो बड़ी निराशा होती है। मान-मर्यादा के लिए मर मिटने वाले मारवाड़ी समाज को कतिपय लोगों की असामाजिक गतिविधि ने बदनाम कर रखा है। अर्थ की प्रचुरता ने अनर्थ को आमंत्रित कर दिया है। लोग छोटे-मोटे समारोहों में भी बड़े खर्च करके अपना रुतबा बढाने को बेताब हैं। बैंकों के लोन, आर्थिक संस्थानों से लोन, अपने सगे-संबंधियों, परिचितों से लोन लेकर बेहिसाब खर्च ने दिवाला निकालने वालों का समूह खड़ा किया है जिन्हें अपने किये पर पछतावा तक नहीं है। ये अराजक समूह अपनी करनी से पूरे समाज की इज्ज़त तार-तार कर रहे हैं।

आज इस बात की जरुरत है कि समाज की सभी अग्रणी संस्थाएं, समाज के अग्रणी सेवाकर्मी, सुधारक एक मंच पर एकत्रित हों और सामयिक चुनौतियों से जूझने तथा समाज की बेहतर छवि बनाने के लिए नए नियम प्रतिपादित करें।

सोशल मीडिया और लोकप्रिय माध्यमों में समाज को सुधारने वाली बातों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो, समाज को बदनाम करने वाले लोगों पर अनुशासनात्मक कारवाई हो और अच्छे लोगों को पुरस्कृत कर आदर्श स्थापित किया जाए जिससे ख़त्म हो रही साख को भुलाकर पूरा समाज एक नई शूरुआत के प्रति उत्सुक दिखे।

मैं सम्मेलन के वर्तमान पदाधिकारियों की सोच और सक्रियता को देखकर आश्वस्त हूं। पूरे देश में सम्मेलन को सक्रिय करके समाज सुधारों को जमीनी स्तर पर लागू करने की पहल हो रही है। निकट भविष्य में इसका सकारात्मक परिणाम सामने आएगा।

समाज अर आपणी भासा

– डॉ. मंगत बादल

जद आपां किणी भासा रो अध्ययन करां तो उण में अेकली भासा री ई बात कोनी हुवै बल्कै उण रै दायरै में उण भासा नै बोलणआळा मिनख, बां री सोच, रहण-सहण, संस्क्रिती, सभ्यता, भूगोल, इतिहास आद सगळो कीं आ जावै। जद कोई किणी भासा रो अध्ययन करै तो उण बगत उण रो परिचै भासा रै लोक अर संस्क्रिती सूं भी हुय जावै। उण रै सबदां सूं ओ ई बेरो लाग जावै कै कैड़ो सबद कठै सूं आयो है। इण सूं इतिहासकार उण बगत री समाजिक, आरथिक अर बीजी विसेसतावां रो पतो लगाणै री कोसिस करै। अै सगळी बातां दुनियां री हरेक भासा माथै लागू हुवै। कोई भी भासा इण रो अपवाद कोनी। जद कोई संस्क'त री बात करैलो तो बो वैदिक काल री संस्क'त सूं लेयनै उण रै विकास रै पागोथियाँ माथै चढतो-उतरतो आधुनिक काल रै रचनाकारां ताईं पूग जावैलो। इण पछै ई उण नै उण भासा रो मरम समझ में आवैलो। अध्ययन करणै री आफळ सूं बचणै ताईं ओ कैवणो कितरो सोरो है कै संस्क'त अेक म'त भासा है। उण रो अध्ययन करणै रो मतलब बगत खराब करणो है। उण सूं कीं हासिल नीं हुय सकै। अै बातां म्हैं केई अैड़े लोगां रै मूंडै सूं सुणी है जिका खुद नै विद्वान कैवै।

भासा किणी समाज रो चेहरो हुवै। उण सूं मिनख अर उण रै बगत री पिछाण हुवै। जिकै बगत में मिनख जिकी भासा बोलै उण रै सबदां में उण रो समाजिक इतिहास भी हुवै। हिन्दी में संस्क्त सूं आयोड़ा अैड़ा अलेखूं सबद है जिकां रो भासा वैग्यानिक विस्लेसण करीं पछै उण समाज अर बगत रो इतिहास भी साम्हीं आ जावै। उण नै बोइज मिनख समझ सकै जिको भासा रो मरम समझै। भासा बिना समाज गूंगो है। हजारूं बरसां रो ग्यान अर अनुभव समाज री भासा ई भेळो करनै बचाय'र राखै। भासा जे मिनख नै उण रै अतीत सूं जोड़ै तो साथै ई भविस रो मारग भी दिखावै। अैड़ी भासा जे मर जावै या राजनीतिक अर बीजै कारणां सूं उण नै मार दी जावै तो इण रो मतलब हुयो आप जड़हीण हुयग्या। अैड़ी कौम में पछै आप रो जातीय स्वाभिमान ई कोनी रैवै। जात रो मतलब अठै 'जातीय वैवस्था' सूं कोनी बल्कै किणी रास्टर री उण पिछाण सूं है जिकी बां लोगां नै बाकी दुनियां सूं अळगा करै। बां री अेक खास जग्यां बणावै। अेकानी तो विग्यान नूंई-नूंई खोजां कर इण ग्यान में बधेपो करै अर दूजी कानी आपां आपणी भासा नै ई छोडणै रो कैवां तो इण सूं बड़ी बेवकूफी कांई हुय सकै? कीं चालाक लोगां निजु स्वारथां कारण हुय सकै षास्त्रां में अैड़ो कीं जोड़ दियो हुवै जिकै रो औचित्य आज समझ में कोनी आवै पण उण बगत भी विरोध करणवाळा तो हुवैला ई। जाबक जींवती माखी तो बै कोनी गिटक सकै हा। आज आपणै ई देस में अेक तबको अैड़ो है जिको संस्क'त पढणो पिछड़ैपण री निसानी मानै। केई लोग ओ ई मानै कै संस्कृत पूजा-पाठ, करम-कांड री भासा है जिकी रै माध्यम सूं बिरामण आप री रोजी चलावै। बै लोग पण आ बात भूल जावै कै पुराणै संस्क'त ग्रंथां में जितरो ग्यान-विग्यान है उतरी तरक्की साईंस आज भी कोनी करी। आज आखी दुनियां रा वैग्यानिक इण बात नै मानै कै कम्प्यूटर सारू जे कोई चोखी (परफैक्ट) भाषा है, तो बा संस्क'त है। हजारूं बरसां पैली जिको काम म्हारा रिसी-मुनी करग्या बां रो धिनबाद करणो तो दूर, खुद नै प्रगतीसील कैवणियां कीं लोग पाणी पी-पी नै गाळां काढै।

आजकाल केई लोग अैड़ो अपवाद भी फैलांवता देख्या है जिका पालि अर प्राक'त नै संस्क'त सूं पैली री भासावां बतावै। बै लोग या तो भासावां रै बिगसाव सारू कीं जाणै कोनी या जाणनो कोनी चावै। भसावां रो वैग्यानिक अध्ययन ओइज बतावै कै वैदिक संस्क'त सूं लौकिक संस्क'त अर लौकिक संस्क'त सूं पालि, पालि सूं प्राक'त अर प्राक'त सूं केई अपभ्रंस भासावां रो बिगसाव हुयो। इण रा अैनाण आज भी आप लोक भासावां में देख्या जा सकै। किणी भासा रो महतव उण रै लोक सारू कितरो हुवै आ बात बिना जाणीं किणी भासा नै मष्त बतावणो अग्यानता है। सै सूं पैली आपां अठै वैदिक संस्क'त री बात करांला। वेद जिकी भासा में रचिया गिया है बा वैदिक संस्क'त है। आचारय पाणिनी जद भासा नै व्याकरण नियमां (अष्टाध्यायी) में बांध दी तो उण नै लौकिक संस्क'त कैयो गयो।

आथुण कानीआळा विद्वान जद काल-गणना करै तो बै ईसा सूं पैली अर पछै (अे.सी. अर बी.सी.) रै हिसाब सूं करै। बां कनै काल-गणना रो ओ अेकइज मानदण्ड है। जद कै आपणै अठै काल-गणना रो इतिहास घणो पुराणो है। वैदिक काल में संस्क'त लोक भासा ई ही। उण बगत पण मिनख लिपि सारू कीं कोनी जाणतो। बो जिको कीं कैंवतो बो उण नै आप री स्म'ती में ई राखतो। बां दिनां मिनख री स्म'ती घणी तेज ही। उण रै दिमाग माथै फालतू बातां रो बोझ भी कोनी हो। जिकी बात सुणतो या देखतो बा सदीव सारू उण री स्म'तियां में बस जांवती। वेद बेरो नीं कितरै अरसै ताईं पीढी दर पीढी 'श्रुति' रै आधार माथै चालता रैया। लिपि रो आविस्कार हुयां पछै इण ग्यान नै पाथरां, भोज-पत्रां, ताड़-पत्रां माथै उतारियो गियो। आगै चाल'र आं नै ई 'श्रुति' अर 'स्म'ति' नांव दियो गयो। आथुणआळा विद्वान चाये कितरो ई अंदाज लगावै या इण रै समय नै ईसा सूं दो-चार हजार बरस पैली रो बतावै पण भारतीय 'मनीषा' वां री इण बात नै कोनी मानै। मिनख सभ्यता री सरुवात अर बिगसाव आथुणै चिन्तकां रै हिसाब सूं कीं हजार बरसां सूं बेसी कोनी। बै आ बात मानणै सारू त्यार ई कोनी कै आज सूं पैली भी कदे इण सूं ई ऊँची सभ्यता मौजूद ही। वै भारतीय पौराणिक ग्रंथां री इण बात नै मानणै सारू त्यार ई कोनी।

जिकी भासा जितरी उन्नत हुवैली उण नै बोलणैआळै समाज रो दरजो भी उतरो ई ऊँचो हुवैलो। आप अंग्रेजी,जरमन,रसियन, फ्रेंच आद भासावां रै सन्दरभ में आ बात कैय सको। कदे ओ दरजो संस्कृत भासा रो नै प्रापत हो। आपणै अठै पण राजनीतिक इच्छा सगती, भासा नै लेय'र पोची सोच रै चालतां राजस्थानी भासा इण रो अपवाद है। राजस्थानी मे जितरी विधावां अर पुराणा ग्रंथ है

उतरा बीजी कम भासावां में ई मिलैला। इण रो इतिहास भी हजार बरसां सूं घणो पुराणो है। इण नै बोलणैआळा आखी दुनियां में मिल जावैला। देस रा बड़ा बोपारी अर कारखानेदार,धनपती जितरा मारवाड़ी या राजस्थानी बोलणआळा है उतरा और कोई कोनी। पछै भी बेरो नीं इण भासा नै राजनीतिक मानता क्यूं कोनी? राजस्थानी रा लाखूं ग्रन्थ अर पांडुलिपियाँ आप रै पढ़यै जाणै री आस में पोथी खानां में बंद हैं। बां में कितरी ग्यात अर अग्यात बातां, घटनावां, इतिहास, ग्यान-विग्यान अर किस्सा बंद है इण रो बेरो तो बां नै पढ़यां पछै ई लागैलो। राजस्थानी लोगां रो जातीय स्वाभिमान बेरो नीं कठै गायब हुयग्यो?

भासा विसेसग्यां रो कैवणो है कै आवणाळै बगत में हजारूं भासावां मर जावैली। म्हैं सोचूं राजस्थानी रै उण लाखूं ग्रंथां रो कांई हुवैलो? उण इतिहास नै कुण समझैलो? कांई बो सगळो ग्यान इण स्वारथी राजनेतावां री अग्यानता अर लोलुपता रै कारण खतम हुय जावैलो? अठै अेक सवाल ओ ई उठै कै कांई अेकली भासा ई मरै? जिकी भासावां खतम हुवैली उण री संस्क्रिती, इतिहास अर ग्यान अतीत रै किणी धोरै हेठ दब'र नस्ट हुय जावैलो। बां भासावां नै बोलणआळा काळ रूपी इतिहास रै पानां सूं ई गायब हुय जावैला।

भासा समाज री धरोड़ हुवै। उण री रचना समाज करी है अर समाज में ई उण रो लगोलग बिगसाव हुयो है। पुराणी पीढी नवीं पीढी नै विरासत में धन-दौलत ई कोनी देवै बल्कै इतिहास, संस्क्रिती अर बीजी बातां साथै अेक भासा भी सूंपै। आप री भासा री रक्षा करणो अर आगै बधाणो नवीं पीढी री जिम्मेदारी हुवै अठै पण आजादी पछै केई कारणां सूं आपणै सूं पैली पीढीआळां आप री भासा राजस्थानी नै लेयनै घणी मोटी चूक करदी। राजस्थान में हिन्दी नै प्रमुखता देणै सूं राजस्थानी भासा घणी पिछड़गी। इण री भरपाई हुवणी मुस्कल है। अजे भी राजस्थानी नै उण री जिग्यां नीं देणो राजनेतावां री पद लोलुपता अर आप रा बीजा स्वारथ है। जिकी राजस्थानी संस्क्रिती अर इतिहास माथै हरेक भारतीय नै गुमेज है, भासा रै अभाव में उण रो कांई हुसी? कांई वै भासा रै अभाव में बंच जावैला? इण भांत तो राजस्थानी बोलणआळा अर लिखणआळा लगोलग कम हुंवता जावैला। आज रै आम पढेसरी नै आप पूछोला तो उण कानी सूं जवाब मिलैलो कै बो राजस्थानी बोल तो सकै पण लिख या पढ कोनी सकै। इण रो अेकइज कारण है- सरुवाती पढाई रै पाठ्यक्रम में राजस्थानी रो नीं हुवणो। मायड़ भासा हुंवता थकां भी पढ़्या-लिख्या जादातर लोग आपस में हिन्दी में ई बात करता दिखैला। कांई राजस्थानी बोलणै में आज री पीढी उतरो गरब करै जितरी अंगरेजी में गिटपिट करनै करै? आजादी पछै इतरी सरकारां आई-गई पण किणी भी इण नै रोजगार री भासा बणाणै री कोसिस कोनी करी। रोजगार री भासा बणयां बिना कोई भासा कीकर आगै बध सकै?

स्वारथी अर मौकापरस्त नेतावां भसा, संस्क्रिती अर लोक साथै छळ करियो है। इण कारण बां भासा रै आन्दोलन नै जन आन्दोलन कोनी बणनै दियो। जे भासा रो सवाल बोट साथै जोड़ दियो जांवतो तो राजस्थानी री आ दुरगती कोनी हुंवती। जोड़ै पण कुण? दूध री रुखाळी मिनकी नै सूंप राखी है। आज राजस्थानी मानता भासा आन्दोलन फगत लेखकां रो हुयनै रैयग्यो है। जद विधान सभा रा सदस्य चुणिया जावै तो कोई दो-च्यार सदस्य आप रो भासा प्रेम प्रगटांवतां थकां राजस्थानी में सपथ लेणै सारू दो दिन आप रो जोस दिखावैला पछै टांय-टांय फिस्स। आम मिनख नै ओ बेरो ई कोनी कै भासा बिना उण नै कितरो घाटो हुयो है अर हुवण लाग रैयो है। बां तांई आ बात नेता लोग ई चोखी भांत पुगाय सकै क्यूंके बै सामरथवान है। बै उण नै पूरो करवा सकै। लेखकां रो मूल काम लिखणो है। बां जैड़ा आन्दोलन करिया उणां रो नतीजो तो आप रै साम्हीं है। इण सारू जनता नै जगावणी पड़ैली। बां में आप री भासा रो महतव समझावणै साथै उण री अहमियत भी बतावणी पड़ैली। जठै तांई हिन्दी (खड़ी बोली) रो सवाल है उण रो बिगसाव तो भारतेन्दु काल सूं ई हुयो है जद कै राजस्थानी तो दसवैं सईकै सूं पैली चाली आवै। इण में गद्य-पद्य दोनुंवां में लेखन हुंवतो जद कै हिन्दी में गद्य रचना री सरुवात उगणीसवैं सईकै सूं हुई है। राजस्थान में जितरी विधावां ही उतरी हिन्दी में आज ई कोनी। पछै आ दुभांत क्यूं? आपणै साथै तो 'छाह(छाछ) लेण आई अर घर धिराणी बण बैठी।' बा बात हुई है।

राजस्थानी भासा साम्हीं इतरा अवरोध आवणै रै बावजूद आपां अेक बात गीरबै सूं कैय सकां कै राजस्थानी रो वीरगाथा कालीन, भगती कालीन अर,उणरै बाद रो साहित्य तो सिरै है इज पण वरतमान साहित्य भी बीजी भासावां रै मुकाबलै लारै कोनी। आज रा राजस्थानी रचनाकार लगैटगै सगळी विधावां में रचना करम करै। मात्रा अर गुणात्मकता री द्रिस्टी सूं भी बो लारै कोनी। अब बो बगत आय चुक्यो है जद राजस्थानी नै आप रो सन्मान मिलणो चाहिजै। राजस्थान री जनता सारू भासा रो सवाल घणो बड़ो है। राजनेतावां नै अब चेत जाणो चाहिजै।

शास्त्री कॉलोनी, रायसिंहनगर, राजस्थान

कविता

म्हारी भासा कदै मानस्यो

भोटी और डोगरी बणगी,
राज काज की भासा।
कद जागेला इण रा जायां,
थाक्या ढोल र तासा।।
डूब गया स्वारथ में बेटा,
घाले कुण इब फासा।
इण खातर ई हुवे आपणे,
मानीता रा रासा।।
देवै नीं जठ तक जायोड़ा,
जूतां वाळा घासा।
बठ ताणी नीं कदै राखणी,
आं धेटां सूं आसा।।
पटको पूछो कांई करियो,
कठै इता दिन वासा।
जे सत्ता लेणी व्है पाछी,
सुणल्यो साफ खुलासा।।
मानीता ने जोवै मायड़,
बरस होयग्या कासा।
दस कोड़ां लोगां की है आ,
राजस्थनी भासा।।

– पवन पहाड़िया

Saraogi
e-went
SARAOGI UDYOG PRIVATE LIMITED
EVERY RIDE CRAFTED
FOR INDIA'S SMART FUTURE
FOXY
SARAOGI UDYOG PVT LTD
+91-33-2213-8779/80/81 • info@saraogiudyog.com • www.saraogiudyog.com
E-WENT
+91-83369 01048 • enquiry@e-went.com • www.e-went.com
Corporate Office:
DN - 51, Merlin Infinite, salt lake city, sector 5, 9th floor, 910, Kolkata 700091,W.B.

आलेख

दिखावा भी अहंकार है

रतन लाल बंका
रांची, झारखंड

सुबह का समय था। टीवी पर धार्मिक और आध्यात्मिक भजन आ रहे थे। कबीर का एक मेरा पसंदीदा भजन आने लगा जिसकी कुछ पंक्तियां मैं यहां उद्धत कर रहा हूं:

मत कर माया को अहंकार, मत कर काया को अभिमान
काया गार से कांची, हो काया गार से कांची
रे जैसे ओस रा मोती, झोंका पवन का लग जाए
झपका पवन का लग जाए, काया धूल हो जासी
काया तेरी धूल हो जासी

भजन काफी लम्बा है। मेरा इसको यहां उद्धत करने का जो उद्देश्य है वह इतने से ही सफल हो जाएगा।

मैं यहां धन के अहंकार की बात करूंगा। एक होड़ लगी है। दूसरी रेखा से बड़ी रेखा खींचने की। चाहे कोई भी आयोजन हो। शादी - ब्याह, जीनी - मरनी, विवाह - वर्षगांठ, पूजा - पाठ आदि। अपने बड़प्पन के दिखावे से उन्मत्त होकर इन आयोजनों में पानी की तरह पैसा बहाते हैं। मिलता क्या है, अपने अहंकार की पूर्ति।

आप कहेंगे कि भगवान ने दिया है तो क्यों नहीं। लेकिन धन का सदुपयोग और दुरुपयोग अलग बातें हैं। ऐसे भी उदाहरण हैं जहां आयोजन तो सादगी से किया गया और उस उपलक्ष्य पर जरूरतमंदों को दान देकर पुण्य कमाया गया।

इवेंट मैनेजमेंट वाले जैसे नचायें, पूरा परिवार खुशी-खुशी वैसे ही नाचता है। इवेंट वाले नये नये फिड़के रचते हैं। वे जो कुछ नया ला सकते हैं उसी में उनकी गुणवत्ता है। इवेंट मैनेजमेंट के द्वारा सादगी से आयोजन करवा कर अच्छा उदाहरण बन सकते हैं। लेकिन दिखावे की मानसिकता की जड़ में अहंकार ही तो है। अपने को ऊंचा और दूसरों को नीचा दिखाने की होड़। और ये किसको दिखाना चाहते हैं। समाज सब कुछ समझता है। आप क्या हैं। हर सेर पर सवा सेर बैठा है। दिखावे की प्रवृत्ति से बाकी समाज पर बोझ है। कुछ के लिए उदाहरण, कुछ के लिए मजबूरी। इसके अलावा ये परिवार के संस्कारों को भी बर्बाद करती है। ये दुख की बात है कि समाज के संभ्रांत लोग भी इस होड़ में पीछे नहीं हैं।

आजकल दिखावे और पाखंड के पीछे लोग इस तरह पागल हैं कि ऐसा नहीं करेंगे तो गाड़ी छूट जायेगी। पैसा बहुत मेहनत से कमाया जाता है। उसका सदुपयोग ही नीतार्थ है। बाबूजी कहा करते थे बेटा कभी किसी की आह मत लेना। वहीं किसी जरुरतमंद की मदद कर दें तो उसके अन्तर्मन से जो आशीष निकलेगी वह हमारी मुक्ति की राह तय करेगी। इसमें कीर्ति मिलेगी और दिखावे में अपयश मिलेगा।

इस विषय पर पुरातन काल से कहा जाता रहा है।

गीता में भगवान कृष्ण ने अहंकार को पाप बताया है।

संत कबीर ने कहा -

'बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर,
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

रहीम खानखाना ने कहा -

बड़े बड़ाई ना करें, बड़े ने बोलें बोल,
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरो मोल।

शायरा शबीना अदीब ने कहा -

बजो खानदानी रईस हैं, वो मिज़ाज रखते हैं नर्मअपना,
तुम्हारा लहजा बता रहा है, तुम्हारी दौलत नई-नई है।

कृपया मेरी बात को अन्यथा न लें। स्व हित और समाज हित की बात कही है। बड़े बड़े पूंजीपति और उद्योगपतियों को देखा है हवा के एक झोंके से मटियामेट होते। जब चिड़िया खेत चुग जायेगी फिर पछताने से क्या होगा।

शुभम् करोती कल्याणम्।

आलेख

युवा शक्ति : उज्ज्वल भारत की आधारशिला

भारत का भविष्य उसके युवाओं के सपनों, संकल्प और परिश्रम पर टिका है। आज का युवा केवल समय का पात्र नहीं, बल्कि परिवर्तन का वाहक है। उसकी ऊर्जा, उसकी कल्पनाशीलता और उसकी कर्मठता ही राष्ट्र को नई उंचाईयों पर ले जाने की क्षमता रखती है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि युवा अपने व्यक्तित्व को निखारें, मूल्यों को अपनाएं और जीवन को सकारात्मक दिशा दें।

सफलता का अनिवार्य सूत्र

एक सशक्त व्यक्तित्व वही है, जो सोच में स्पष्ट, व्यवहार में संतुलित और निर्णयों में दृढ़ हो। युवाओं को चाहिए कि वे समय का सम्मान करें, आत्म-अनुशासन विकसित करें और निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति बनाए रखें। आत्मविश्वास के साथ विनम्रता- यही संयोजन चरित्र को ऊंचा उठाता है। जीवन की चुनौतियां बाधा नहीं, बल्कि संभावनाओं के द्वार खोलने का अवसर होती हैं; इन्हें स्वीकार करना ही सच्चा विकास है।

कर्तव्य और चेतना का संगम

युवाओं में उमड़ता देशप्रेम राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। देशप्रेम केवल भावनाओं का उत्सव नहीं, बल्कि व्यवहारिक जिम्मेदारी है। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, समाजसेवा, सत्यनिष्ठ कार्यशैली, नैतिकता और अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन- ये सभी आधुनिक राष्ट्रभक्ति के वास्तविक स्वरूप हैं। जब युवा जागरूक होते हैं, तो देश स्वतः प्रगति की राह पकड़ लेता है।

भारतीय संस्कारों की धरोहर

हमारी भारतीय सभ्यता **"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव"** के संदेश पर आधारित है। बड़ों का सम्मान हमें न केवल संस्कारवान बनाता है, बल्कि उनके अनुभवों से जीवन का वास्तविक मार्गदर्शन भी मिलता है। जिन युवाओं के व्यवहार में नम्रता और आदर का भाव होता है, वे हर परिस्थिति में आदर और सफलता पाते हैं।

गौरवमयी विरासत

विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति अपने आप में एक जीवन दर्शन है। योग, अध्यात्म, सह-अस्तित्व, अहिंसा, सदाचार, परिवार-प्रधान जीवन, कला, विज्ञान, संगीत, साहित्य- ये सभी तत्व युवाओं को जीवन की समग्रता का ज्ञान कराते हैं। आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़े रहना ही संतुलित विकास का मार्ग है।

युवा ही बदलेंगे भारत की दिशा

आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा अपने भीतर छिपी शक्तियों को पहचानें और अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाएं। अनुशासन, मेहनत, संस्कार, दूरदृष्टि और राष्ट्रहित का भाव- ये पांच स्तंभ किसी भी युवा को सफलता के शिखर तक पहुंचा सकते हैं।

याद रखें- "युवा बदलते हैं तो युग बदलता है, और जब युग बदलता है तो इतिहास लिखा जाता है।"

श्री राजेश कुमार सोंथलिया
– (लेखक प्रतिष्ठित उद्योगपति, समाजसेवी एवं प्रेरक व्यक्तित्व हैं)

प्राची री बहादुरी

रामजी लाल घोड़ेला
बीकानेर, राजस्थान
लेखक केदारनाथ भागिरथी देवी कानोड़िया,
राजस्थानी भाषा बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित

प्राची आठवीं जमात मांय पढ़ती ही। शेरपुर गांव रो ओ स्कूल बारहवीं तक रो है। बारहवीं जमात पास कर्यां पछै दसेक किलोमीटर दूर सहर मांय जाय'र पढणो पड़ै। प्राची आपरै मा आ बाप री आस अर भरोसो दोनूं है। प्राची रै कोई भाई नीं है। दो दिनां पछै राखी रो उछव है। इण दिन बैना आपरै भाई रै राखी बांधै अर भाई बैन री रक्षा रो वचन देवै। आ परम्परा जूनी है। किनै भी ठाह कोनी कै ओ राखी रो उछव कदै सूं मनाईजै। प्राची रा बापू अेक सामान्य परिवार री तर्यां ई गुजर बसर करै। इणा रै पंद्रै बीघा जमीन है। इण मांय फसल निपजै। उपरलो साथ देवै तो चौखी तर्यां पार पड़ज्या। पण इण बरस अबार तांई ठीक ठाक ही बिरखा हुयी है। इण बार पंद्रै अगस्त सूं पांच दिन पैलां ही राखी रो उछव पड़ै।

प्राची री भुआ रो राखी उछव सूं चार दिन पैलां फोन आयो कै बा राखी सूं अेक दिन पैलां आवैगी। प्राची री भुआ हरेक बरस प्राची रै बापू नै राखी बांधणै आवै। मेह आंधी कदैई चुकै कोनी। प्राची नै आपरी भुआ रै आवणै रो घणो कोड हो। प्राची री भुआ आपरै बेटै आकाष नै भी साथै लेय'र आवै अर प्राची भी आकाष रै राखी बांध'र घणा कोड करै।

प्राची रा बापू प्राची नै भणाय'र फौज मांय भेजणै रो सुपनो देखै। बै उणनै भणावणै मांय रूचि राखै। प्राची निडर सुभाव री टाबरी है। राखी उछव री तो छुट्टी हुवै। इण कारण सगळा स्कूलां मांय अेक दिन पैलां ही ओ उछव मनाईजै। प्राची रै स्कूल मांय भी राखी रै अेक दिन पैलां राखी रो उछव मनाईज्यो। स्कूल रा संस्था प्रधान अर अध्यापकां टाबर - टाबरियां नै बधाई दीनी अर उछव रो महत्व बतायो। ओ भाई बैना रे पवित्र रिष्तां रो उछव हुवै अर भारत री सनातन संस्कृति रो प्रतीक मानीजै।

स्कूल मांय उछव पछै छुट्टी हुयगी। सगळा टाबर टाबरियां अपारै घरां कानी व्हीर हुआ। प्राची अर तीन टाबरियां नै मैडम जी दरी, टैबल अर कुर्सियां कमरां मांय राखणै वास्तै रोक लीनीं। गांव रो ओ स्कूल सहर रै मार्ग पर आबादी सूं पांचेक सौ मीटर दूर पड़ै। गांव रै अेक भामासाह री स्कूल रे नाम दान करयोड़ी जमीन पर ओ स्कूल बण्यो है। इण वास्तै जद टाबर टाबरियां स्कूल जावै तो न्यारा न्यारा समूहां मांय मस्ती सूं जावै - आवै। स्कूल रो सामान कमरै मांय राख'र प्राची आपरी तीनूं साथणां साथै घर कानी व्हीर हुयी। बाकी सगळा तो घरै ई पुगग्या हा। तीनूं जणी आपसरी मांय बात्यां करती आ रैयी ही। बै बतावै ही कै उणां आपरै भायां वास्तै कितरी सोवणी राखी ल्यायी है। प्राची उणो री बात्यां सुणै ही। उणरो मा जायो भाई तो हो कोनी। बा तो आपरै भुआ रै बैटे आकास रै ही राखी बांधैगी। आकास रै राखी बांध'र प्राची नै घणो हरख हुवतो।

प्राची आपरी दोस्तां साथै स्कूल सूं घरै आ रैयी ही। उण देख्यो कै मारग पर अेक कार खड़ी ही अर तीनूं जणां अेक टाबर नै जबरदस्ती कार मांय घालणै री कोषिस करै हा। बाद मांय ठाह लाग्यो कै ओ टाबर स्कूल री बारहवीं मांय भणीजतो हो। इणरो नाम मोहित हो। बै तीनूं जणां मोहित नै घींस'र कार मांय घालै हा। मोहित रोळो मचावणै लाग्यो तो उणां मोहित रै मूंडै पर हाथ राख दीनों। तीनूं जणां मक्कू हा। मोहित बिचारो टाबर। प्राची अर उणरी तीनूं सहेलियां नै समझणै मांय देर नीं लागी। बै तीनूं बदमाष मोहित रो अपहरण करै हा। दोपहर रो बगत हो। मारग सुनसान हो। उण तीनूं बदमाषां मोहित नै कार मांय पटक लीनों। मोहित री चीख पुकार रो कोई असर नीं हो। प्राची निडर ही। बै जद कार स्टर्ट कर'र रवाना हुया अर कार नै भजावै हा, उणी बगत प्राची मारग सूं अेक भाटो उठायो अर ड्राईवर कानी कार पर जोर सूं फैंक्यो। भाटो कार रो काच तोड़'र ड्राईवर रै माथै पर लाग्यो। कार रो बैलेंस बिगड़ग्यो अर कार मारग सूं नीचै जाय'र पलटगी। उणां मांय सूं दो टाबरियां भाज'र गांव कानी गई अर गुवाड़ मांय बैठ्या लोगां नै घटना रै बारै मांय बतायो। गांव आळा भाज'र आया। कार रै दरवाजा लॉक हा। गांव आळा कार रा दरवाजा तोड़'र बदमाषां अर मोहित नै बारै काढ्या। उणां मोहित रो मूंडो कपड़ै सूं बांध राख्यो हो। बदमाष घबराग्या। मोहित लारली सीट पर दोनूं बदमाशां रै बिचाळै हो। गांव आळा पैलां तो बदमासां री पिटाई करी अर पछै पुलिस नै फोन कर'र उणां नै सूंप दीनां। मोहित रो अपहरण हुवणै सूं बचग्यो। पुलिस आळा प्राची री हिम्म्त नै सरायो। मोहित रै बापू अर मा नै जद ठाह लाग्यो तो उणां प्राची अर उणरै मा बापू नै धिनवाद दीनों।

प्राची लारलै दो बरसां सूं आत्म रक्षा री ट्रैनिंग लेवे ही। उणनै आपरी रक्षा करणै बारै बतायो गयो हो। आ आत्म रक्षा री ट्रैनिंग लारलै कई बरसां सूं सरकारी स्कूल मांय पढ़णै आळी री छठी सूं बारहवीं री टाबरियां नै दी जावै। आथणै रै बगत प्राची री भुआ अर आकाष भी आय गया। प्राची री भुआ नै जद उणरी निडरता अर बहादुरी रै बारै मांय ठाह लाग्यो तो उण प्राची नै गळै लगा लीनों। प्राची री सूझबूझ सूं मोहित रो अपहरण हुवणै सूं बचग्यो अर बदमास भी पकड़ मांय आयग्या।

अगलै दिन दिनूगै ही मोहित अर उणरा बापू अर मा प्राची रै घरै आयग्या। बै प्राची री निडरता अर मोहित री जान बचावणै वास्तै प्राची सूं मोहित नै राखी बंधावणै री चावना साथै आया हा। उणां नै भी प्राची पर घणो हरख हो। मोहित रा बापू राखी भी साथै लाया हा। उणां कैयो प्राची म्हारी भी बेटी है। उणां प्राची नै आषीर्वाद दीनों। प्राची मोहित अर आकाष दोनां रै राखी बांधी। उणां कैयो प्राची देवी रो रूप है, जिण उणां रै बेटे री जान बचाई।

तीन दिनां पछै पन्द्रहै अगस्त रो उछव हो। इण मौके पर गांव रा सरपंच प्राची नै सनमानित कर्यो। स्कूल रा संस्था प्रधान अर दूजा अध्यापकां नै भी प्राची री निडरता पर गुमैज हो। प्राची रै बापू अर मा नै भी आपरी बेटी पर नाज हो। गांव मांय केई दिनां तक प्राची री हिम्मत री चर्चा हुवती रैयी। गांव री पंचायत राज्य सरकार रै माध्यम सूं टाबरां री वीरता पर दियो जावण आळै प्रधानमन्त्री वीरता पुरस्कार वास्तै प्राची रो नाम केन्द्र सरकार नै भेजणै रो निरणै कर्यो। प्राची जैड़ी बेटी पर नाज हुवणो सुभाविक है।

सासू–बहू अर राजस्थानी

बंशीधर शर्मा
लेखक-सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान से सम्मानित

एक दिन नूंवी बीनणी सासु नै बोली–सासुजी थै मारवाड़ी में बोलो जणा घणा चोखा लागो। सासु कयो–तूं भी सगळां सूं घर में बोल–बतलावण आपणी बोली में कर्‌या कर। बीनणी सिर झुकाती बोली– मनै तो आ भासा बोलणै में अळगत आवै है– जीभ उथलीजै कोनी। रूक-रूक कर पढ़णै में अमूजणी आवै।

सासु समझाई– पैली पोत सगळां नै इयांही लागै, पण धीरे-सुस्तै रपट पकड़ीज ज्यावै। म्हें किसी मां रे पेट सूं सीख'र आई ही कै? आपणां तीज-तिंवार, बरत-बडूल्या, ईग्यारस, अजूणा, चौथमाता, सूरज रोटा आद री का'ण्यां आपणी निजू भासा में है। आ में आपणी संसकीरती रौ उजळो रूप लखावै। आपणी भासा-बोली रौ बरताव आपणो मान बढ़ावै– हियै च्यानणो करै अर आगै रौ मारग बतावै। पराई उधारी औढ़्योड़ी भासा निहाल थोड़ी करै। स्यांणा संत कही है –

पूत खिलायां पार का, कारज सरै न कोय।
घर में बसती गोमदा, आप जण्यां सूं होय।।

सासु आगे बोली– तूं स्वाणी समजणी है, घर घराणै री है– थोड़े में घणो समझ ज्यासी, ओ म्हारै मन रौ बिसवास है।

बीनणी बात कै पळोथण लगावंती बोली– नहीं सासुजी, म्हें तो काल की जलमी हूं, थानै म्हारै सूं घणो ग्यान है। थारै सामनै तो म्हें नूंह जती ही कोनी। मनै थांरो केवणो फूटरो लागै।

सासु मुळकी अर बोली– देख, एकर थोड़ो अटपटो लागै पण धीरै सैजे पड़ ज्यावै। ईंमै एक बात खास है कै भासा रौ उच्चारण ठीक होवणो चाहीजै, नईं तो बात रौ कूटळो हो ज्यावै। थोड़ी सी बानगी देवूं तो थारी समझ में बात आ ज्यासी। 'घणी घणी खम्मा' ने 'धनी धनी खमा' अर 'आणा–टाणा में आवणों' नै 'आना–टाना में आवनो' बोलणों चोखो थोड़ो ही लागै। 'कुण–कुण आया' ने 'कुन–कुन आया' बोल्यां गुड़ गोबर होवणो ही है। बीयां ही 'हांती थोड़ी हळबळ घणी' में 'हांती थोड़ी हल बल धनी' चोखी कोनी लागै। 'कामणगारी' जद 'कामनगारी' बण ज्यावै और 'खळ-बळ' 'खल बल' हो ज्यावै तो बात लारलै आसण आ ज्यावै। 'पाणी आडी पाळ' ने 'पानी आडी पाल' रौ बोलणों ले डूबै। भैंस री 'खळ' नै 'खल' बोल्यां भासा अर भेंस दोन्यां रौ मिजाज बिगड़ ज्यावै। 'बडेरां री गाळ, घी री नाळ' हुवै पण ब्याव मं जुंवाई ने सींठणा देंवती लुगायां जद 'थांनै साळ्यां देवै गाल' गावै तो अरथ को अनरथ होवणो ही है। बीनणी मुळकी अर बोली–सासुजी एक काम करो, थे राजस्थानी सिखाणै री पोसाळ खोल ल्यो। सासु बोली– बावळी, न्यारी पोसाळ खोलण री कै जरूरत है, आपणै घरां में आपस में आपरी भासा में बात करो। घर-घर में पोसाळ हो ज्यासी। बीयां भी स्याणां मिनख केवै है कै, परिवार टाबर री पैली पोसाळ हुवै।

बीयां देखै तो राजस्थानी री संसार री तेरह सिमरध भासा में गिणती हुवै। केई विश्वविद्यालय इण नै मानता दे राखी है। अमरीका री शिकागो, रूस री मास्को, लंदन री कैंब्रिज समेत केई विश्वविद्यालयां में इण रौ अध्ययन–अध्यापन चाल रियो है। राजस्थानी भासा रौ लूंठो साहित भंडार है अर सबसुं बडो सबद कोष भी इण भासा रौ है। भासा री सगळी कसौटी पर राजस्थानी खरी ऊतरै है पण अणेसो सरकारी उदासीनता रौ है।

सासु हूंकारा देंवती बीनणी नै कयो– तूं घूमर रौ लोक निरत तो देख्यो ही है, घूमर रो दुनियां रै दस नाचां में चौथो स्थान है। 'काळबेळिया' निरत नै तो यू.एन.ओ. विश्व विरासत घोषित कर राखी है।

टैगोर मायड़ भासा नै 'मातृ दुग्ध' बतायो है। कवि री ओळ्यां है –

रंग-रंग रा फूलां जेड़ा
सबदां रो गळ हार,
टाबर रै मूंडे में मायड़
रै दूधां री धार।

बीनणी नै पाछी हंकराती सासु कयो– आपां धरां में आपणी भासा बोलणी छोड दी अर धारली, जाणै आंधै री माखी राम मतेई उडासी या रामदेव जी रौ तंदूरो राम बजासी। कबि री चेतावणी –

हुवै नईं जिण देस में, मां भाषा रौ मान।
कियां पाय बो देसड़ो, परदेसां सनमान।।

मायड़भाषा बोलतां जका करै है लाज, बां कारण ही मानता नीं देवै है राज। सांची बात है। चेतो करणै री जरूरत है।

बड़ भागी बो देश है, जलम्या जठै सपूत।
मायड़ भासा रा बणै, परदेशां में दूत।।

आपरी भासा उन्नति रौ मूळ मंतर है। राजस्थानी, मारवाड़ मंदाकिनी मीरां रै पद री भासा है जका देस-दिसावर में गूंजै। इण वास्तै आपसरी री बोल बतळावण आपरी मायड़ भासा में करस्यां तो सुख पास्यां। समझी कांई?

अती देर ताईं बीनणी, सासुजी री बात सतनारायण री कथा ज्यूं सुणै ही अर बोली– सासुजी म्हनें भी कठैई पढेड़ी याद आवै है कै राजस्थानी साहित वास्तव में जीवण रौ साहित है। दुख री बात है कै राजस्थानी साहित रै बारै मं केई लोगां खोटी-खोटी धारणावां फैला राखी है। लोग आ ही केंवता फिरै कै, इण में लुगायां रा गीत, ढाढी-ढोल्यां रा दारूड़ा-मारूड़ा, ख्याल तमासा, फागण-फांटा अर मुकलावा बहार, बस इतो ही राजस्थानी साहित है। राजस्थान रा गीत तो इस्या है कै संसार री थोड़ी घणी भासावां में लाद ज्यासी। हिन्दी, गुजराती अर बंगला रा बिदवान राजस्थानी गीतां री घणी बडाई करी है। गिरस्त जीवण रा फूटरा आदर्श बां में है जका सूं गिरस्ती सुरग बणज्यावै। बां पर चोखी सूं चोखी कवितावां निछाबर है। राजस्थानी भासा में साहित रौ भंडार भर्‌यो पढ़्यो है।

सासु बीनणी नै बीच में ही टोकती बोली– बस आ ही समझणै री बात है। आपणी बोली अर भासा आपां ने जड़ां सूं जोड'र राखसी। कवेसर कन्हैयालाल सेठिया री चेतावणी री ओळ्यां आंख्यां खोलण वाळी है –

खाली धड़ री कद हुवै
चेरै बिन्यां पिछाण,
मायड़ भासा रै बिन्यां
क्यां रौ राजस्थान?

सम्मेलन अतीत के झरोखों से

सम्मेलन के **हीरक जयन्ती समारोह (१९९६)** को सम्बोधित करते तत्कालीन महामहिम **राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा**।

तत्कालीन **प्रधानमंत्री श्री इन्दर कुमार गुजराल** के साथ सम्मेलन के पदाधिकारीगण।

सम्मेलन के **२१वें अधिवेशन** में तत्कालीन महामहिम **उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत** एवं **पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री राम निवास मिर्धा** सम्मेलन के पदाधिकारियों के साथ।

१९८६ में महामहिम **राष्ट्रपति ज्ञानीजैल सिंह** दीप प्रज्जवलित कर **स्वर्ण जयंती समारोह** का उद्‌घाटन करते हुए सम्मेलन के तत्कालीन सभापति श्री नंदकिशोर जालान।

सम्मेलन अतीत के झरोखों से

सम्मेलन के कौस्तुभ जयन्ती समारोह में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल की अगवानी करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।

सत्र २०२३-२५ महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के शिष्टमंडल की भेंट।

सम्मेलन के २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पधारने के लिए महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी को निमंत्रण देने हेतु उनसे मिला सम्मेलन का प्रतिनिधिमंडल; साथ में सांसद श्री सुदीप बन्द्योपाध्याय।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द की कोलकाता यात्रा के दौरान उनसे मिलता सम्मेलन का प्रतिनिधिमंडल; परिलक्षित हैं (बायें से) सर्वश्री संतोष सराफ, रामअवतार पोद्दार, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, महामहिम राष्ट्रपति, प्रह्लाद राय अगरवाला, सीताराम शर्मा एवं शिव कुमार लोहिया।

सम्मेलन के सत्र २०२५-२७ की झलकियाँ

राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करते श्री पवन कुमार गोयनका

६-७ सितंबर २०२५; दिल्ली में आयोजित अ.भा.मा.स. के २८वें राष्ट्रीय अधिवेशन में मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने समारोह का उद्घाटन किया। चित्र में परिलक्षित (बायें से); सर्व श्री मधुसूदन सीकरिया, सुभाष अग्रवाल, कैलाशपति तोदी, राजेश सिंघल, केदारनाथ गुप्ता, बसंत पोद्दार, संजय गोयनका, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, पवन कुमार गोयनका, शिव कुमार लोहिया, रंजीत जालान, राज कुमार केडिया, श्याम सुंदर अग्रवाल, हरि प्रसाद कानोड़िया, संतोष सराफ।

६ सितंबर २०२५; दिल्ली में आयोजित अ.भा.मा.स. के २८वें राष्ट्रीय अधिवेशन की विषय निर्वाचनी समिति की बैठक

७ सितंबर २०२५; दिल्ली में आयोजित अ.भा.मा.स. के २८वें राष्ट्रीय अधिवेशन की खुला सत्र एवं समापन समारोह की बैठक

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका एवं दिल्ली के प्रांतीय पदाधिकारियों के प्रतिनिधि मंडल से हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय श्री नायब सिंह सैनी से शिष्टाचार भेंट

सम्मेलन के सत्र २०२५-२७ की झलकियाँ

१९ सितम्बर २०२५ को कोलकाता सिटिजन्स इनिशिएटिव द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री केदारनाथ गुप्ता का सम्मान

१ अक्टूबर २०२५ को दिल्ली की सामाजिक संस्था द्वारा आयोजित दिपावली समारोह में दिल्ली सरकार के कला, संस्कृति एवं भाषा मंत्री श्री कपिल मिश्रा से भेंट

२ अक्टूबर २०२५ को अ.भा.मा.स. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन गोयनका द्वारा दिल्ली के एक समारोह में बतौर मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के गृह, विद्युत, शहरी विकास एवं शिक्षा मंत्री श्री आशीष सूद का सम्मान करते हुए।

धनतेरस पर केन्द्रीय कार्यालय में लक्ष्मी गणेश पूजन

२ नवंबर २०२५; अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बैठक का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका तथा सम्मेलन के गणमान्य पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। चित्र में बाएँ से दाएँ: कैलाशपति तोदी, संतोष सराफ, नन्द लाल रूँगटा, बसंत कुमार सुराना, पवन कुमार गोयनका, पवन कुमार बंसल, केदार नाथ गुप्ता, सुभाष अग्रवाल, राकेश कुमार बंसल, चांदमल अग्रवाल, सुरेश चंद्र अग्रवाल, नंद किशोर अग्रवाल, सुषमा अग्रवाल, कैलाश चंद काबरा, पवन कुमार जालान तथा गिरधारी लाल गोयनका।

सम्मेलन के सत्र २०२५-२७ की झलकियाँ

१ नवंबर २०२५ ; अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान सत्र (२०२५-२७) की प्रथम अखिल भारतीय समिति की बैठक में शामिल राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रांतीय पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

१ नवंबर २०२५ ; अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार की श्रद्धांजली सभा सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका की अध्यक्षता में संपन्न।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन द्वारा सीताराम रूँगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन का निर्माण कार्य का शुभारंभ २६ नवंबर २०२५, २५ए, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता

उद्‌गार

सम्मेलन के प्राण-पुरुष स्व. ईश्वरदास जालान

धन और संपत्ति को गरीबों के उत्थान में लगा सकें, और देश की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में सहायक बन सकें तो यह समाज न केवल जनता का आदर और सम्मान ही प्राप्त कर सकता है, बल्कि देश का नेतृत्व ग्रहण कर सकता है। भामाशाह ने यदि राणाप्रताप को उनकी विपत्तियों में सहायता नहीं पहुँचाई होती तो भामाशाह का नाम आज कौन याद करता। हजारों ही अमीर आए और चले गए, किंतु भामाशाह को हम आज भी याद करते हैं।... मारवाड़ी समाज आज भारत के जिस अंचल में है, उसका अपना बनकर उसे अपना बनाए, यही उसका परम पुरुषार्थ है।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

जिस महान एवं पवित्र उद्देश्य को लेकर हमलोग यहाँ उपस्थित हुए हैं, वह उद्देश्य है संपूर्ण मारवाड़ी समाज का सामूहिक संगठन, ऐसा संगठन जो जाति में नवजीवन का संचार करने वाला हो, उसके कार्यकर्ताओं में उल्लास, सजीवता एवं कर्मोद्यम का भाव भरने वाला हो और जिसमें समाज की विभिन्न शाखाएँ संबद्ध हों, अपने जातीय हित और उससे भी वृहत्तर संपूर्ण देश के स्वार्थ से संबंध रखने वाले समस्त प्रश्नों पर विचार करें और अपना कर्तव्य स्थिर करें।

– स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी
१९३५-१९३८

समाज के सुधार की समस्या वर्षों से हमारे सामने है और हम उस पर विचार कर रहे हैं। किंतु यह विषय इतना विवादास्पद है कि हमने आपस में कहीं तर्क-वितर्क किया भी है, पर खास ध्यान आकर्षित करना उचित नहीं प्रतीत होता। मैं उसे भविष्य के लिए छोड़ देता हूँ किंतु यह चेतावनी दे देना भी जरूरी समझता हूँ कि हम चाहें अथवा नहीं, सामाजिक समस्या का निकट भविष्य में सामना करना ही पड़ेगा। आज नहीं तो कल हमको एकत्र होकर अपने समाज के संपूर्ण संगठन की योजना और सामाजिक पहेलियों का निदान करना ही पड़ेगा।

– स्व. पद्मपत सिंघानिया
१९३८-१९४०

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

आज आए दिन सामाजिक त्योहारों और उत्सवों में फिजूलखर्ची देखने में आती है। मैं समाज के सभी लोगों से यह अनुरोध करता हूँ कि ऐसे सामाजिक अवसरों पर वे अपने खर्च को उचित सीमा के बाहर न जाने दें। मेरा यह अनुरोध केवल उन्हीं से नहीं जिनके पास धन का अभाव है वरन् मैं उन लोगों से भी अनुरोध करता हूँ जिनके पास प्रचूर धन है, क्योंकि यह मानव स्वभाव है कि दूसरी श्रेणी की देखा-देखी पहली श्रेणी के लोग अपनी परिमित आर्थिक अवस्था के बावजूद दिखावे और आडंबर में उनकी नकल करने को आतुर दिखाई देते हैं।

– स्व. बद्रीदास गोयनका
१९४०-१९४१

हमारा राजनीतिक स्वार्थ और भारत का राजनीतिक स्वार्थ एक है। मैं जातीयता का पक्षपाती नहीं हूँ इसलिए अपनी जाति के लिए विशेष अधिकार प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं रखता। जिस कार्य में भारत का हित है उसी कार्य में भारत की प्रत्येक जाति का हित है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का आदर्श राष्ट्रीय है। जिन देशी रियासतों के हम निवासी या प्रवासी हैं उनकी शासन प्रणाली में परिवर्तन करना तथा प्रतिनिधित्व प्राप्त करना और उस प्रणाली को विधानयुक्त बनाना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

– स्व. रामदेव पोद्दार
१९४१-१९४३

आपस की हमारी फूट पर हमने धर्म की छाप लगा ली है और इस तरह के धार्मिक अंध-विश्वासों ने हमको स्वतंत्रता से विचार करने के योग्य भी नहीं रखा है। धर्मभीरु होना हम अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों और रुढ़ियों एवं नाना प्रकार के बंधनों ने हमें मनुष्यता से गिरा दिया है।

– स्व. रामगोपाल जी मोहता
१९४३-१९४७

किसी भी समूह को अपना भावी कर्तव्य निश्चित करने के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी प्राचीन अवस्था को समझे, वर्तमान का अवलोकन करें और भविष्य की ओर देख अपने कर्तव्य का निश्चय करे। मारवाड़ी सम्मेलन को और उसके सारे कार्य को उसी निगाह से देखना चाहता हूँ। गुणों को देखने के साथ ही अवगुणों का अवलोकन भी जीवन में उपयोगी होता है, इस तत्व का भी मुझे स्मरण है।

– स्व. बृजलाल बियाणी
१९४७-१९५४

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

हमें बदलते हुए समय के साथ चलना होगा। आज के युग में पर्दा और दहेज जैसी कुप्रथाएँ सहन नहीं की जा सकतीं। युवकों पर तो इस मानसिक और व्यवस्थात्मक क्रांति को लाने का मुख्य भार होगा ही। उन्हीं को तो आज की विरासत संभालनी है और उस विरासत में उनको मिलेगी आज की संपत्ति और आज की समस्याएँ। यदि वे केवल आज की संपत्ति की ही ओर टकटकी लगाए रहें, तो वे न तो उसे बचा पाएंगे और न अपने को। उन्हें समस्याओं को भी अच्छी तरह से देखना तथा समझना है और उनको सुलझाने के लिए कटिबद्ध हो जाना है।

– स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी
१९५४-१९६२

सम्मेलन ने समाज को सदैव यह परामर्श दिया है कि जो भाई बहन भिन्न-भिन्न प्रांतों या राज्यों में बसे हैं, उन्हें वहाँ का नागरिक माना जाय, उन्हें वहाँ के सामाजिक जीवन में पूरी तरह समरस हो जाना चाहिए। दहेज ही बढ़ती हुई बीमारी की समस्या के बारे में कहा कि 'क्षय रोग की तरह यह हमारे गृहस्थ जीवन का विनाश कर रही है और महिलाओं की प्रतिष्ठा के तो यह सर्वथा प्रतिकूल है।' विवाहों में आज भी हम अपने वैभव का इतना प्रदर्शन करते हैं कि दूसरों की दृष्टि में हम खटकने लगते हैं। हमें उतना ही प्रदर्शन करना उचित है जो दूसरों के लिए सिरदर्द न बने।

– स्व. गजाधर सोमानी
१९६२-१९६६

सामाजिक सुधारों के अलावा देश-व्यापी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में हिस्सा लेना भी सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा है। हमारे समाज का विस्तार देश के कोने-कोने में हुआ है और हमें संतोष है कि इस समाज के लोग जिस भी राज्य या प्रांत में जा बसे हैं, वहाँ के नागरिक और सामाजिक जीवन में पूरी तरह हिस्सा ले रहे हैं तथा स्थानीय प्रवृत्तियों में पूरा सहयोग दे रहे हैं जो कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति का प्रतीक है। मारवाड़ी समाज की किसी भी संस्था ने अपने लिए विशेष संरक्षण या अधिकार की मांग नहीं की, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के साथ तन्मय होकर चलने का प्रयत्न किया।

– स्व. रामेश्वरलाल टांटिया
१९६६-१९७४

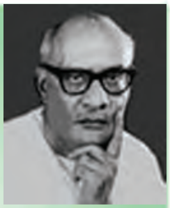

समाज के भावी कर्णधारों को अपने-अपने प्रांतवासियों के साथ समरस होकर एक लक्ष्य बनाकर, स्वस्थ सार्वजनिक जीवन में अधिकाधिक भाग लेना चाहिए। इसके पीछे हमारी जातिगत स्वार्थ की नहीं, राष्ट्रीय संभावनाओं के प्रतिफलन की ओर उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग की भावना होनी चाहिए।... दहेज की वर्तमान स्थिति के विरूद्ध दृढ़प्रतिज्ञ आदर्शवान युवकों को प्रतिज्ञापूर्वक अपने आचरण का उदाहरण रखते हुए सक्रिय आंदोलन करना चाहिए। जब ऐसा होने लगेगा, तभी संभवतः इस राक्षसी प्रथा का समूल नाश होगा।

– स्व. भंवरमल सिंघी
१९७४-१९७९

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

वधुओं को दहेज के अभाव में जलाना, तलाक, भोंडा दिखावा तथा आचरणहीनता बराबर बढ़ रही है। वधुओं और बेटियों में फर्क समझने वाला मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं।.... समाज में व्यक्तिवाद घर किए हुए है। समष्टिवाद बहुत कम दिखलाई पड़ता है। समाज के संगठन की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। मैं चाहता हूँ कि इस दिशा में सम्मेलन की ओर से ठोस कदम उठाए जाएँ जिससे संगठन की भावना जोर पकड़े और सारे भारत के मारवाड़ी बंधु सम्मेलन के द्वारा अपनी आवाज बुलंद कर सकें।

– स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार
१९७९-१९८२

यदि हमें अपने युवकों की उर्जा का लाभ लेना है तो हमें अपनी सार्वजनिक संस्थाओं और उनके क्रिया-कलापों को आधुनिकता का जामा पहनाना होगा, जिनसे हमारा युवक उनसे जुड़ सके, अपना वर्चस्व दिखा सके और पिछले बीते युग से कहीं शक्तिशाली व प्रभावोत्पादक रूप से नवनिर्माण व सामाजिक सुधारों की गंगा बहा सके।... दहेज-रुपी विष का जितना इलाज किया गया, यह विष उतनी ही तेजी से बढ़ता गया। अब हमें यह नारा देना होगा कि हर शादी मंदिरों में, धर्म-स्थानों में हों और केवल नजदीकी रिश्तेदारों की उपस्थिति में हो।

– स्व. नन्दकिशोर जालान
१९८२-१९८६, १९९३-२००१

सम्मेलन के मंच से बराबर सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों के विरुद्ध प्रस्ताव पास किए जाते रहे हैं, लेकिन समस्याएँ कहीं कम हुई हैं तो कहीं और बढ़ गई हैं। फिजूलखर्ची और दहेज की समस्या विवाह-संस्कार आदि के कार्यक्रमों में दानवी रूप लेती जा रही हैं। हमें स्वयं आत्म-चिंतन करके इन सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहिए एवं अन्य समाजों के समक्ष उदाहरण रखना चाहिए, तभी निम्न और मध्यवर्ग का मारवाड़ी भाई अपनी प्रतिष्ठा बचा सकेगा।

– स्व. हरिशंकर सिंघानिया
१९८६-१९८९

जिस दिन समाज का कार्यकर्ता, समाज के सभी वर्गों के भाई-बहन स्थान-स्थान पर सैकड़ों-हजारों की संख्या में सामाजिक बुराइयों और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध, प्रांतीयता और संकीर्णता के विरुद्ध, शोषण और दुर्नीति के विरुद्ध अनवरत आंदोलन प्रारंभ करेंगे, उस दिन वे अकेले नहीं रहेंगे। समस्त भारतीय समाज के लोग उनके साथ आ मिलेंगे और उस दिन समाज अपनी सही छवि स्थापित कर सकेगा, समाज की सर्वांगीण उन्नति का, सम्मेलन का सपना साकार होगा। एक बड़ा दायित्व समाज के कार्यकर्ता पर है और इस सम्मेलन को इसी भावना को शहर-शहर और गाँव-गाँव पहुँचाना है।

– स्व. रामकृष्ण सरावगी
१९८९

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

मातृभूमि भारतवर्ष के प्रति मारवाड़ी समाज के अवदान की ४०० वर्षों से चली आ रही एक गौरवमयी अटूट परंपरा है। इससे विश्व मानव ने सतत प्रेरणा ग्रहण की है। इस परंपरा के आलोक में आज की परिस्थिति में मारवाड़ी समाज का क्या कर्तव्य है और इसकी क्या प्राथमिकताएँ हों, यह एक विचारणीय प्रश्न है। इसका उत्तर हमें अपने समाज के संदर्भ में ही ढूँढना होगा। प्रत्येक समाज का यह कर्तव्य ही नहीं, धर्म भी है कि वह अपने मूल स्वरूप का संरक्षण करे।

– स्व. हनुमान प्रसाद सरावगी (का.)
१९८९-१९९३

विगत वर्षों में सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में नैतिकता का पतन बड़ी तेजी से हुआ है। नेतृत्व का उद्देश्य समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना न होकर सिर्फ अपनी जेब भरना एवं अपने को स्थापित करना हो गया है। स्वार्थ की अंधी गली में दौड़ लगाते हुए नेतृत्व को इस बात का ख्याल रहा ही नहीं कि उनके इस आचरण का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ेगा। .... अतएव यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि समाज के नेतृत्व में आमूल परिवर्तन हो और कमियों-खामियों की व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक आधार को दृढ़ से दृढ़तर बनाने की कोशिशें तेज से तेजतर हों। नई पीढ़ी को, नई सोच के लोगों को भी इस मुहिम में अग्रिम पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि समाज की सभी कड़ियों में सामंजस्य बनाने में सहूलियत हो।

– स्व. मोहनलाल तुलस्यान
२००१-२००६

मेरी मान्यता है कि मारवाड़ी सम्मेलन को विचार मंच से आगे बढ़कर एक सक्रिय वैचारिक आंदोलन का रूप लेना चाहिए। समाज-सुधार एवं समरसता हमारा नारा हो। हमें दहेज-दिखावा, नारी-प्रताड़ना, आडंबर, फिजूलखर्ची का सक्रिय विरोध करना है। मारवाड़ी सम्मेलन की केंद्रीय, प्रांतीय एवं जिला स्तर पर सांगठनिक क्षमता का विकास कर इसे सही मायने में मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करना है। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए मारवाड़ी सम्मेलन में नई चेतना जागृत करनी है। मारवाड़ी समाज की नई, आधुनिक प्रतिभा को देश के सम्मुख प्रस्तुत करना है। साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति, ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं की परिचिति के साथ-साथ उन्हें मान्यता एवं सम्मान प्रदान कर समाज को नया स्वरूप एवं नया व्यक्तित्व देना है।

– श्री सीताराम शर्मा
२००६-२००८

आज समाज शिक्षित हुआ है। शिक्षित समाज का सपना हम भी देख रहे हैं, परंतु साथ ही हमें यह देखना होगा कि इस शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरीतियों को न सिर्फ समाप्त किया जा सके, इसके साथ-साथ हम हमारी सामाजिक धरोहर जैसे शाकाहारी, धार्मिक-सामाजिक प्रवृत्ति में किस तरह विकास ला सकें।... धन के फिजूलखर्ची ने समाज के एक वर्ग को अंधा बना दिया है। हम एक दूसरे से कम नहीं होकर एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में समाज की संस्कारों की संपदा कहीं समाप्त न कर दें। इस पर हमें सोचने की जरूरत है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति को किस तरह बढ़ने से रोका जा सके। सम्मेलन इस दिशा में पहल करने के लिए सदा तत्पर रहेगा।

– श्री नंदलाल रुँगटा
२००८-२०११

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से युवा वर्ग की सोच कि 'मुझे क्या लेना-देना?' या 'मुझे इससे क्या लाभ?' में बदलाव आवश्यक है। मारवाड़ी समाज के नवसृजन एवं विकासोन्मुखी कार्यक्रमों में युवाशक्ति को और अधिक दायित्व लेना जरूरी है। अवांछित एवं अस्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा के कारण न केवल फिजूलखर्ची को बढ़ावा मिल रहा है, अपितु आडंबर एवं मिथ्या-प्रदर्शन से हमारा समाज इतर समाजों की आलोचना का हास्यास्पद पात्र बन गया है। देश की प्रगति के लिए हमें राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करते हुए सही नेता का चयन करना चाहिए।

– डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया
२०११-२०१३

सम्मेलन प्रांतों में बसता है। सम्मेलन के संगठन को अपेक्षित विस्तार देने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारी प्रांतीय मुख्यालयों के साथ-साथ, नगर-ग्राम शाखाओं तक का यथासंभव दौरा करें, हर स्तर पर विचारों का परस्पर आदान-प्रदान हो, स्थानीय स्तर पर समाज की समस्याओं के विषय में जानकारी हो, और समाज के जन-जन को सम्मेलन के साथ जोड़ने का हर प्रयत्न हो। यह सम्मेलन के संगठन-विस्तार, सिद्धांतों एवं विचारों के प्रसार तथा हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए रामबाण सिद्ध होगा। हमारे कार्यक्रमों की सफलता के लिए महिला एवं युवा अनिवार्य कड़ियाँ हैं। इनकी सहभागिता से ही हम अपने कार्यक्रमों को गति दे पाएँगे और इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकेंगे। सम्मेलन के कार्यक्रमों में इनकी सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है और इसके लिए प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य।

– स्व. राम अवतार पोद्दार
२०१३-२०१६

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी युवा पीढ़ी अत्यंत मेधावी एवं परिश्रमी हैं और अपने पारंपरिक उद्योग-व्यापार से आगे बढ़कर शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, खेल, मनोरंजन सहित हरेक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों से समाज का मान बढ़ा रही है। तथापि, संस्कारों का ह्रास, बुजुर्गों का घटता सम्मान, फिजूलखर्ची-आडंबर, दाम्पत्य संबंधों में असहिष्णुता, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, राजनीतिक सक्रियता एवं चेतना की कमी जैसे विषयों पर हमारे युवक-युवतियों, तरुण-तरुणियों को सचेत रहने की आवश्यकता है। सामाजिक संगठन की अनिवार्यता को भी समझना है, क्योंकि संगठित समाज की आवाज ही सशक्त हो सकती है।

– पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला
२०१६-२०१८

बदलते हुए सामाजिक पृष्ठभूमि में सम्मेलन के कार्य-कलापों में भी बदलाव आ रहा है। सम्मेलन की भूमिका नित-निरंतर महत्वपूर्ण होती जा रही है। ज्यों–ज्यों समाज में आर्थिक सफलता आती है, साथ–साथ विसंगतियाँ भी पनपती है। सभी बंधुओं को सम्मेलन से आशा है। समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर आपसी सामंजस्य के साथ समाज में अच्छाइयों को बरकरार रखते हुए, नए विसंगतियों को दूर करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। सम्मेलन के पास समाज के लिए कार्य करने के लिए अनेकों अवसर हैं। समस्याओं को संभावनाओं में परिवर्तित करने की आवश्यकता है, और इसके लिए प्रयत्न करना हमारा और हमारे समाज के लोगों का कर्तव्य है।

– श्री संतोष सराफ
२०१८-२०२०

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में आज सम्मेलन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है। समाज पर आए हर कष्ट के समय निवारण हेतु सम्मेलन ने उचित एवं सामयिक भूमिका निभाई है। समाज को संगठित करने के लिए संगठन का विस्तार आवश्यक है। आज देश के प्रायः हर प्रांत में सम्मेलन की शाखा कार्यरत हैं। संगठन में ही शक्ति है। संगठन की आवाज में पूरी ताकत रहती है। 'संगठित समाज सशक्त आवाज' हमारा लक्ष्य है कि जहाँ भी मारवाड़ी बंधु रहते हो वहाँ सम्मेलन की शाखा हो, ताकि एक कड़ी की तरह हम जुड़ सकें। निष्कर्ष यही निकलता है कि सम्मेलन समाज के लिए सदा प्रासंगिक और स्वीकार्य रहा है और रहेगा।

– श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
२०२०-२०२३

समाज सुधार और सम्मेलन एक दूसरे के पर्याय है। समाज में फैल रही नई-नई विसंगतियां एवं कुरीतियां राक्षसी पूतना की तरह ऊपर से लुभावने दिखते है किंतु अंदर मे विष से भरे है। सुरसा की तरह वे अपनी आकृति बढ़ा रहे है। अपने भाषा, संस्कार-संस्कृति को हम त्यागते जा रहे हैं। समरसता का अभाव दिख रहा है। समाज की ज्वलंत समस्याएँ निदान मांग रही है। हमे अपने आचरण के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना होगा, सिर्फ प्रवचन से नही होगा। सम्मेलन का एक गौरवमय एवं जुझारू इतिहास रहा है, उसे दोहराना होगा।

– शिव कुमार लोहिया
२०२३-२०२५

मारवाड़ी भाई-बेहना सू निवेदन

आपा आपणो देश मारवाड़ (राजस्थान) तो छोड़ दिया हाँ, काई आपणी मारवाड़ी, आपणी मातृभाषा ने भी छोड़ देनो, खत्म कर देनो चावां हाँ। आपणा में अधिकतर माता-पिता आपणा बच्चा (टाबरा) सू हिंदी, इंग्लिश में बात करा हाँ और गर्व महसूस करा हाँ, आज हर सिंधी रा बच्चा सिंधी बोले है, मराठी का मराठी, अटातांई के अरबपति अंबानी का बच्चा भी गुजराती में ही बात करे है, परंतु आज री जेनरेशन मारवाड़ी बच्चा ने तो मारवाड़ी आवे ही नहीं है, काई आपण मारवाड़ी बोलना में शर्म आवे है। इन बच्चा का हक है मारवाड़ी बोलनो और मारवाड़ी सीखनो तो कृपया कर गर्व सू मारवाड़ी में बात करो, कम से कम मां-पिता जी, भाई-भोजाई, चाचा-चाची जी, सगला घर का सू कोई एक तो बात शुरू करो।

आपणी मारवाड़ी भाषा ने विलुप्त होना सू बचाओ!

स्वतः अपनी सदस्यता से जुड़े विवरण का संशोधन करें

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वेबसाइट : www.marwarisammelan.com पर जाकर सदस्यगण अपने सदस्यता के विवरण की जानकारी में किसी भी प्रकार का संशोधन स्वयं ही कर सकते हैं, इसके लिए सम्मेलन की वेबसाइट के **मेंबर्स** मेनू पर कर्सर ले जाने पर **'एडिट मेंबर डाटा'** का सेक्शन दिखेगा, उस पर क्लिक करने पर **'अपडेट योर डाटा'** का एक नया विंडो खुलेगा; उसमें अपना पंजीकृत मोबाइल नंबर प्रविष्ट कर **'सेंड ओ.टी.पी.'** पर क्लिक करने से आपके मोबाइल में एक 'OTP' जाएगा ज्योंही आप वह 'OTP' प्रविष्ट कर **'वेरीफाईड & डाटा'** पर क्लिक करेंगे तो आपके सदस्यता का पूर्ण विवरण नए विंडो में खुल जाएगा, वहाँ पर आप अपने मौजूदा जानकारी को स्वतः अद्यतन/विवरण की पुष्टि कर सकते हैं। सम्मेलन के सभी प्रांत, शाखा एवं समाज से जुड़े समाज-बंधुओं से अनुरोध है कि इस सुविधा का लाभ उठाएं। यदि आपका मोबाइल नंबर वेबसाइटपर **'मोबाइल हमारे डेटाबेस में नहीं है'** दिखाता है तो कृपया आप राष्ट्रीय कार्यालय में दूरभाष एवं व्हाटसएप +91 86973 17557 करके या ईमेल aimf1935@gmail.com के माध्यम से संपर्क कर अपने मोबाइल को अपडेट करवाने के उपरांत आगे की प्रक्रिया पर जाएँ। इस संबंध में आपके सुझाव आमंत्रित हैं। राम! राम!

केदार नाथ गुप्ता
राष्ट्रीय महामंत्री

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत !

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

श्री अरुण पाटोदिया
मे. बॉस एंड कंपनी एल.एल.पी.
१/१ई/६, सुर्यदीप बिल्डिंग
रानी हर्ष मुखी रोड
कोलकाता - ७००००२
मो. ९८३०८७५८८०

श्री नवनीत जालान
मे. रेनबो पैकेजिंग इंडस्ट्रीज
प्लाट न.- ९४एल,
सेक्टर - ६ए
सिडकुल- २४९४०३, हरिद्वार
मो. ७८९३६०२२६६

श्री दिनेश कांतिलाल राठी
मे.राठी स्टील एंड मेटल प्रा. लि.
गोकुल निवास, श्री कृष्ण
रुक्मिणी नगर, नवीन मुंढ़ा रोड
जालना-४३१२०३, महाराष्ट्र
मो. ९१५८९११११

श्री मदन अग्रवाल (गरोथवाला)
मे. सैलकोवर वेब सॉल्यूशन प्रा. लि.
३३, प्रकति एन्क्लेव,
बिचोलि हापसी रोड,
इंदौर-४५२०१६, मध्य प्रदेश
मो. ९८२७२६३०१३

श्रीमती श्वेता शर्मा
म. चारनॉक हॉस्पिटल्स प्रा. लि.
पी.-३५५, क्यातल्ला रोड,
दक्षिणी एवेन्यू,
कोलकाता-७०००२९
मो. ७५९६०४२५९८

श्री सुभाष चंद खंडेलवाल
मे. खंडेलवाल लॉजिस्टिक्स प्रा. लि.
११४/१ए, कॉटन स्ट्रीट,
१ तल्ला
कोलकाता- ७०००००७
मो. ९४३३०४२९७३

श्री अशोक कुमार अग्रवाल
वार्ड न. – १२, मरंची उजागर
पो. – हसनपुर सुगर मिल्स
समस्तीपुर-८४८२०५,
बिहार
मो. ९८३४०९८/९९०५६७७४२५

श्री पंकज सरावगी
१०८, बसंत काम्प्लेक्स
३८, वीर सावरकर ब्लॉक
शंकरपुर- ११००९२,
दिल्ली
मो. ९८१०३०८१२९

श्री शुभ करण बोथरा
३१, श्रीनगर कॉलोनी, द्वितीय
तल्ला, अशोक विहार रोड,
शक्ति नगर एक्सटेंशन के पास
दिल्ली–११००५२
मो. ९८७१३७४०११

विशिष्ट सदस्य

श्री अजय कुमार पोद्दार
टाउन हॉल के पास,
लाल बाग,
दरभंगा- ८४६००४,
बिहार
मो. ८९८७३८८४२५

श्री अनिरुद्ध पोद्दार
कानपुर,
उत्तर प्रदेश

श्री अनुज झुनझुनवाला
३०५, पुष्पांजलि वेंकटेश
अपार्टमेंट, बुध मार्ग,
पटना- ८००००१,
बिहार
मो. ७००४८३५७६५

श्री अनुज टांटिया
मेसर्स – कृष्णा अप्परेल्स
७/१सी, लिंडसे स्ट्रीट,
सुराना मेन्शन, चौथा तल्ला,
कोलकाता-७०००८७
मो. ९८३१५०५२१०

श्री अरविन्द कुमार सोनी
बी- १०५, १०६, २०४,
सिटी सेंटर, साल्टलेक,
सेक्टर- १,
कोलकाता- ७०००६४
मो. ७००३१४८९००

श्री अशोक कुमार अग्रवाल
१३३/२२३, एम ब्लॉक
किदवई नगर, कानपुर-
२०८०११
उत्तर प्रदेश
मो. ९४१५०४१२७६

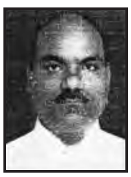

श्री बिमल बेंगानी
एवरेस्ट हाउस, १२ तल्ला,
फ्लैट न.- १२बी,
४६सी जवाहरलाल नेहरु रोड,
कोलकाता- ७०००७१
मो. ९१६३३९००००

श्री बिनोद कुमार सिंघानिया
मेसर्स - सृष्टि ट्रेडिंग
स्कूल पाड़ा,
दुमका- ८१४१०१
झारखण्ड
मो. ८७५७३७३०५४

श्री धनपत जैन
५५/६७, राजा टावर
काहू कोठी,
कानपुर- २०८००१
उत्तर प्रदेश
मो. ८१७६०००४००

श्री डुंगर सिंह राजपुरोहित
मेसर्स – राजमिलन मिठाई
दाना बाज़ार,
जालना- ४३१२०३
महाराष्ट्र
मो. ७०२०२२८५४६

श्री गजेंदर कुमार अग्रवाल
#२९, जक्कासंद्रा ब्लॉक,
आंठवाँ मेन, पांचवाँ क्रॉस
कोरमंगला,
बैंगलोर- ५६००३४, कर्नाटक
मो. ९३४३७६२५००

श्री गौरव सिंघल
प्रताप चौक गंगजाला
डॉ. चन्द्र क्लिनिक के पास
वार्ड न.- १६,
सहरसा- ८५२२०१, बिहार
मो. ७९०३७९७३००

श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल
१३३/१८५, एम ब्लॉक
किदवई नगर,
कानपुर- २०८०११
उत्तर प्रदेश
मो. ९९३५०३८३३३

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल
१३३/२३८ एम ब्लॉक
किदवई नगर,
कानपुर- २०८०११
उत्तर प्रदेश
मो. ९४१५०४३४६९

श्री पृथ्वी राज अग्रवाल
संजीवनी अपार्टमेंट
प्रथम तल्ला, एस.एफ. रोड
सिलीगुड़ी- ७३४००५,
प.बं.
मो. ९८३२०५२७७७

RUPA®
FRONTLINE
YEH STYLE KA
MAMLA HAI!
SCAN & EXPLORE
Toll-free No.: 1800 1235 001
www.rupaonlinestore.com
Follow Us:
We are also available at:
amazon | Flipkart | JioMart

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®
CENTURYLAMINATES®
CENTURYVENEERS®
CENTURYDOORS®
CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates
CENTURYPVC®
CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board
CENTURYPROWUD®
MDF-The wood of the future
zykron®
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS
SAINIK 710
WATERPROOF PLY
SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.
Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088
For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on 1800 5722 122

www.genus.in
Genus
energizing lives
Making society
smarter, more sustainable and liveable
with our End-to-End Smart Metering,
Power-Back & Solar Solutions
SPL-3, RIICO Industrial Area, Sitapura, Tonk Road, Jaipur-302022,
(Raj.), INDIA T. +91-141-7102400/500
metering_exports@genus.in, metering@genus.in

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2024-2026
Date of Publication - 24th December, 2025
RNI Regd. No. 2866/1968

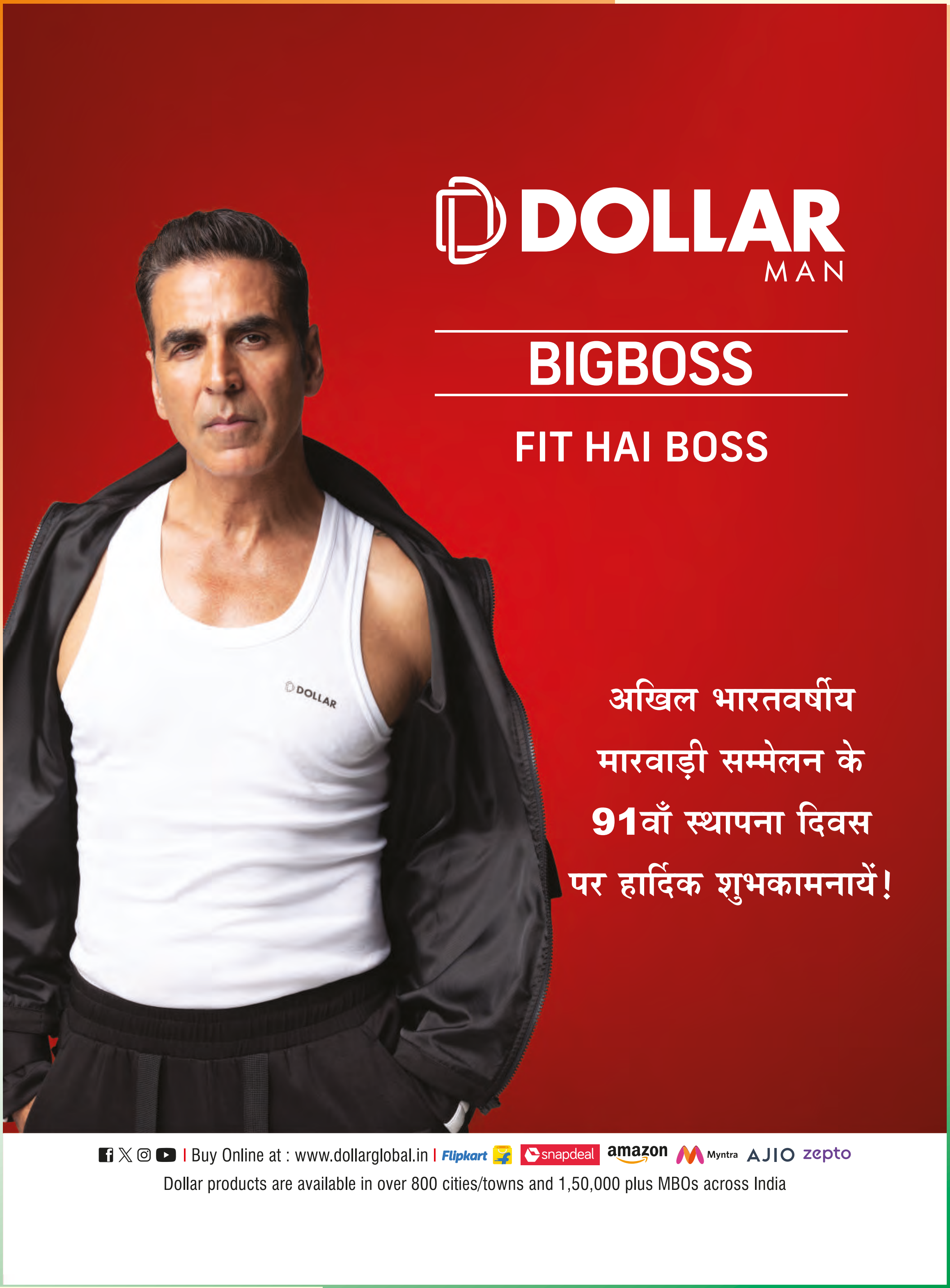

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com